गुलस्तान

प्रवर्तक

पूज्य श्री शुक्लचन्दजी महाराज के शिष्य

संयोजक

पूज्य श्री राजेन्द्रमुनिजी महाराज

तथा

श्री दाताराम मुनिजी महाराज

—: के :—

चतुर्मासार्थ नासिक में 'गुलस्तान' पुस्तक लोकोपकारार्थ
के लिए छपायी हैं।

व्यवस्थापक
श्री जैन वर्धमान स्थानकवासी संघ
रविवार पेठ, नासिक सिटी
(महाराष्ट्र स्टेट)

श्री महावीर सम्वत २४९६, ता० २८-११-१९७०

प्रस्तावना

'गुलिस्तान' नाम की पुस्तक जो कि बहुत वर्षों की जिज्ञासा थी कि इसका संकलन किया जाय और सम्पूर्ण लाभ उठा सके। परन्तु कई कारणों से योगनुयोग नहीं बन सका। किन्तु भावनाएँ तीव्र होती चली गई और भावनाओं के अनुसार ही प्रक्रिया चालू हो गई और प्रेस कापी करने की अंतर की तन्तरियों ने प्रेरणा दी और अन्त में प्रेस कापी तैयार कर दी गई। इसमें लगभग ११०० शेर है और एक से एक उत्तरोत्तर रस प्रधान है। साथ ही दोहावली भी एक ही पुस्तक में दी गई है। विभिन्न प्रकार के रसप्रद कुसुमोद्यान संग्रह किये गये हैं। मैं सब शायरों के नाम नहीं दे सका क्योंकि लिखने में नहीं आये, इसलिए मैं सबका क्षमा प्रार्थी हूँ।

परम श्रद्धेय आचार्य श्री सोहनलालजी महाराज तथा परम शान्त मूर्ति श्री काशीरामजी महाराज एवं परमोत्कृष्ट शास्त्रज्ञ श्री आत्मारामजी महाराज तथा परम चरित्र चूड़ामणी कवि श्री शुकलचन्दजी महाराज साहब के शिष्य श्री राजेन्द्र मुनि ने इस पुस्तक की संजोयना की। यह पुस्तक पुण्यात्माओं के नाम पर समर्पण करने की भावना हुई। उन महानुभावों को मैं अन्तःकरण से समर्पण करता हूँ।

इस पुस्तक का काम नासिक में संवत् २०२७ चतुर्मासार्थ श्री राजेन्द्रमुनि तथा श्री दाताराम मुनि के सानिध्य में निम्नलिखित दानेश्वरियों ने सहयोग दिया।

सन् १९७०

लासलगांव निवासी	श्री मांगीलालजी जसराजजी ब्रह्मेचा	रु. २५०
मनमाड निवासी	श्री प्रेमराजजी दलीचंदजी सुराना	रु. १२५
,,	श्री माणकचन्दजी बन्सीलालजी हिरन	,,
,,	श्री गुलाबचन्दजी आलमचन्दजी भंडारी	,,
,,	श्री अमरचन्दजी पी. बोगावत	,,
नासिक निवासी	श्री घेवरचन्दजी सांखला	,,
,,	श्री फकीरचन्दजी हिरण	,,
,,	श्री सोभाचन्दजी गुजराणी	,,
,,	श्री माणकचन्दजी रांका	,,
,,	श्री अमरचन्दजी कालरिया	,,
,,	श्री हेमराजजी बालचन्द चडालिया	,,
,,	श्री रतनलालजी कोठारी	,,
,,	श्री वर्धमानजी पारिख	,,
,,	श्री विजयराजजी ब्रह्मेचा	,,
,,	श्री लखीचन्दजी ब्रह्मेचा	,,
,,	श्री धनराजजी रांका	,,
,,	श्री कुंवरमलजी कांकरिया	,,
,,	श्री जुगराजजी सांखला	रु. ५१
,,	श्री लालचन्दसा लोढा	,,
,,	श्री बुधमलजी संचेती	,,
,,	श्री प्रभुदास धीरजलाल शाहा	,,
निफाड निवासी	श्री सुखराजजी बिनाईक्या	,,
इगतपुरी निवासी	श्री मेघराजजी लूणावत	,,
नासिक रोड,	श्री पन्नालाल लूणावत	रु. ५०
जोधपुर निवासी	श्री प्रकाशमलजी लूणावत	रु. २१

—: शेर :—

वतन की फिक्र कर नादां ! मुसीबत आने वाली है,
तेरी बरबादियों के मशविरे हैं आसमानों में ।।
—इकबाल

जहाँ के नेक बन्दों में लिखा नाम तुम्हारा हो ।
तुम्हारी देश भक्ति का सदा रोशन सितारा हो ।।
कम खाना और कम बोलना अक़्लमंदी है ।
बहुत खाना और बोलना बेवकूफी है ।।
इन्सान के पाक़ दामन में आ शैतान सोया है ।
ज़मीं आसमाँ भी काँप उठा, मानव के कारनामों पै रोया है ।।
चले आ ओं ज़रा दंगल का मंज़र देखते जाओ ।
भरे मैदन येह् शेरों की टक्कर देखते जाओ ।।
कुश्ती सबक गर हर बच्चे को याद हो जाये ।
रगें ज़ंजीर बन जाये बदन फौलाद बन जाये ।।
बिना सोचे बिना समझे बशर जो काम करते हैं ।
येह् अपने हाथों से ही आखिर बुरा अंजाम करते हैं ।।

सोहनलाल जी महाराज ने ज्ञान से दुनिया को जगाया ।
जैसे सूर्य ने अन्धकार को दुनिया से भगाया ॥

आपने साधु, सतियों को पढ़ा कर विद्वान बनाया ।
श्रावक श्राविकाएं के हृदय को मंगलमय बनाया ॥

सम्यक्त्व रूपी रत्न त्रय का अमृत पान कराया ।
भव्य रूपी जीवाओं को भव सिन्धु से पार लगाया ॥

काशीरामजी महाराज, महा ज्ञान वैरागी ।
मोक्ष साधना में आत्म ज्योति जिसकी जागी ॥

आत्मारामजी महाराज ने शास्त्रों का ज्ञान दिया ।
अपनी काबलियत का दुनिया को पैगाम दिया ॥

शुक्लचंदजी महाराज ज्ञान गुणो की खान ।
शीतल हृदय जैसे पूर्णमासी चन्द्रमा जान ॥

आप कविता में कवि महान् लिखे ग्रन्थ अनेक जान ।
जनता ने अपनाये हृदय चक्षु खोलकर ऐसा तुम जान ॥

आपकी आत्मा शीतल चन्दन समान अनेक गुणों की खान ।
राजेन्द्रमुनि लघु पुस्तक समर्पण करता हूं चरणों में आन ॥

एक सती और नगर सारा।
एक चन्द्रमा नव लख तारा॥
कामी न जाने जात कुजात, नींद न जाने टूटी खाट।
भूख न जाने बासी भात, प्यास न जाने धोबी घाट॥
एक चना दो दाल सत्तर बाणिया।
एक पावओं[1] कलाल ऐसा तू मान॥
पूनम से पड़वा भली, अमावस्या की बीज।
मन पूछिया मुहूंत भलो, के तेरस के तीज॥
सिली तमाखू सावनी, फिर मन समझावनी।
तीजे चांवर सीजै चौथे लोक पतीजे॥
जोर जोर मर जावेंगे माल जवाई खायेंगे।
देख तिरिया के चाले सिर मुंड मुंह काले॥
देख मर्दों की फेरी, मां तेरी की मेरी।

'छींक'

गौ की छींक मरण करती है।
बिल्ली की छींक जीवन हरण करती है॥
खेत में बैल की छींक अनाज उपजावे।
कुत्ते की छींक घायल करावे वापस न आवें॥
मदिरा के योग से छींक सूंघनी छल कर लीन्ही।
पीनस सर्दी खांस फल हीनी॥
छींक पीठ की कुशल उचारे।
छींक बांई कारज सबै संवारे॥

---

१ शराब निकालने वाले का छोकरा

सम्मुख छींक लड़ाई भाष ।
छींक दाहिनी द्रव्य विनाशे ॥
ऊंची छींक कहे जयकारी ।
नीची छींक होय भयकारी ॥
अपनी छींक महा दुःख दाई ।
ऐसे छींक विचारों भाई ॥
कन्या विधवा, मालीन धोबिन, रजस्वला नारी ।
वैश्या चमारी छींक विशेष अशुभकारी ॥

मराठी

आठवण[1] ठेवा दास जतिन्द्र ची ।
सुभाष बाबू भगतसिंह ची ॥
आणि दत्त नेहरू कमला देवी ची ।
असो समाप्ति गांधीजी ची ॥
जय बोला आज हे परमेश्वरा ।
तुज विनवितो[2] चिरायु कर त्याची ॥
आर्य भूमि ही धाय मोकली ।
बद्ध असे झाली, लोह शृंखला गुलाम गिरीच्या ॥
तीने बान्धली बेली खीश्चन भाई पारसी भाई ।
मुसलमान भाई हिन्द भूमि चे सुत ।
ते सारे भारत भू त्यासी आई[3] ।
सुपुत्र आम्ही मीळवुनी[4] खादे जांऊ ॥
लढयायाला[5] वन्दे मातरम् बोला ।

---

१ याद करना २ विनयभाव ३ माता ४ कंधे से कंधा लगाना
५ लड़ने के लिए

कसे न मादके दीगर, वतेन नाजकुशी ।
मगर की जिंदाकुनी, खल्कश्रव बाजकुशी ।। गुमनाम शायर

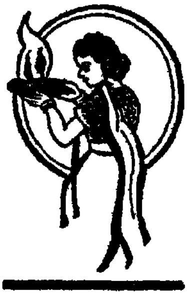
मूलार्थ–इस शेर को सुन कर नादिरशाह देहली छोड़कर चला आता है । अर्थात् जिस शंहशाहत के लिए तुम इतनी बडी कुशी (खून) कर रहे हो, यदि वह जनता न रहेगी तो तुझे कौन शहंशाह कहेगा ।।

तेरी खातिर तेरी राहों में, बहा जिनका लहू ।
उन शहीदों की हंसी, ख्वाब की तस्वीर है तू ।।

जहन्नुम के आज़ाद शोलों के, बदले ।
ग़ुलामी की जन्नत को, कुर्बान कर दो ।।

दल बदल करते चले आते हैं वे ।
इससे बढ़कर और कत्ले आम क्या ।।

डिग्रियां ले और ढूंढे नौकरी ।
जिन्दगी में रह गया प्रोग्राम क्या ।।



भूमिका

जीवन-पाथेय

बीसवीं सदी मे विज्ञान पराकाष्ठा पर पहुँचा है । मानव ने चन्द्र पर विजय पायी, फिर भी साप्रत काल का जगत पहले इतना व्यथित न था जितना आज है । निज स्वार्थ, सत्ता लोलुपता, संकुचितता, विलास मे भटकना आदि गुनाहित मानस का मार्ग जैसे कि स्वाभाविक हो चुका है। कभी कभी लगता है कि-crime is atural and virtue is artificial. ऐसे ही सकुचित मानस यदि दिन प्रतिदिन दृढ़तर होता रहेगा तो चंद्र पर विजय की सिद्धि पाई तो भी क्या और न पाई तो भी क्या ? मानवता रहित मनुष्य की सभी सिद्धियाँ व्यर्थ है । इससे बचने का सिर्फ एक ही रास्ता है-वह है सन्-विद्या । किन्तु दौड़ते-दौड़ते ही सभी सुख-संपत्ति प्राप्त कर-लेने की चेष्टा करने वाले मनुष्य को सद् विद्या सर्वदा दुर्लभ है । ऐसे समय पर यह पुस्तिका एक परम सखा की आवश्यकता के अभाव को दूर करती है ।

मुनि श्री राजेन्द्रमुनि द्वारा अग्रेजी, गुजराती, और हिन्दी में प्रकाशित की हुई "Sunrise and Sunset" नामक पुस्तिका की तरह यह पुस्तिका-भी परमोपयोगी साबित होगी यह नि.शक बात है । इस पुस्तिका मे मुनिश्री के अगाध वाचन में से चुनी हुई-जीवन के प्रत्येक विषयानुरुप चिन्तन कणिकायें वाचक के लिए जीवन पाथेय रूप बनेगी । समयानुसार जीवन व्यतीत करते हुए शहरी जीवन में ऐसे विविध विषयों पर क्रान्त द्रष्टाओं के मौलिक चिन्तन की आज अनिवार्यता है । इस अनिवार्यता की प्यास बुझाने का सौभाग्य इस पुस्तिका को प्राप्त हो यही अभ्यर्थना ।

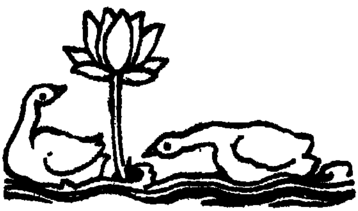
अन्त में इसी पुस्तिका की बात दोहराता हूं कि–

रोशनी चान्द से होती, सितारों से नहीं ।
दोस्ती एक से होती, हजारों से नहीं ।।

हजारों ग्रन्थों के सुविचार के अर्क रूप इस पुस्तिका की दोस्ती वाचकों को फलदायी बनें यही प्रभु–प्रार्थना ।

१३ नवम्बर–७०
कार्तिक पूर्णिमा

चिमनभाई दवे. जे. पी.
आचार्य–शेठ अेन. अेल. हाई स्कूल,
मालाड, बम्बई—६४.



शुद्धि-पत्रक

पृष्ट	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१३	जिसके नशीब की बराबरी कर पाया कोई नशीब नहीं । उसका नसीब ऐसा बिगड़ा उसको कफन नशीब नहीं ॥ —विनय मुनि		
१६	५	पहचाना	पहचान
१६	५	पहचाना	पहचान
२०	८	मोहम्मत	मोहम्मद
२०	१८	ज्य	ज्यूं
२३	१२	वह	कह
२५	१६	र	घर
२६	६	उमर	उत्तर
३०	१६	मद	मर्द
३१	२	जसी	जैसी
३१	२४	गुल्तो	गुल्ले
३२	५	रज	रज
३३	१८	छरी	छुरी
३६	१०	जवा ी	जवानी
४१	१०	अग	अंग
४२	५	अश	अर्श
४२	१६	जिसका	जिसको
४४	६	उसे	उस
४५	१३	फुलावे पेट हो खाकर हमारा ही दिया दाना । नजरबंदी में भी देते न मतलब का खाना ॥ कैद में कवि के हृदय की अंग्रेजों को फटकार ।		
४६	३	द:ख	दु:ख
५१	१५	हा	हो
५३	६	दाम	मान
६५	१७	दामे आदर दीजिये दामे कीजिये काम । पहली बार आया था बुल्लाह् फूकन मेरा नाम ॥ बहिन का निरादर भरा व्यवहार भाई के प्रति		

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
७२	३	छपाता	छुपाता
७५	१०	जने	जाने
७५	१७	क	की
७६	१०	जा	जो
७८	२०	झूसये	झूजिये
७९	११	तो	—
८१	१८	वदे	वन्दे
८१	१६	कतिल	कातिल
८१	१९	बख्शती	बख्शता
८४	५	से	—
८४	६	यकीन	यकीनन
८८	१	छप	छप
९१	४	जात	जाता
९३	६	नजरे	नजारे
९३	१३	तजर	नजर
१००	१२	पच्छती	पुच्छती
११२	१५	कयास	कायम
११२	१५		बदकी सोबत में मत बैठो।
११४	१५	अज्जाम	अंज्जाम
११५	२	निजने	जिसने
		काई	कोई
११६	१२	लभाती	लुभाती
११७	११	मुर्दो	मर्दो
१२५	१२	दर्गत	दुर्गत
१२८	६	उेंट	ऊँठ
१२८	१३	भूत	भूप
१२९	१४	ध	धन
१३२	६	साता	पाता
१३३	३	किंखा	लिखा
१३७	१२	बुढापन	बुढ़ापे
१३७	१७	जन्मला	जन्मेला
१४१	१०	पति	यति
१४१	१६	सक	सब
१४३	३	—	बाह

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१४९	७	भम्र	भ्रम
१४६	१९	पू ंआ	पूजा
१४९	३	मुझं	मुझे
१४६	१२	—	पुराणे
१५०	१८	बाले	बोले
१५४	१४	तकवीर	कबीर
१५४	१८	घर–	घर–घर
१५५	६	धम	धर्म
१५५	१०	कछ	कछु
१५५	१८	नहा	नहीं
१५७	१७	पोते	पोत
१६१	११	स्वग	स्वर्ग
१६२	३	निन्ता	चिन्ता

१६२ ९ मुरटा बीज बिना नहीरे बीज न मुरटा टार ।
मुरगी बिन अण्डा नहीं प्यारे या बिन मुरग की मार ॥

—सौभाग्यमल

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१६५	८	जल	बल
१६७	१६	काडगा	काढ़ेगा
१६७	१९	स्वधर	स्वघर
१६८	१०	मूखं	मूर्ख
१७०	५	रास	सार
१७२	२	व रना	करना
१७३	६	चूहड	चूहडी
१७३	१७	करा	बुरा
१७४	४	बरे	बुरे
१७५	१०	गोनो	गोती
१७६	९	मही	नहीं
१७७	८	प्रदरो	प्रंदरों
१७८	१४	न	नूं
१७९	२	राखा	ऐसा
१७९	१३	बोडें	जोड
१८२	१९	मंगना	मंगम
१८३	१९	फंट	फूट

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१८४	१५	भूत	मूत
१८५	२०	ओन	ओनूं
१८६	२०	—	गुण
१८७	६	कवी	कभी
१८८	९	कछ	कछु
१९०	१९	—	चला
१९१	७	चजे	जजे
१९२	१९	गणे	णणे
१९२	२२	छुटाया	छुटाया
१९३	८	पांयों	पाचों
१९३	१७	ड़ल	पुदगल
१९३	२२	पण्य	पुण्य
१९४	५	बाल	ताल
१९४	१५	किकरारसा	फिकरा सा
१९५	४	विसी	किसी
१९६	४	आदि	अनादी
१९६	४	फिर	फिरे
१९६	१४	अपसे	अपने
१९७	१३	बजाले	बजाजे
१९८	१४	बाता	बात
२००	२	वाहिए	चाहिए
२००	४	लक	लुक

जन्मे जितने जीव हैं अब में करों विचार ।
लाये कितने साथ में पहिले का परिवार ।।

कुसुमोद्यान

अब तो घबरा के यह कहते हैं कि मर जाएँगे।
मर के भी चैन न पाया तो किधर जाएँगे।।
अगर गेती सरा सर बाद गिरद।
चरागें मक्कबीला हरगिज़ नमीरद।।

मूलार्थ- अगर आत्मा की शक्तियों को
ऊच्चे शिखर पर ले जाना चाहते हो तो
सच्चाई का अति सुन्दर जगमगाता चराग।
जबरदस्त तूफानों से गुल नहीं हो सकता।।
राही कहीं है राह कहीं राहबर कहीं।
ऐसे भी कामयाब हुआ है सफर कहीं।।
दिन गुजरते ही चले जाते हैं; लोक मरते ही चले जाते हैं।
जानते हैं कि यह गफलत के काम हैं।।
फिर भी करते ही चले जाते हैं।
खुदी को कर बुलंद इतना कि हर तकदीर से पहले।।
खुदा बंदे से खुद पूछे बता तेरी रजा क्या है।
ना बीना कांदिद, वागुफत आहे हमक।।
व रोज सब पीसेतु दरचश्मे तू बराबर।
व अकस्तान अस्त का अज़ चराग तूरा फायदे चीस्त।।

मूलार्थ-अन्धला मानव रास्ते उपर हाथ में दीवा लेके चला जा रहा था-अन्य पुरुष उसको पूछता है कि आप यह फानस हाथ में लेकर कहाँ जा रहे हो तो उसने जबाब दिया कि दूसरों से बचने के लिए हाथ में दिवा लिया है।।

रोशनी चान्द से होती, सितारों से नही ।
दोस्ती एक से होती, हजारों से नहीं ॥१॥

कितने मुफलिस हो गये, कितने तंवगर हो गये ।
खाक में जब मिल गये, दोनों बराबर हो गये ॥२॥

जिन्हे हम हार समझे थे, गला अपना सजाने को ।
वोह काला नाग बन बैठा, हमारे काट खाने को ॥३॥

रहम कर अपने न तुम, अवरो कर्म को भूल जा ।
हम तुझे भूले हुये है, तू न हम को भूल जा. ॥४।

सितारों से आगे जहां और भी हैं ।
अभी इश्क के इम्तिहां और अभी है ॥
तू शाहीं है परवाज है काम तेरा ।
तेरे सामने आसमा और भी है ॥५॥

ऐ निर्दयी ? गरीब को मत सता ? गरीब रो देगा ।
अगर सुनेगा मालिक, तो जड़मूल से खो देगा ॥६॥

जमाने में जमाने की जमाने पे नजर होगी ।
हमारा दिल उधर होगा, जिधर सूरत तुम्हारी होगी ॥७॥

चलते—चलते चान्द देखा, बामं पर या आसमाँ पर ।
दो लाम थी दो मीम थी, इस नाम पर या इस्सलाम पर ॥८॥

चुस्त होके बुस्त बनता हैं सुस्त होके पस्त बनता हैं ।
उसका जीवन बनता है और वोही इन्सान बनता है ॥९॥

किस कदर हमदर्द सारे, जिस्म की होती है आँख ।
हो किसी भी अज् में गर दर्द, तो रोती है आँख ॥१०॥

शब वोही शब है और दिन वो ही दिन ।
जो याद तेरी में गुज़र जाय ॥११॥

जब दुनियां में कुछ ग़म होंगे ।
तब गम ख़्वार दिलों में हम होंगे ॥१२॥

उस दर्द के साथी हम होंगे ।
ग़म सारे जहां का मिटा देंगे ॥१३॥

जब किश्ती भँवर में पायेंगे तूफान का जोश मिटा देंगे ।
हम डूबेंगे मर जायेंगे पर बेड़ा पार लगा देंगे ॥१४॥

मिल्लते रस्तों के हैं सब हेर फेर ।
सब जहाजो का है लंगर एक घाट ॥१५॥—हाली

मेरी आंखों मे रहता है मुझ को क्यों रूलाता है ।
समझ कर देख लो अपना कोई घर डूबाता है ॥१६॥

तेरे करम मे कमी कुछ नहीं करीम है तू ।
कुसूर मेरा है झूठा उम्मीदवार हूँ मैं ॥१७॥

जफर आदमी न उसको जानियेगा ।
चाहे हो कैसा ही साहिबे बाफन का ।
जिसे ऐश मे खौफ़ खुदा न रहा ।
जिसे तहैश में खोफे खुदा न रहा ॥१८॥

न हिन्दू है बुरा और न मुसलमान है बुरा ।
बुराई है जिसमें वोह इन्सान है बुरा ॥१९॥

न सूरत बुरी है न सीरत बुरी है ।
बुरा है वोही जिसकी नीयत बुरी है ॥२०॥

जिस राह में हैं खोफो खतर, उस राह से इन्सान न चल ।
जुर्मो गुनाह के बोझ से वरना गिरेगा सिर के बल ।।२१।।

फूल की पत्ती से कट सकता है हीरे का जिगर ।
मर्दे नादां पर कलामे नर्मो नाजुक बेसर ।।२२। - इकबाल

इल्मी तर्क्की से ज़बां चमक गई ।
मगर अमल से फरेबो दगा साथ है ।।२३।।

जब तेरी बदफैलियों का खात्मा हो जायेगा ।
तब तेरी ही आत्मा परमात्मा हो जायेगा ।।२४।।

दुनियां में रह रहा हूँ दुनियां से सरोकार नही ।
बाजार से गुजर रहा हूँ पर खरीददार नही ।२५।।

हजारों आन्धियां गुजरी, हजारों महफिले गुजरी ।
बाहरें ढूँढती होंगी न जाने हम कहां होंगे ।।२६।।

मन लगा मेरा यार, आत्म फकीरी में ।
जो सुख पावों आत्म-ध्यान में सो सुख नहीं अमीरी मे ।।२७।।

आशा निराशा के दो फूलों से दुनियां ये सजाई है ।
आशा निराशा को हटकर इन्सानियत पाई है ।।२८।।

तारे क्या रोशनी से न्यारे हैं ।
तुम हमारे हो हम तुम्हारे हैं ।।२९।।

इस तरफ भी आदमी थे उस तरफ भी आदमी थे ।
इनके पैरों पर चमक थी, उनके चेहरों पर नहीं थी ।।३०।।

अबसोंमस सदा अबसोंमस, के शाहीं न बना तू ।
देखें न तेरी आंख ने, फितरत के इशारे ।।३१।।

जु़मलाई सब्वे जहाँ पे है नोगियार[1] हावी।
एक मुहब्बत है के हर वक्त ज़बाँ पे रहती है ॥३२॥

तनाहा यही देते हैं कि मरता नहीं बुड्ढे।
घर बाहर का कुछ काम तू करता नहीं बुड्ढे॥
लाठी को कहीं टेक के फिरता नहीं बुड्ढे।
जा कर के कुवे में भी तू गिरता नहीं बुड्ढे ॥३३॥

सुनते हो जवानों तुम्हे आयेगा बुढ़ापा।
जो कुछ के नहीं देखा, दिखायेगा बुढ़ापा॥
जब हम युवाँ थे फिरते थे टेढ़े वा बाँके?
आराम थे माजूद हमे सारे जहाँ के।
हम से भी जवानों के कभी टूटे थे टाँके॥
अब पीर गुणें गार हैं जहाँ के न वहाँ के ॥३४॥

तूदीये[1] बादे मुखालिफ, न गबरा ऐ, ऊक्काब[2]।
ये तो चलती है तुझे ऊँचा उड़ाने के लिए ॥३५॥

आशिकी में जौहरे फितरत फनाह होता नही।
रंग गुल से नम्मा बुल बुल से जुदा होता नही ॥३६॥

क्यो मेरे ज़ौके तसब्वुर[3] पर तुम्हें शक होगया।
तुम ही तुम होते हो, कोई दूसरा होता नहीं ॥३७॥अर्शमलिसयानी

दिये जलाए उम्मीदों ने' दिल के गिर्द बहुत।
किसी तरफ से न इस घर में रोशनी आई ॥३८॥

दाने दाने पर लिखा है खाने वाले का नाम।
तेरी रोटी तुझे ढूंढ़े, तू क्यो होवें नादान ॥३९॥

---

१ तूफानी इच्छा २ खूंख्वार हवा ३ आत्मरुपी पंक्षी

दरवेशों की खुदा करता है, खाना सामानी ।
हर रोज़ नया साजो समान, नया दाना नया पानी ॥४०॥

सभी मिलते हैं लेकिन आदमी मुश्किल से मिलता हैं ।
आदमी सभी मिलते हैं लेकिन रूहानियत बड़ी मुश्किल
से मिलती हैं ॥४१॥

जर बहुत खर्चा मगर स्वधर्मी को दिया नहीं ।
पाक का खज़ाना साथ तुमने लिया नहीं ॥४२॥

इन्सान लाख मुराद चाहे मगर होता है क्या ।
होता है वो ही जो मजूरे खुदा होता हैं ॥४३॥

फूल है गुलाब का रस थोड़ा और रंग बहुत ।
नादानों की दोस्ती मे सुख थोड़ा और दुःख बहुत ॥४४॥

इश्क की बेडी लगी है जुल्फ की जंजीर मे ।
अब तो दिल तुमसे मिला, आगे मेरी तकदीर है ॥४५॥

चान्द का चमका कहाँ चेहरा, कब सितारे रात को ।
गिनते गिनते थक गये बादल के तारे रात को ॥४६॥

देश की शान जिसको आज़ीज थी अपनी जान से ।
वोह देश भक्त जा रहा है देखो कितनी शान से ॥४७॥

बनाया पेट ईश ने आपत्ति डाली है ।
भरों सांझ को, होवे सबेरे ही खाली है ॥४८॥

इल्मों हूनर बड़ों के गर तुम में हो तो जाने ।
गर यह नहीं तो (बाबा) वोह सब कहानियाँ है ॥४९॥

मेरा तरिके मजहब क्या पूछती हो मुन्नी ।
सिया के साथ सिया सुन्नी के साथ सुन्नी ॥५०॥

रोज़ कहती हो जो आदाब आदाब मुझे ।
चीख उठोंगी एक दिन जो आदाब दिया ॥५१॥

गुले तस्वीर किस ख़ूबी से गुलशन में लगाया है ।
मेरे सिय्याद ने बुल,बुल को भी उल्लू बनाया है ॥५२॥

शकल कोले की हैट सोले की
क्या शान है मेरे भोले की ॥५३॥

सिर जिस पे न झुक जाये उसे दर नही कहते ।
हर दर पे जो झुक जाये उसे सिर नही कहते ॥५४॥

क्या लोक तुझे सितमगर नहीं कहते ।
अरे कहते तो है लेकिन तेरे मुँह पर नहीं कहते ॥५५॥

न रख रोजा न मर भूखा ।
साफ कर दिल के हिज्र को ॥५६॥

गुल गया गुलशन गया, बुल बुल की सवारी आ गई ।
जिगर को थामिये मेरी भी बारी आ गई ॥५७॥

मेरे जजवात मे तूने हुश्नों को जगाया क्यों ?
कसम तुझको बतादे, जवानी को बनाया क्यों ॥५८॥

आश्क हूँ मगर जर नहीं हैं ।
घर जाऊँ किस तरह पास पर नही हैं ॥५९॥

जिसकी जुबाँ नहीं उसका करार क्या है ।
जिसका पिया परदेश, उसका शृंगार क्या है ॥६०॥

न हो प्रेम आपस में मुहब्बत न हो भाई भाई की ।
वोह मूर्दा कौम्म हैं, जिस में न बू हो एकताई की ॥६१॥

जो उठेगा अगले जन्म में काल का मारा हुआ ।
कयामत तक ना उठ सकेगा ऐमाल का मारा हुआ ॥६२॥

जो अपनी खुदी से जुदा हो गया ।
खुदा की कसम वोह खुदा हो गया ॥६३॥

मतलब की मोहब्बत है हमेशा कच्ची ।
कम होती है दुनियाँ में मोहब्बत सच्ची ॥६४॥

दूर हो जाते है गरीबी में जो रिस्ता खास होता है ।
बन जाते हैं सब अपने जब जर पास होता है ॥६५॥

फकीरे मस्त हैं परवाहे मुल्कों माल की नहीं ।
हमारे पास वोह शह हैं जिसे ज़वाल नही ॥६६॥

आंख फड़कनी न मिले मुँह मे रहे ग्रहा ।
लख लान्त तैनूं, सुथराया ये तू दमड़ा करे बसाहा ॥६७॥

बा नर से मत मिल रे मित्ता ।
जो कभी मृग कभी हो चित्ता ॥६८॥

दोस्त को भेजे भीस्त में दुश्मन को दोजख दिया ।
ऐसा नहीं परवरदिगार खियाल कर देखो रे मिया ॥६९॥

आराम चाहता है, तो आराम की तरफ आ ।
फदे में फसां चाहे, तो दाम की तरफ जा ॥७०॥

गौहर से नहीं दरियां खाली, फूलों से नही गुलशन खाली ।
फिर भी अवसोस दस्ते तलब, फिर तेरे दामन खाली ॥७१॥

अच्छी सूरत भी क्या बुरी शह ।
जिसने भी डाली बुरी नज़र डाली ॥७२॥

अकबर दबे नहीं कभी सुलतान की फौज से ।
लेकिन शहीद हो गये, बीबी की नोज़ से ॥७३॥

हुस्न को दुनियाँ की आंखों से न देख ।
अपनी इक तर्जे नज़र पैदा कर ॥७४॥

हम फकीरों से खफा हो के कोई क्या लेगा ।
एक घर बन्द हुआ दूसरा घर देख लिया ॥७५॥

जो देखी हिस्ट्री इस बात पर कामिल यकीं आया ।
उसे जीना नहीं आया, जिसे मरना नहीं आया ॥७६॥

बुढ़ापे में जवानी से जियादा शौक होता है ।
भड़कता है चिरागे सहर जब खामोश होता है ॥७७॥

जिन्दगी पाकर हुआ, सारा जमाना बेखबर ।
मौत भी आएँगी इक दिन, इसका किसको होश था ॥७८॥

इन्सान को इन्सान से कीना[1] नही अच्छा ।
जिस सीने में किना है वोह सीना नहीं अच्छा ॥७९॥

राह भी तेरी पाँव भी तेरे, पाँव तले मंजिल भी तेरी ।
मनकी दुविधा में आज, जो हारा फिर न मिले मंजिल तेरी ।८०।

---

१ दुशमनी के भाव

हुआ करती है दुश्वारी से ही आसाइनियाँ पैदा ।
बड़े नादान है मुश्किल को, जो मुश्किल समझते हैं ।।८१।।

भूल कर किसी से न करो सलूक ऐसा ।
कि जो कोई तुमसे करता, तुम्हें नागवार होता ।।८२।।

बच जाएँ जवानी मे जो दुनियाँ की हवा से ।
वोह होता है परवरदिगार, कोई इन्सान नहीं होता ।।८३।।

दिल दे तो इस मिज़ाज का परवरदिगार दे ।
रज की घड़ियाँ भी खुशी में गुज़ार दे ।।८४।।

यें चमन ज्यू ही रहेगा, और हजारों जानवर ।
अपनी अपनी बोलियाँ सब बोल कर ऊड जायेंगे ।।८५।।

वोह नर अपने जीवन मे सुखशान्ति कहाँ से पायेगा ।
ठुकराता है जो औरों को स्वय ठोकरे खायेगा ।।८६।।

वोह कौन है ऐसा कि तेरी शकल दिखा दे ।
अहसान है उसका जो मुझे मुझ से मिला दे ।।८७।।–जिगर

को नैन की भूल भूलियों से गुजर जा ।
अपनी ही तरफ देख न इधर जा उधर जा ।।८८।।

हजार सिजदा करे रात रात भर जाहिद ।
जो दिल ही साफ न हो क्या जीबीं में नूर आय ।।८९।।

खुदा के वास्ते न आ रूबरू मेरे ।
बड़ी मुश्किल से दिल को मिल्लाहा के राह पे लाया हूँ ।।९०।।

तीर खाने की हवश है तो जिगर पैदा कर ।
सर फरोशी की तम्ना है, तो सिर पैदा कर ॥९१॥

मोहब्बत ही हमारे लिये, एक अजबी मस्सला है ।
और होवे हैं जो मस्साइल बदलते रहते हैं ॥९२॥

भटकना सीखा नहीं, उनके पेशरू वे एशमीम ।
वोह और होते है, जो मंजिल बदलते रहते हैं ॥९३॥

हम चु इसमाइल पेश, अज सर बोनेह ।
शादों ख्दा पेशे तेगश, जां बीदेह ॥९४॥–मौलाना रूमी

भावार्थ जो खुदा के साथ मुहब्बत करना चाहता है तो हजरत इसमाइल की माफ़क मास्तिष्क हाथ मे लेकर हँसता। हँसता तलवार के सामने जान देना सीखो मौलाना रूमी ॥

कोई हँस रहा है कोई रो रहा है।
कोई पा रहा है, कोई खो रहा है ॥
कोई ताक में है, किसी को है गफलत।
कोई जागता है, कोई सो रहा है ॥
कहीं नाउमेदी ने बिजली गिराई।
कोई बीज उम्मीद के बो रहा है ॥

इसी सोच मे, मैं रहता हूँ "अकबर"।
ये क्या हो रहा है ? ये क्यों हो रहा है ॥९५॥

गाजियों में बू रहेगी जबतक इमान की ।
तख्ते लंदन तक चलेगी तेग हिन्दूस्तान की ॥९६॥

मज़ा आएँगा फिरंगी जब हमारा राज देखेंगे ।
कि अपनी ही ज़मीं होगी, कि अपना ही आसमाँ होगा ॥९७॥

शहीदों की चिताओं पर लगेंगे हर वर्ष मेले ।
वतन पर मरने वालों का, यहीं बाकी निशां होगा ॥९८॥

पानी पियो वतन का, अमृत से भी ज्यादा अमृत है ।
काम करो रूह का अगर रूहानियत अमृत पाना है ॥९९॥

मुद्दई लाख बुरा चाहे तो, क्या बुरा होता है ।
होता है वोही जो मंजूरे खुदा होता है ॥१००॥

मेरे जज़बात में, तूने हँसने को जगाया क्यों ।
कसम तुझको बतादे, जवानी को बनाया क्यों ॥१०१

त्यागो खेलना जुआ, जरा देखो जमाने को ।
जुआरी सैंकड़ों देखे हैं, रोते दाने दाने को ॥१०२॥

इन्सान अगर लड़े तो असूलों के वास्ते ।
काटों में हाथ डालों, तो फूलों के वास्ते ॥१०३॥

हमेशां के लिऐ जीता वोही इस दौरे फानी में ।
मेहर बनकर अजब चमके जो अपनी जिन्दगानी में ॥१०४॥

असर उपदेश का क्या हो, जब जमीं श्रद्धा नहीं मन में ।
दिखाई मुँह कहां से दे, गर जमी हो मैल दर्पण में ॥१०५॥

गर तू बुरा हैं तो वोह सच्च कहता है ।
क्यों तू उसके कहने का, बुरा मानता है ॥१०६॥

तू भला हैं तो बुरा हो नहीं सकता ऐ "जौक" ।
खुद बुरा है जो तुझे बुरा जानता हैं ॥१०७॥

ऐ खुदा तेरा दर छोड़ कर किधर जाये गरीब ।
बादशाहत से तो बेतरह है गदाई तेरी ॥१०८॥

दुनियाँ के दाव पेच से रखना न वास्ता ।
मंजिल तुम्हारी दूर, है लम्बा है रास्ता ॥१०९॥

कितना ही सच है ये बात, कोई जाने या न जाने ।
जो उत्तर गया तो बेड़ा पार हैं उसकी किस्मत में थी कोई खूबी ।
वर्णा ऐसे तो हजारों हम तुम जैसे थे ।
जिसकी किस्ती किनारे ही, डूबी किस्मत की देखो खूबी ।
ये तकदीर का विधान हैं, उसे इन्सान क्या जाने ॥११०॥

तीरों तलवारों का वरसाद हैं परवाह नहीं ।
पानी पानी का सतत पोकार है परवाह नहीं ।
चैन बेचैन हो औलाद की परवाह नहीं ।
आख की सामे सब बरबाद हो परवाह नहीं ।
है यदि परवाह तो परवाह फक्त परवरदिगार के ध्यान की ।
होती है ऐनी मुनादी आज ऐना नाम की परणाम की ॥१११॥

टुकड़ा काम में आता नहीं टूटी हुई शमशीर का ।
देवता भी क्या करे, फूटी हुई तकदीर का ॥११२॥
जिसके नस्सीब की बराबरी, कर पाया कोई नस्सीब नहीं ।
विनयमुनि उसका नस्सीब ऐसा बिगड़ा, उसको कफ़न
नस्सीब नहीं ॥११३॥

रंग लाती है हीना पत्थर पर घीस जाने के बाद ।
सुरखुरू होता है इन्सान ठोकरे खाने के बाद ॥११४॥

इत्तर की मिट्टी में मिलकर भी महक जाती नहीं ।
तोड़ भी डालो तो हीरे की चमक जाती नहीं ॥११५॥

दिल लगाने की रविश आम होई जाती है ।
आश्की मुफ्त मे बदनाम होई जाती है ॥११६॥

साथ न छोड़ा सिया वक्ती ने भी मेरा ।
सुबह .महशर भी शाम हुई जाती है ॥११७॥

एक को आज़मा चुका सब को आजामे क्यों ।
मेरी वफ़ा पे नाज़ है गैर को मुँह लगाये क्यों ॥११८॥

इश्क़ के दम में आये क्यों, नाजे़ बुतां ऊठाएँ क्यों ।
दिल ही न हो तो आदमी, अपनी जान से जाये क्यों ॥११९॥

बारे हिज्रां न सारेंगे हम दिल में, खुंदी अपने खंजर मारेंगे हम ।
जुल्फे यार की कंमचियाँ खाकर सिर से जन इश्क
का भार उतारेंगे हम ॥१२०॥

पहली सी अब वोह चश्मे नियात नहीं रही ।
वोह तबीयत नही, वोह दिल नही रहा वोह हुसन उड गया ।१२१।

वोह नाज़कत नहीं रही, दिल सीने लुभाने की ताक़त नहीं रही ।
था पहिले हम से रक्त उदू से, थी दुश्मनी वोह दिल कहाँ है तुमे
उल्फत नहीं रही ॥१२२॥

कल तक तो आशना थे मगर आज गैर हो गये ।
दो दिन ये मिज़ाज मगर आगे की खैर है ॥`२३॥

तुमे गैरों से कब फुर्सत, हम गम से कब खाली ।
चलो मुलाकात हो चुकी न हम खाली तुम खाली ॥१२४॥

फिरते हुस्न है सर गर्म जफ़ा हो जाना ।
शबवाये इश्क है राजी बा रजा हो जाना ॥१२५॥

वोह लब्भे बाम तेरा जलवा नुमा हो जाना ।
वोह किसी का तेरी सूरत पे फ़िदा हो जाना ॥१२६॥

हट के यह पहलु से मेरे हाब हो जाना उनका ।
दर्द का और मेरे दिल में सिवा हो जाना ॥१२७॥

इसको कहते हैं मुहब्बत की करिश्मा साजी १ ।
लब पर आते ही शिकायत दुवा हो जाना ॥१२८॥

आना देखने को तो शौक से लेकिन ।
कहीं अपनी सूरत पे ख़ुद न फ़िदा हो जाना ॥१२९॥

कजा जिसकी आयी है लेकर रहेगी ।
यहां पर किसका इजारा नहीं ॥१३०॥

बनी के सब कोई साथी है बिगड़ी में कोई नही हाज़िर ।
हम यार उसको कहते हैं जो आफत में हो उसको
शामिल समझते हैं ॥१३१

जिन्दगी खों के यह ख़ियाल आया ।
जिन्दगी चीज थी ज़रूरत की ॥१३२॥ —अदम

गालिब बुरा न :मान जो वाइज़ २ बुरा कहे ।
ऐसा भी कोई है कि सब अच्छा कहे जिसे ॥१३३॥

मौत से बदतर बुढ़ापा आयेगा ।
जान से अच्छी जवानी जायेगी ॥१३४॥ —रिवाज़

---

१ असर २ उपदेशक

आना कि इल्म से कुछ जानेंगे ।
जाना तो इतना जाना कि कुछ भी नहीं जाना ॥१३५॥

ज़िन्दगी इन्सां की है मानिन्दे १ मुर्गे खुशनुमा ।
शाख़ पर बैठा कोई दम चहचहाया उड़ गया ॥१३६॥—इकबाल

हर आन में हर बान में, हर ढंग में पहचाना ।
आशिक २ है तो दिलबर ३ को, हर रंग में पहचाना ॥१३७॥

ऐ चर्ख ४ ! कितने ख़ाक़ से पैदा हुए हसीं ५ ।
तू एक आफताब को चमका के रह गया ॥१३८॥

इश्क को दिल में जगह दे अकबर ।
इल्म से शायरी नहीं आती ॥१३९॥

उसको आता है प्यार पर गुस्सा ।
मुझको गुस्से पर प्यार आता है ॥१४०॥

करूं मैं दुश्मनी किससे, अगर दुश्मन भी हो अपना ।
मुहब्बत ने नहीं दिल में जगह छोड़ी अदावत ६ की ॥१४१॥

लुत्फे कलाम क्या जो न हो दिल में दर्दे इश्क ।
बिस्मिल ७ नहीं है तू तो तड़फना भी छोड़ दे ॥१४२॥

दुनियाँ बजाहर ८ में बहुत हसीं ९ हैं ।
हकीकत १० में देखो तो कुछ भी नहीं ॥१४३॥

मरने से मफ़र नहीं है जब अय अकबर ।
बेहतर यही है खुशी से मरना सीखो ॥१४४॥

१—सुन्दर पक्षी के समान २—प्रेमी ३—प्रभु ४ आसमां ५-सुन्दर
६—शत्रुता की ७—घायल ८ प्रगट में ९—सुन्दर १०-भागने को जगह

इश्क़ करना ही तुझे नादां[1] अगर मजबूर है ।
देख तू उस नूर को, जिस नूर का तू नूर ॥१४५॥

अगर खुदाने बख्शा है तुझे कुछ इज्जत और रुतबा ।
अमानत जान उसमें कुछ इज़ाफ़ा[2] करना है ॥१४६॥

इन्सान को नहीं है इन्सान की कदर ।
और फरिश्तों को हसरत[3] हैं कि इन्सान बन जाएँ ॥१४७॥

जिन्दगी मे ज़िन्दगी की शर्त गर पूरी न की ।
तो ज़िन्दगी को ज़िन्दगी से रूठ जाना काबिल हैं ॥१४८॥

हमको मिटा दे, अब वोह ज़माने में दम[4] नहीं ।
हम से ज़माना खुद हैं ज़माने से हम नही ॥१४९॥ –जिगर

सियह बख़्ती[5] में कब कोई किसी का साथ देता है ।
कि तारीकी[6] मे साया भी जुदा होता है इन्सां से ॥१५०॥

जब शहनशाह भी हो इश्क़ भी हो दौलत भी हो ।
तब कहीं ज़ाके कोई ताजमहल बनता हैं ॥१५१॥

दिल के आइने मे है तस्वीरे यार की ।
जब ज़रा गर्दन झुकाई देख ली ॥१५२॥

साँस का पिंजरा किसी दिन टूट जायेगा ।
हर मुसाफिर राह में ही छूट जायगा ।
हर किसी को प्यार करलो प्यार ले लो सबका ।
क्या पता कब प्यार का घट फूट जायेगा ॥१५३॥ –रूबाई

---

१ कम समझ　　२ वृद्धि　　३ तरसना
४ हिम्मत　　५ मुसीबत　　६ अन्धकार

दर्द प्यार परिचय को पहचान बना देता हैं ।
गीत वीरों[1] को गुलिस्तान[2] बना देता हैं ॥

ये आप बीती कहता हूँ मैं परायी नहीं ।
दर्द आदमी को इन्सानियत मे ढाल देता हैं ॥१५५॥

आइना मुँह पे बुरा और भला कहता है ।
सच यह है साफ जो होता है सफा कहता है ॥१५६॥ –दाग

उम्रे दराज[4] माँग कर लाए थे चार दिन ।
दो आरजू[5] में कट गयी, दो इन्तेजार[3] मे ॥१५७॥

छुप के आयी हजार पर्दों में ।
आरजू[6] फिर–भी बेलिवास[7] रही ॥१५८॥ –जिगर

ऐ खुदा ? मेरी दुआ है कि ।
मैं अन्दर से खूबसूरत बनूं ॥१५९ –सुकरात

जुल्म सहकर जो उफ़ नहीं करते ।
उनके दिल भी अजीव होते हैं ॥१६०॥ –नूह नारवी

न समझने की ये बाते है न समझाने की ।
जिन्दगी उचटी हुई नींद हैं दीवानों की ॥१६१॥

---

१ उजाड़ २ बगींचा ३ प्रतिक्षा में ४ लम्बी आयु
५ आकांक्षाएँ में ६ कामना ७ नग्न

मज़ा जब है दिल से सुनिएँ दिल की बातों को ।
फसाना[1] बेदिली से सुन रहे हैं आप क्यों दिल का ॥१६२॥

अपना दुःखड़ा हर जगह, हर जाँ न रोना चाहिए ।
हाले दिल कहने को, ऐ नादाँ सलीका चाहिए ॥१६३॥

मेहरबाँ हो के बुला लो, मुझे चाहे जिस वक्त ।
मैं गया वक्त नहीं हूँ कि फिर आ भी न सकूँ ॥१६४॥

लोग कहते है कि आप निहायत काबिल[2] हैं ।
मैं इसी सोच में रहता हूँ कि किस काबिल हूँ ॥१६५॥

तेरे बन्दे हम हैं खु़दा जानता हैं ।
खुदा जाने तू हमको क्या जानता है ॥१६६॥

जब तवक्को[3] ही उठ गई गालिब ?
फिर किसी का क्या करे कोई ॥१६७॥

बन्दगी[4] मे तो हैं वोह लुत्फ जो शाही[5] में नहीं
दिल से कोई मगर अल्लाह का बन्दा भी तो हो ॥१६८॥

न इतराइये देर लगती है क्या ?
ज़माने को करवट बदलते हुए ॥१६९॥

आदमी बे मौत फिर मरने लगा
आदमी से आदमी डरने लगा ।
दुश्मनों से दोस्ती तो दूर तो दूर है
दोस्तों से दुश्मनी करने लगा ॥१७०॥ —रुबाई

---

१ कहानी — २ लायक — ३ उम्मीद भावनाएँ
४ प्रार्थना — ५ सम्राट

मंदिर तोड़ों मस्जिद तोड़ो।
तो भी नहीं मुज़ाका[1] है।
पर दिल को किसी के मत तोड़ों।
यह घर खास खुदा का है ॥१७१॥
नशा पिला के गिराना तो सब को आता है।
मज़ा तो जब है कि गिरते को थाम ले साकी[2] ॥१७२॥
कहता मोहम्मत मुस्तफ़ा सुन ले इन्सान।
दु:ख देगा किसी जाँ को वो ही समझों दोज़ख़ की खान।
मार खायेगा मुदगर की इसी बात को पहचान।
रहम को पालते हैं बहादुर इन्सान ॥१७३॥
तू बन्दा नही मान सचमुच खुदा हैं।
हुआ एक नुक्ते से बस तू जुदा है।
वोह नुक्ता खुदी है जुदाई का मुजिब।
मिटा दे खुदी को फिर तू खुद ही खुदा है ॥१७४॥
वोह इन्सान भला नेकी क्या जानते है।
जो नुक्सों से आलम भरा मानते हैं।
नही देखते वोह किसी में भी खूबी।
वोह खुद है बुरे ज्यूँ बुरा जानते हैं ॥१ ५॥
गिरते है शह सवार ही महदाने जग में।
वोह तिफल क्या गिरेगा जो घुटने के बल चले ॥१७६॥
काट दो नखले तमन्ना को ये अमीर।
फूल कमबख्त में न आये न कभी फल आये ॥१७७॥

---

१ परवाह २ शराब पिलाने वाला

जो कोई तुझको पानी पिलाये
उसको अच्छा खाना खिलादे
जो कोई तुझसे हँस कर बोले
उसके आगे सिर को झुकादे
ताम्बे का जो पैसा दे, तू उसको ज़र दे दे
जाँ बचावे जो तेरी तू उसकी खातर सिर दे दे ॥१७८॥

अपनी निगरानी अपने हाथ में होती हैं ।
अपनी कमबख्ती भी अपने हाथ में होती हैं ॥१७९॥

ज़िन्दगी आमद बिराये बन्दगी ।
ज़िन्दगी बे बन्दगी शर्मिन्दगी ॥१८०॥

काश अपनी मौत से इन्सान होता बाखबर ।
बे ज़बाँ मज़लूम फिरते फिर ज़हाँ में बे खतर ॥१८१॥

जगह जी लगने की दुनियाँ नहीं
ये इबरत की जाँ है तमाशा नहीं हैं ॥१८२॥

बगैरह मुश्क्कत नाम किसी का नही हुआ ।
सो बार आक्की कटा तब नगीं हुआ ॥१८३॥

यारों वतन से हम गये हमसे वतन गया ।
नक्शा हमारे रहने का जंगल में बन गया ॥१८४॥

दिल के फफोले जल उठे सीने के दाग से ।
इस घर को आग लग गई, घर के चिराग से ॥१८५॥

ख्याल आता है मुझे दिले जान तेरी बात का ।
फिकर तुझको हैं नहीं आगे अंधेरी रात का ॥१८६॥

मर्दाने खु़दा खुदा न बाशन्द ।
लेकिन ज खु़दा जु़दा न बाशन्द ॥१८७॥

हँसी अब उडने लगी वीर के फिसाने की ।
सम्हालों होश बदल दों फिज़ा जमाने की ॥१८८॥

फूल तो दो दिन की बाहारे जाँ फिज़ा दिखला गये ।
हसरत उन गूँचो पे है जो बिना खिले मुरझा गये ॥१८९॥

इक हूक जिगर मे उठती है इक दर्द सा दिल में होता है ।
हम रात को उठके रोते है जब सारा आलम सोता है ॥१९०॥

मिटने वालो की वफा का यह सबक़ याद रहे ।
बेड़ियाँ पावों मे हो और दिल आज़ाद रहे ॥१९१॥

दम दमे मे दम नहीं, अब खैर मांगों जान की ।
ऐ ज़फर ? ठण्डी हुई शमशीर हिन्दुस्तान की ॥१९२॥

परवरदिगार मेरा हाल देख ।
हुक्कम होता है अपने ऐमाल देख ॥१९३॥

कितनी युवानी मे इश्क़ की तमन्ना पूरी की
कितने वे जवाँ को सताया जीवन के नशे मे
मस्ती मे फिरता था इश्क करता तागवर में
अब परवरदिगार को याद करता है ॥१९४॥

किसी निज़ाम को गिराना हो, तो जोश की जरूरत है ।
किसी काम को बनाना हो, तो होश की जरूरत है ॥१९५॥
—जवाहरलाल नेहरू

लिखा परदेश किस्मत में फिर वतन को याद क्या करना ।
जहाँ बेदर्द हाकिम हो, वहां फिरयाद क्या करना ॥१९५॥

जब गाँठ में पैसा होता है, जब पेट में रोटी होती है ।
तब हरेक ज़र्रा हीरा हैं तब हरेक शबनम मोती हैं ॥१९६॥

गर बस्ती में रहना, तुझको तो वस्तों को बरबाद न कर ।
गर मौजों में रहना चाहे, तो दिल अपना दरिया कर ले ॥१९७॥

दिया हमने जो अपनी खुदी को मिटा ।
वोह जो परदा था बीच में अब न रहा ॥१९८॥

ऐश कर दुनियाँ मे गाफिल, जिन्दगानी फिर कहाँ ।
जिन्दगानी गर मिली भी तो नौजवानी फिर कहाँ ॥१९९॥

कुछ कर लों नौजवानों उठती जवानियाँ है ।
खेतों को दे लों पानी यह कह रही है गंगा ॥२००॥

न पीछे हटाया कदम को बढ़ाकर ।
अगर दम भी लिया तो मंजिल पे जा कर ॥२०१॥

इकठे गर जहाँ के जर सभी मुल्को के माली थें ।
सिकन्दर जब गया दुनियाँ से दोनों हाथ खाली थे ॥२०२॥

भागती फिरती थी दुनियाँ जब तलब करते थे हम ।
जब जो नफ़रत हमने की वोह बेकरार आने को है ॥२०३॥

गाफ़िल तुझे घड़ियाल देता है मुनादी ।
गरदूने घड़ी उम्र की इक और घटा दी ॥२०४॥

फिलासफी की बहस के अन्दर खुदा मिलता नहीं ।
डोर को सुलझा रहा हूँ और सिरा मिलता नहीं ॥२०५॥

दुनियाँ भी अजब सराये फानी देखी,
हर चीज़ यहाँ की आनी जानी देखी ।
जो आके न जाये वोह बुढापा देखा ।
जो जाके न आयें वोह जवानी देखी ॥२०६॥

पल्ले खर्चो नहीं बाँदते पक्षी और दरवेश ।
जिन्हाँ नूँ तक़वा रव्वदा उन्हाँ नूँ रीचक हमेश ॥२०७॥

कहाँ गये तेरे ख़स खस के बगले कहाँ तेरी अबला परी गई ।
चले गये सब अजल के मुख में ख़ुश्की रहीं न तरी रही ॥२०८॥

आज कल के दोस्त हैं कागज के फूल ।
देखने में खुशनुमां बूये बफा कुछ भी नही ॥२०९॥

अगर कुछ मर्तवा चाहे तो कर, खिदमत फकीरों की ।
वलाह को टाल देतीं हैं दुवाँ रोशन ज़मीरों की ॥२१०॥

पता क्या ख़ाक बतलाएँ निशाँ बेनिशा अपना ।
बिछा बिस्तर यहाँ बैठे वो ही समझो मकां अपना ॥२११॥

अमल से जिन्दगी बनती हैं जहन्नत भी जहन्नुम भी ।
ये ख़ाकी अपनी फ़ितरत मे न नूरी है न नारी[1] हैं ॥२१२॥

जिनके महलों मे हजारों रग के फ़नूस थे ।
झाड उनकी कब्बर पर है और निशां कुछ भी नहीं ॥२१३॥

गूँजते थे जिनके डंके से ज़मी और आसमाँ ।
कब्बर मे सोते है वोह और निशां कुछ भी नही ॥२१४॥

---

१ अग्नि, नर्क

ये मुसीबत आदमी के सर से टल सकती नहीं।
मौत के आगे किसी की पेश चल सकती नहीं ॥२१५॥

मौत से इन्सान को हरगिज़ न डरना चाहिये।
जान जायेगी न इस का फ़िक्र करना चाहिये ॥२१६॥

बशर राज़े दिली कह कर ज़लीलो ख़्वार होता है।
निकल जाती है जब ख़ुशबू तो गुल बेकार होता है ॥२१७॥

क्या लाया था सिकन्दर दुनियाँ से ले गया क्या।
दोनों थे हाथ ख़ाली बाहर कफ़न से निकले ॥ १८॥

आहाएँ मज़लूम की तूफ़ान उठा देती हैं।
सरद होती है मगर आग लगा देती हैं ॥२१९॥

सरासर दिल दु:खता है कोई ज़िक्र और ही छेड़ो।
पता ख़ाने बदोशों से न पूछो आशियाने[२] का ॥२२०॥

वतन में कुछ नहीं होती है कदर इन्सान के जौहर की।
रहा जब तक समुन्दर में हुई न क़दर गौहर की ॥२२१॥

तुम मिलो तो छोड़ दूँ मैं स्वर्ग की जागीर भी।
क्योंकि फिर तो मैं बनाऊँगा स्वयं तकदीर भी ॥२२२॥

क्या हुआ गर मिट गये अपने धर्म के वास्ते।
बुलबुले कुर्बान होती हैं चमन के वास्ते ॥२२३॥

र धीर धरणी हम बाल बीर सब तेरे कष्ट मिटा देंगे।
भारत के मानसरोवर में आशा के कमल खिला देंगे ॥२२४॥

---

२ घर का

हम मर्द उस को कहते हैं ।
जो बात पे अपनी अड़ जाए ।
दिल का मर्द हिम्मत का धनी ।
ओ शान पे अपनी मर जाए
कभी किसी का अहसान न माने ।
चाहे धड से शीश उमर जाए ॥२२५॥

अगर है शौक मिलने का तो हरदम लौं लगाता जा ।
जलाकर खुदनुमाई को भसम तन पर लगाता जा ॥२२६॥

अहिस्ता अहिस्ता बरौ बल्कि मवरों ।
कि ज़ेरे क़दमत हज़ार जानस्ता ॥२२७॥ –शेख सादी

सहले[1] हवादिस[2] फिरता हैं कहीं मर्दों का मुँह ।
शेर सिद्धा तैरता है वक़्त रफ़तन आब में ॥२२८॥

कर्म पलटे तो सभी जगत पलट जाता हैं ।
यार तोते की तरह आंख बदल जाता हैं ॥२२९॥

यह एक पल में शहन शाहों का गदा करते हैं ।
होके मोहताज वोह दर दर पे सदा करते है ॥२३०॥

अपने बेगाने सभी आँख बदल जाते हैं ।
तगदस्ती में नहीं कोई किसी का होता है ॥२३१॥

सच्च तो यह के बुरा वक्त न दिखलाये खुदा ।
दोस्त फिर जाते हैं दुश्मन की शिकायत क्या हैं ॥२३२॥

कल हवीश इस तरह से तरगीब देती थी मुझे ।
ख़ूब मुल्के रूस है और सर जमींने तूस हैं ॥२३३॥

---

१ लगातार २ मुसीबत में भी

सब्ज़ बागे. दहर में बर्ग. खिज़ाँ होता नहीं ।
पीर होकर फिर बशर कोई जवाँ होता नहीं ॥२३४॥

दोस्तों की बेरूखी का क्या गिल्ला पीरी में हो ।
बचके चलते है सभी गिरती हुई दीवार से ॥२३५॥

मंज़रे तसवीर दर्दे दिल मिटा सकता नही ॥२३६॥
ऐना पानी तो रखता है पिला सकता नहीं ॥२३७॥

येह दुनियाँ के बखड़ें सब यही रहे जायेंगे एक दिन ।
है फक़त इमान वोह शह जो तेरे साथ जानी हैं ॥२३८॥

हुई पैदा जो शह यहाँ पर फनाह है एक उसको ।
जो मिट्टी से बनी शह वोह मिट्टी में समानी है ॥२३९॥

हाथ चलता है तेरा अब तो नेकी ले कमा ।
देखते ही देखते होती हैं यह दौलत हवा ॥२४०॥

काम तू जैसा करेंगा, वैसा फल पायेगा तू
साथ अपने कुछ न लाया और ना ले जायेगा तू ॥२४१॥

सत्य मर सकता नहीं है झूठ के हथियार से ।
रूहो कट सकती नहीं हरगिज़ तलवार से ॥२४२॥

बक्के मुर्ग दीदम न पाओ न पर न अज सिकम मादर ।
न पुस्ते पिदर न बर आसमाँ न जे.रे ज़मीं हमेशा खुर्द गोस्ते
आदमी ॥२४३॥

जिन्दगी क्या चीज हैं और किस का नाम ।
यह नामुदे[1] ऐश हैं वोह दाएमी[2] आराम ॥२४४॥

---

१ दरिया ऐश २ हमेशा के लिए

मरज़ तेरा ही नक़शा हो हर एक नक्शे में दुनियां के।
ग्र मेरे वीर भगवन तू मुझे ऐसी बसीरत[1] दे ॥२४५॥

खमीदा करता हैं इन्सान को जौहर[2] शराफ़त का ।
ग्रसालीत[3] जिस में होती है वो ही तलवार कस्तीं[4] है ॥२४६॥

ज़ाद थी हमको भी नक़शा नक़्श बज्म[5] आराइवा[6] ।
लेकिन सब नक़्शों मिगारे ताके निसियां हो गई ॥२४७॥

शाह ग्रौर दरवेश भी हैं एक नज़दीके क़ज़ा ।
जब ग्रजल ग्रायेगी होगा सब का बिस्तर ख़ाक में ॥२४८॥

ऊद[7] करने की नहीं रूह निकाल कर तन से ।
फिर न होगा ये घर ग्राबाद जो वैरां होगा ॥२४९॥

हूमाये हिर्स को दामे कनाल मे फंसाया हैं ।
जो है इकबाल शाही वोह मेरे ताले[8] की पस्ती है ॥२५०॥

बिगड़ जाती हैं जब ज़ालम की नीयत ।
नहीं काम ग्राती दलील ग्रौर हुज़ज़त ॥२५१॥

खुदा जब हमसे पूछेगा के यह तकसीर किसी की हैं ।
मुक्कदर को दिखा देंगे कि यह तहरीर किसी की है ॥२५२॥

चूमने फिर से लगी हैं चोटी गगन को सोम की ।
फिर किसी ग़जनी से कोई ग़ज़नवी पैदा करों ॥२५३॥

---

१ रोशनी २ खूबी का ३ नर्माई ४ झूकती
५ महफल ६ सजावट ७ वापस ग्राना ८ बदकिस्मत

अलीगढ के प्रोफेसर का जननून

सर उठा कर गिर पड़ा फुव्वारा आखिर सर के बल ।
झूके चलना चाहिए यां सर उठाना है मनाह ।।२५४।।

कुदरत को ना पसन्द है सख़्ती जबान में ।
पैदा हुई न इसलिए हड्डी ज़बान में ।।२५५।।

सभी कुछ हो रहा है इस तारिक्की के ज़माने में ।
मगर अफ़सोस ये है आदमी इन्सान नही होता ।।२५६।।

गलत है अफतें आती नहीं हैं ताजदारों पर ।
येह बिजली दु:ख की गिरती हैं सदा ऊंचे मिनारों पर ।।२५७।।

गरदाब में किस्ती होने पर भी खौफ़ शकस्ता शाद न हो ।
और दाम[२] फ़लक़ तक आये पहुँच परवाज़ पे लोकिन नाज़न हो ।२५८।

इन चश्मेतर के सामने क्या हैं अमल बर्षात की ।
वोह बर्षती है कभी और येह झड़ी दिन रात की ।।२५९।।

ज़वाले जाहों हसमत में बस इस इतनी बात अच्छी हैं ।
कि दुनियां को बेखुबी आदमी पहुँचान लेता हैं ।।२६०।।

हँसी के साथ यहां रोना है मिसले कुल कुले मीना[२] ।
किसी न कह कहा ऐवे खबर मारा तो क्या मारा ।।२६१।।

इल्म चंदां के नेस्तर खानीदर अमल नेस्त ।
तौ महेज नादानी न मौकिक[३] बयद न दानीशमन्द ।
चार पाये बरों किताबों चद ।।२६२।।

राहत का इस तरह से ज़माना गुजर गया ।
जैसे हवा का झोका इधर से उधर गया ।।२६३।।

---

१ दिल तोड़ना २ बोतल जब पानी निकलता ३ समझने वाला

दिले बद ख्वाह में था मारना या चश्मे बद[1] की भी ।
फ़लक पर ज़ौक़ तीरे आहा गर मारा तो क्या मारा ॥२६४॥

और को करनी नोसियत इस क़दर अहसान है ।
ऐब पर देना है अपने जितना मुश्किल ध्यान है ॥२६५॥

चमन से जब के बुल बुल ने उठा लिया आशियाना अपना ॥
उसकी बल्लाह से बूम बसो या हुमा बसो ॥२६६॥

फर्शे मखमल पर जिन्हें मुश्किल से कल आती थी नींद ।
ढूंढते है ईंट वोह तकियां लगाने के लिये ॥२६७॥

कसरे आली हो मुजसर या हो कोई झोपड़ी ।
हो नज़र में मेरी यकसां हो न कुछ दिल में गुबार ॥२६८॥

अभी सब चूमते थे और आंखों पर बैठते थे ।
जगह देते थे दिल में और कलेजे लगते थे ।
अभी मुंह पर कफ़न डाला तो वोह सूरत नहीं तकते ।
वो ही प्यारे उसे घर में घड़ी भर नहीं रखते ॥२६९॥

मुश्किले नेस्त के अहसान न शब्द ।
मर्द वायद[2] के हरासा[3] न शब्द ॥२७०॥

आज जिनके फर्शे मखमल पर नहीं आती थी नींद ।
ढूंढते हैं ईंट वोह तकियां लगाने के लिये ॥२७१॥

आज जिनके फर्शे मखमल पर छिले जाते है पांव ।
कल को लौटेगा उन्हीं का कासाय सर खाक पर ॥२७२॥

मुर्ग दिल हिर्स के पंजे में गिरफतार नहीं ।
दस्ते सयाद[4] में दाना भी है और दाम[5] भी हैं ॥२७३॥

---

१ बुरी नजर २ लाजिमी ३ मायूस ४ शिकारी ५ जाल

बद न बोले जे़रे गर्दूं गर कोई मेरी सुने ।
है येह गुम्बद की सदा जसी कहृ वैसी सुने ॥२७४॥
चरख़ गर्दां है तरक्की में तनज़ु़ल को न भूल ।
महानों हो कर कवि[1] क्या जल्द लाग़ीर[2] हो गया ॥२७५॥
येह यहाँ क्या है फ़क्त़ धोखे की टट्टी सर बसर ।
एक सराये है यह मुसाफिर ठहरता है रात भर ॥२७६॥
जब सफेदी सुबह को लाती है पगामें सफर ।
तब घड़ी-घड़ियाल कहते हैं कि ग़ाफ़िल कूच कर ॥२७७॥
जिसे पे तू सोया था वोह ताबूत[3] है बिस्तर नहीं ।
ऊँठ सम्भल हो जा कमर[4] बसता ये तेरा घर नहीं ॥२७८॥
काल की आज्ञा में कैसे ज़ोरावर चले ।
क्या मजाल इस हुक्कम की कोई अदूली कर सके ॥२७९॥
राव चले राणा चले धनवाँ चले निर्धन चले ।
कौन स्थिर रह सके जब काल का चक्र चले ॥२८०॥
दारा रहा न यम न सिकन्दर सा बादशाह ।
तख़्ते ज़मी पे सैकड़ों आये और चलेंगे ॥२८१॥
साग़रे ज़रीन हो या मिट्टी का हो एक ठिकारा ।
तू नज़र कर उस पे जो कुछ उसके अन्दर हो भरा ॥२८२॥
क्या ग़ज़ब है नहीं इन्सां को इन्सांन की क़दर ।
हर फरिस्ता के दिल में येह है हसरत के इन्सां होता ॥२८३॥
ज्योति क्यों धरे हाथ पर क्यों हाथ को बैठा ।
जाता हैं चला वक्त़ यार इसकी कदर कर ॥२८४॥
मिटा दे अपनी हस्ती को अगर कुछ मर्तबा चाहता है ।
कि दाना ख़ाक में मिल कर गुल्ती गुल्लजार होता है ॥२८५॥

---

१ बड़ा   २ छोटा   ३ अर्थी   ४ तैयार

आगाहा अपनी मौत से कोई बशर नहीं ।
समान सौ वर्ष के है पल की खबर नहीं ॥२८६॥
मर मिटाकर अपनी हस्ती सूरमा बन जायेगा तू ।
महले आलम की निगाओं में समा जायेगा तू ॥२८७॥
सौ जूतों से कम रूत आली¹ नहीं होता ।
इज्जत का खजाना कभी खाली नहीं होता ॥२८८॥
दिलदे तो इस मिजाज का परवरदिगार दे ।
जो रंज की घडी हो खुशी से गुज़ार दे ॥२८९॥
न हो अपने से कुछ कावीश न हो रंजश पराव से ।
ऐ मेरे वीर भगवान तू मुझे ऐसी तबीयत दे ॥२९०॥
एक एक से एक एक को बढ़ कर बना दिया ।
दारा किसी को सिकन्दर बना दिया ॥२९१॥
मूसा¹ भजा मौत से आगे मौत खड़ी ।
पत्थर भिडदे देख ले लघेगा केडी गली ॥२९२॥
आदमी का जिस्म क्या है जिस पे शैदा है जहाँ ।
एक मिट्टी की इमारत एक मिट्टी का मकाँ ॥
खून का गारा हैं इसमे और ईंटे है हड्डियाँ ।
चन्द साँसों पर खड़ा है यह खियाली आसमाँ ।
मौत की पुर ज़ोर की आंधी इससे जब टकरायेंगी ।
देख लेना यह इमारत टूट कर गिर जायेगी ॥२९३॥
सुबह होती है शाम होती है ।
उम्र ज्यो ही तमाम होती हैं ॥२९४॥
दुनियां में आके भूल न जाना आदम की राह ।
आगे मुसाफिरी मे भी यादे वतन रहे ॥२९५॥

इन्सान को चाहिए कि सदा नेकियां करे।
दो दिन की जिन्दगी का नहीं एतबार है ॥२९६॥

किसी से न अब तक सरोकार था।
बड़े चैन में यह दिले यार था ॥२९७॥

सफर दर पेश है मुल्के आदम का।
कटेगी मंज़िल दुश्वार क्यों कर ॥२९८॥

गया जो वक्त फिर मिलता नहीं है।
उलट कर तीर कब आया कमां में ॥२९९॥

एक येह भी है कि जिनके रहम में सानी नहीं।
एक तू भी है कि जिसकी आँख में पानी नहीं ॥३००॥

बढते है आगे कदम कदम हर दम ही खुशी दिखाते हैं।
मर जाते है कट जाते है पर मस्तक नहीं झुकाते हैं।
दु.ख झूम झूम कर आते है पर वीर नहीं घबराते है।
कर दिखलाते हैं वोही काम जो मन मे अपने लाते है ॥३०१॥

आदमी जाये मुसीबत के मुकाबिल किस तरह।
जिस तरह हैं शेर जाता सहल में सीने के बल ॥३०२॥

फकर बकरे ने किया था, है कि मुझ में मैं भरी।
फेरदी कस्साब ने फिर उसकी गरदन पर छुरी।
गोश्त हड्डी और पसली जो था जिस्म में आर में।
कुछ लुट गया कुछ पीस गया कुछ बिक गया बजार में।
सिर्फ आन्त रह गई इक मैं सुनाने के लिए।

ले गया नादाफ फिर धुनकी बनाने के लिए ।
मार से सोटे कि जब वोह तांत घबराने लगी ।
मैं के बदले फिर तू ही तू ही सदा आने लगी ॥३०३॥

भरी है किस बला की मेरे आश्कों में पशेमानी ।
निकलता हैं जो एक आंसू तो पड़ता हैं घडों पानी ॥३०४॥

कृष्ण अपने भक्तों के प्रति कहते हैं ।

हमारा प्रण हैं कि पाप कर ले ।
तुम्हारा प्रण है कि पाप हर ले ।
तुम अपने वायदे से टल रहे हो ।
हम अपने वायदे पे चल रहें हैं ॥३०५॥

जुल्म करना छोड दे जालिम खुदा के वास्ते ।
है यह हरकत नारूवां अहले वफा के वास्ते ॥३०६॥

है बनाये सब उसी के जिसने तुमको पैदा किया ।
क्यों सताता है किसी को दो दिन के वास्ते ।
होगी खुदगरजी भला इससे भी बढ़ कर और क्या ।
जान लेता हैं और की अपने मजे के वास्ते ॥३०७॥

चन्दरोज जिन्दगी रत्न है येह जल का बुलबुला ।
खामुख्वाह बनता हैं क्यों मुजरिम सजा के वास्ते ॥३०८॥

इरादे तो हैं मजिल के सफर करना नहीं आता ।
हमें कहना तो आता हैं मगर करना नहीं आता ॥३०९॥

बुरे दिन हो तो रहती नहीं है कुछ काम की बुद्धि ।
बिगड़ जाती हैं बुद्धिमान की गुणधाम की बुद्धि ।
दुनिया में होता है कहीं सोने का मृग पैदा ।
मुसीबत के ज़माने में बिगाडी राम की बुद्धि ।।३१०।।

है जवानों के लिए सिनेमा में जाना जिन्दगी ।
जेब में पाई न हो टाई लगाना ज़िन्दगी ।
मायविसरों से बाग में आँखें लड़ाना जिन्दगी ।
गुसलखाने में अकेले गुण गुणाना जिन्दगी ।।३११।।

लाख बार उठ सकेगा मुफलिसी का मारा हुआ ।
हशरत तक न उठ सकेगा ऐ माल का मारा हुआ ।।३१२।।

तहजीब फख़रे इज्जत आम है ।
तहजीब से आदमी की शान है तहज़ीब से ।
अब सुनों तहज़ीब कहते हैं किसे ।
असल में है क्या मुराद इस लफाज़ से ।
येह नहीं तहजीब आला सूट हो ।
हैट सर पर पाओं में फुल्ल बूट हो ।
आँखो पर ऐनक कलाई पर घड़ी ।
पिछे कुत्ता हाथ में फैन्सी छडी हो ।
येह नहीं तहज़ीब ऐसी शान हो ।
देखें नफरत से गरीब इन्सान को ।
येह नहीं तहज़ीब पहने वोह लिबास ।
देख कर जिसे हया आए न पास ।

येह नहीं तहज़ीब नंगे सिर फिरें।
वक़्त खोंए सिर्फ़ टेढी 'मांग में।
येह है तहज़ीब आदमी में हो।
येह दिल में हरलहज़ा रहे खौफ़ खुदा का।
जीने का मकसद हो खिदमत ख़ल्क़ की।
आदमी के काम आए आदमी।
बस शराफ़त है निहायत खूब।
शह नाम इस का नाम तहज़ीब है ॥३१३॥
हरचन्द कोट भी है पतलून भी है।
बंगला भी है ठाट भी है साबुन भी है।
लेकिन येह मैं तुझसे पूछता हूँ हिन्दी।
यूरुप का तेरी रगों में खून भी है ॥३१४॥

पढ़ पढ़ के जो डाक्टर हो जाए।
तो अमरीज़ बढ़ाने की मांगे दुआएं ॥३१५॥

वकालत का पेशा अगर सीख जाएं।
तो लड़वां लड़वां पागल बना दें ॥३१६॥

विमुख होते है मित्र सब छोड़ दुःख के जाल में।
साथ देता नहीं कोई भी आपत के काल में ॥३१७॥

तन्दुरुस्ती यारो बड़ी बादशाही है।
सच पूछिएँ तो ऐन येह फ़ज़ले लाही है ॥३१८॥

बेकार बशर कुछ न कुछ किया कर।
और कुछ न हो तो फाड़ फाड़ कर सिया कर ॥३१९॥

वक़्त पर कतरा है काफ़ी अब्रे ख़ुश हंगाम का ।
जब के खेती जल गई, वर्षा तो फिर किस काम का ॥३२०॥

जो दिन गुज़रा फिर आयेगा क्या
इस उमर से घट न जायेगा क्या ।
गुमरस्ता कोई पायेगा क्या
रफ़ता का पता लगायेगा क्या ।
फिर किस लिए वक़्त टालते हो
काम आज का कल पे डालते हो ॥३२१॥

चार दिन की चान्दनी आख़िर अन्धेरी रात हैं ।
सारे ठिकाने जायेंगे रहने की झूठी बात है ।
ना किसी का है भरोसा ना किसी का साथ है ।
चलती दफ़े देखा तो जाता मनुज ख़ाली हाथ है ॥३२२॥

समझ बूझकर दिल खोज प्यारे आश्क़ होकर सोना क्या ।
जिन ननों से नींद गवाई फिर तकीयां लेफ बिछौना क्या ।
रूखा सूखा राम का टुकड़ा फिर चिकना और सलूना क्या ।
कहत कमल प्रेम के मार्ग जब शीश दिया फिर रोना क्या ॥३२३॥

ब्राह्मण मरे जो करे ना इष्ट पूजा, साधु मरे जो श्रेष्टाचार नही ।
पिता मरे जो फरज़ नहीं अदा करदा, पुत्र मरे जो आज्ञाकार नहीं ।
राजा मरे जो करे ना न्याय, नित प्रजा मरे जो राजा के हितकार नहीं ।
वोह भी इस जगह से मरे जो रब्बदे नाल जिसदा प्यार नहीं ॥३२४॥

सुख न पाओगे दबा कर हक़ किसी हक़दार का ।
टूट जायेगा किला इस रेत की दिवार का ॥३२५॥

शौक दीदार का गर है तो नज़र पैदा कर।
शौक इन्सानियत का गर है तो केवल ज्ञान पैदा कर ।।३२६।।

जल्द निकलेगा नतीजा इस मेरी गुफतार का ।
है अंधेरी रात आखिर चान्दना दिन चार का ।।३२७।।

जो तबीयत में समाया इस कदर अभिमान है ।
निश्चय समझो यह तुम्हारी मौत का सामान है ।।३२८।।
—कृष्ण दुर्योधन के प्रति

संभल कर बैठना जलवा मुहब्बत का देखने वाले ।
तमाशा खुद न बनजाना तमाशा देखने वाले ।।३२९।।

अगर मंज़ूर है धन रक्षा तो धनवानों बनों दानी ।
कूएँ से जल न निकलेगा तो सड़ जायेगा सब पानी ।
दिया जल हमको बादलों ने तो ऊँचा होगया बादल ।
रहा नीचा ही सागर हैं आदाता को पशेमानी ।
कोई मरता है धन देकर, कोई देता हैं धन मर कर ।
ज़रा से फर्क में बन जाते है ज्ञानी के अज्ञानी ।।३३०।

कलेजा थाम कर जब दिल जले फ़रियाद करते हैं ।
तो सुनने वालों के दिल से सुरख शौले निकलते हैं ।।३३१।

मजाज़ी इश्क के बदले हकीकी इश्क हो जाता ।
न पड़ती नाव चक्कर में तो बेड़ा पार हो जाता ।।३३२।।

तुम्हारे सामने रख दूँ दिले नाशाद के टुकड़े ।
इन्हीं टुकड़ों में हो शायद तुम्हारे तीर के टुकड़े ।।३३३।।

मुहब्बत सांप हैं ज़हर है बला हैं।
मगर मुहब्बत में खु़दा खु़द मुब्तिला हैं ॥३३४॥

जब तू हुआ फ़कीर तो नाता किसी से क्या।
छोड़ा कुटुम्ब तो फिर रहा रिश्ता किसी से क्या ॥३३५॥

मतलब भला फ़कीर को बाबा किसी से क्या।
दिलबर को अपने छोड़ के मिलना किसी से क्या ॥३३६॥

पाँच तत्व का बना पूतला जिसका नाम धरा बन्दा।
कारीगरने खूब घडा है साफ किया फेराया रंदा।
उपर से देही कंचन जैसी बीच मे माल भरा गंदा।
हुशन ज़वानी ज्यूँ ढल जावे चढे भान छुप जाये चन्दा।
मौका है कुछ सौदा करले फिर दसौर हो जाये मन्दा।
उस दिन बन्दिया कुछ भी नहीं होगा जब इंजन पड जाये ठंडा ॥३३७॥

हर आन[1]हँसी हर आन खु़शी हर वक्त़ अमीरी है बाबा।
जब आशिक़ मस्त फकीर हुए फिर क्या दिल गीरी हैं बाबा ॥३३८॥

ज्ञानी धरा कर नाम करते काम हैं अज्ञान के।
उपकार बुद्धि हैं नहीं, आप भूखें मान के ॥३३९॥

आँख झमका मार लो दर्शन से ही है काम।
ऊँदों वोह नर मूढ़ है जो चाम से घीसे चाम ॥३४०॥

इस दुनियाँ में एक रत्न हैं मिलता बारम्बार नहीं।
जैसे फुल गिरा डाली से फिर होता गुलज़ार नहीं।
उसकी कीमत है बड़ी भारी जानत लोग गँवार नहीं।
परमेश्वर के मिलने का फिर उसके बिना दवार नहीं ॥३४१॥

---

१ उदासी

गुल गये गुलशन गये जगह में आक धतूरा रहे गये ।
कदरदाँ सब चल बसे, बाकी उल्लू के पठे रहे गये ।।३४२।।
वाकी वेशूरा

इस दुनियाँ में एक अचम्भा हमने देखा है जो बड़ा ।
एक छोड़ कर चला जमीं को दूजा करता है झगड़ा ।
वोह नहीं मन में समझे मूर्ख मैं भी जावन हार खड़ा ।
घड़ी पलक का नहीं ठिकाना किसके भरोसे भूला पड़ा ।।३४३।।

कहना उसको जो करे कहना, न करे कहना तो क्या कहना ।
रहना उस पे जो रखे हित से न रखे हित से तो क्या रहना ।
बहना उस पे जो लखे गुण को, न लखे गुण को तो क्या बहना ।
लेना वोही जो तकदीर में लिखा, न तकदीर में लिखा तोक्या लेना ।।३४४।।

कोई खान मस्त कोई पहरन मस्त कोई राग रागनी दुहे में ।
कोई हाल मस्त कोई माल मस्त कोई तूनी मैंना सूएँ में ।
कोई अमल मस्त कोई रमल मस्त कोई शतरज चौपट जूए मे ।
इक खुद मस्ती बिन अवर मस्त सब पडे अविद्या कूएँ में ।।३४५।।

दाल दिल तू इतना क्यों मस्त होया ।
अज कल गुलजार बरवाद तेरी
फूल गया तू सम्बन दे बूजं वागूं
पलक दी नहीं मुनियाद तेरी ।।३४६

भारत तेरी तबाही तुझ पे जवाल हैं
इन आफतों से बचना तुझको मुहाल हैं ।।३४७।।

जो फंसे फन्दे में इनके वोह गए शुभ काम से ।
दीन से और धर्म से और शहर जंगल ग्राम से ।
है वोही मूर्ख जो जिसते पाप देखों काम से ।
जावेंगे अग्नि में डाले जो विमुख हैं आत्मराम से ।।३४८।।

मिले खुश्क रोटी जो आज़ाद रह कर ।
गुलामी की पूड़ी या हालुए से बेहतर ।।३४९।।

ग़रीब को मत सताओं ग़रीब रो देगा ।
अगर परवरदिगार (भगवान) सुन लेगा तो मालों ज़र से खोदेगा ।।३५०।।

हो फँसा व्यसनों में जो वोह वीर है किस काम का ।
जग जिस को लग चुका वोह आब है किस काम का ।।३५१।।
पं बदरीनाथ भट्ट

जो देखी हिष्ट्री कौमों की तो कामिल यकीं आया ।
उसे जीना नही आया जिसे मरना नहीं आया ।।३५२।। अकबर

मरना भला है उसका जो अपने लिए जिये ।
जीता हैं वोह जो मर चुका सबकी भलाई के लिए ।।३५३।।

जिन्दगी अपनी फसाना है ज़माने के लिए ।
गुम हुए है हम यहाँ से याद आने के लिए ।।३५४।।

मर गये लेकिन जमी पर नाम पैदा कर गये ।
जान जाने के लिए है मौत आने के लिए ।।३५५।।

मर्द जो कहते हैं मुँह से उसे कर देते हैं ।
पांव डिगते नहीं हम बात पर सर देते हैं ।।३५६।।

दोस्त महफूज रहे रजों आलम से।
मेरे दुश्मन को भी या रब्ब न परेशानी हो ॥३५७॥

यह मुसाफिर नहीं रस्ते में ठहरने वाले।
खाक में मिल गये सब जोर जिताने वाले।
दफन हैं जेरे जमीं अर्श हिलाने वाले।
इश्क में जां से गुजरते हैं गुजरने वाले।
मौत की राह नहीं देखते मरने वाले।
वीर कर्म की परवाहा नहीं करते सन्मुख में आने वाले ॥३५८॥

पांव थर्राते थे जिनके सामने जाते हुए।
कासए सर उनको देखा ठोकरें खाते हुए ॥३५९॥

फलक देता है जिनका ऐश उनको गम भी होते।
जहाँ बजते हैं नक्कारे वहां महातम भी होते हैं ॥३६०॥

काबे को तोड़ डाला बिनाये खलील हैं।
और दिल को तोड़ डाल तो रब्बे जलील हैं ॥३६१॥

खाक में मिल जायेगा जब मेरी हस्ती का निशां।
ताजा होगी यादगारे जीस्त[1] इस तसवीर से ॥३६२॥

क्या मुफ्त का जाहिद[2] ने इल्जाम लिया।
तसबी के दानों से फक्त काम लिया।
येह नाम वोह था जिसका बेगिनत ले।
क्या लुत्फ जो गिन गिन के तेरा नाम लिया ॥३६३॥

१-जिन्दगी २-भक्त

बराबर दोस्ती निभते न देखी हमने दुनियां में।
किसी ढब से कभी रंजिश की सूरत आ ही जाती है ॥३६४॥

हकीकत खुल गई जिस दम दूई का उड़ गया पर्दा।
न वोह हम से जुदा ठहरे न हम उनसे जुदा ठहरे ॥३६५॥

वोह फिज़ां न रही वोह हवा न रही।
वोह मजा न रहा वोह चमन न रहा ॥३६६॥

नहीं परवाह अगर खांडे दुधारे सर पर चल जावें।
पड़े भाले जिगर पर तीर सीने से निकल जावें ॥३६७॥

जो गुस्से को पी जाते हैं औरों को माफी देते हैं।
इस राह पे चलने वाले ही परवरदिगार को वश में कर लेते है ॥३६८॥

वीर वोह है जिसके हृदय मे रहम हो धर्म हो।
पापियों से सख्त निर्दोषों के हक्क में नर्म हो ॥३६९॥

जिन्दगी हरते हैं किन्तु वीरता हरते नही।
धर्म पर मरते है जो जिन्दा है वोह मरते नहीं ॥३७०॥

उदय होगा हमारा भाग्य भी इस भाग्यशाली से।
चमक उठता हैं विश्व सारा अंशुमाली से ॥३७१॥

कह रहा हैं आसमां यह सब समां कुछ भी नहीं।
पीस दूंगा एक गर्दिश में जहां कुछ भी नहीं ॥३७२॥

सैर की फूल चुने खूब फिरे शाद रहे।
बागवां जाते हैं गुलशन तेरा आबाद रहे ॥३७३॥

दरों दिवार पे हसरत से नज़र करते हैं।
खु़शरहो ग्रहले वतन हम तो सफर करते हैं ॥३७४॥ भक्तसिंह

वक्त की बात दिनों के फेर।
मकड़ी के जाल में फँस गया शेर ॥३७५॥

हम चू सुबजा़ बारहा रोइदा अम।
हफ़्द सद हफ्ताद कालिब दीदा अम ॥३७६॥ मौलाना रूमी।

न हो दर्द की चोट जिस जि़गर पर।
खु़दा रहम करता नहीं उसे बशर पर ॥३७७॥

परख़ सकती नहीं रत्नों को हर इन्सान की आँखें।
दिखाई ब्रह्म क्या दे, हो न जब तक ज्ञान की आँखें ॥३७८॥

देकर ज़बान कौल फिराये वोह हम नहीं।
येह जा़न धर्म के लिए जाए तो गम नहीं ॥३७९॥ कर्ण

कर्म जो कुछ भी किया है भोगना है फल जरूर।
कंकरी जो जल मे फैंकोगे हिलेगा जल जरूर ॥३८०॥

आत्मा परमात्मा में कर्म का ही भेद है।
काट दे गर कर्म को तो फिर भेद है न खे़द है ॥३८१॥

जि़न्दगी जब तक रहेंगी रोज आफत आयेगी।
ख़त्म हम होंगे तो होगा खा़नमा बेदाद का ॥३८२॥

आया नज़र अमन तो बने शेर वोह बबर।
छूटी अगर बन्दूक तो भागो इधर उधर ॥३८३॥

बस समुन्दर देख ली हमने तेरी दरिया दिली ।
तिशने लब रखा सदफ[1] को बूंद पानी की न दी ।।३८४।।
सारा चमन पड़ा था लेकिन फ़लक को कद[2] थी ।
बिजली गिरी वोही पर जिस यां था आशियाना ।।३८५।।
खाकसारी को न छोड़े दे खुदा जिसको रूज़ दे ।
फलक़ पे हैं मेहतावां है ज़मीं पर चान्दनी ।।३८६।।
अगर दानिस्त अज़ रोजे. अज़ल दागे जुदाई रा ।
नमे क़द्रम शादिल रोशन चिरागे आशानी रा ।।३८७।।
किस तरह रीझेगा मुझ से वोह मेरा परमात्मा ।
जिस तरह सुख पाये जग में प्राणियों की आत्मा ।।३८८।।
दीन दुखियों को बचाओं अपने सेवाकार से ।
गर तुम्हें मतलब हैं दोनों लोक के उद्धार से ।।३८९।।
फूलाते पेट हो खाकर हमारा ही दिया दाना ।
कैद में कवि के हृदय की अंग्रेजों ।
नज़र बन्दी मे भी देते न मतलब का हमें खाना ।३९०। को फटकार
मुझे दु:ख दु खियो का यहां पर खींच लाया हैं ।
जिन्हें तुम शासकों ने बेरहम होकर सताया हैं ।।३९१।।
दु:खी को देख कर दर्द होता है जिन के सीने में ।
सफ़ल जीवन उन्हीं का है नहीं तो धिक है जीने में ।।३९२।।
यह हस्ती के चमन में चार दिन के बेल बूटे हैं ।
प्रभु का प्यार सच्चा हैं वाकी सब प्यार झूठे हैं ।।३९३।।
लान्त है उसकी हशमतों जाहों जलाल पर ।
जिसको तरस न आवे गरीबों के हाल पर ।।३९४।।

१–सींप २–जिद

क्या मजा जलने में हैं परवाने से पूच्छ ।
क्या मजा भक्ति में हैं परवरदिगार के दिवानों से पूंच्छ ॥३९५॥
मिल कर चलों तो यों चलों जैसे रुई कपास ।
जीते जी भी तन ढके मरे न छोड़े साथ ॥३९६॥
तुमे इतनी तो ताक़त है कि मेरे सर को उड़ा दो ।
बहादुर तुमको में तब समझू धर्म जो छुड़ा दो ॥३९७॥
अपने धर्म में हर शख्स बहाल अच्छा है ।
नाकिस हो मगर घर का ही माल अच्छा है ॥३९८॥
जगत में नार पतिवृत्ता पति पर प्राण देती है ।
उसे तजगैर सङ्ग सोवे तो वोह सारी रात रोती हैं ॥३९९॥
मुहब्बत रंग दे जाती है जब दिल दिल से मिलता है ।
मगर मुश्किल तो यह हैं कि दिल बड़ी मुश्किल से मिलता है ।४००।
शरीफ इन्सान वोह हैं जो शरीफों का चलन समझें ।
पराई मां बहिनों को खास अपनी मां बहिन समझें ।४०१॥
बनाये है जो खुद कानून खुद उन पर नहीं चलते ।
चलाते हो मगर उलटे कभी खजर नही चलते ॥४०२॥
जो उसके भक्त हैं उनको वोह हर सूरत में मिलता है ।
है जैसा जिसका दिल उसको उसी सूरत मे मिलता है ॥४०३॥
सबने मिल चावल पकाये फिर भी कच्चे रह गये ।
सारे शयर चल बसे 'बेइल्मी सारे रह गये ॥४०४॥
जो खालिया जो दे दिया वोह धन धनो का है सेही ।
धन लादकर परलोक मे क्या ले गया कोई कही ॥४०५॥
किया इस देश को बरबाद आपस की हर खाई ने ।
दिलों में वैर पैदा कर दिया अपनी पराई नें ॥४०६॥
अन्न धन मांगन के समय मे बिरथा गवांना छोड़ दो ।

पहले भूखों को खिलाओ अपना खाना भी छोड़ दो ॥४०७॥
दिखाकर आंख शाही को बस बरबाद होना हैं ।
न जब तक एक हो जाओं नहीं आज़ाद होना हैं ॥४०८॥
भूख से मरतों को देता अन्न का दाना नहीं ।
राज्य क्या ? जिसने प्रजा के दुःख को जाना नहीं ॥४०९॥
मर मिटूं स्वाधीनता के वास्ते अंजाम में ।
पर न अब पीछें हटूंगा मैं किसी भी परिणाम में ॥४१०॥
बूढापे का किया घोरोत्साह बोह जाता है पानी में ।
धर्म जनसेवा भी करनी चाहिए जवानी मे ॥४०११॥
देश भक्ति का येह दंम भरना नही अहसान हैं ।
धार येह खोडे की है जोखिम में हरदम जान है ॥४१२॥
जहां के नेक बन्दों में लिखा नाम तुम्हारा हो ।
तुम्हारी देशभक्ति का सदा रोशन सितारा हो ॥४१३॥
मन के चक्कर में हैं जब तक आफ़ते हटती नहीं ।
कर्म आधीन आत्मा की बेडियां कटती नहीं ॥४१४॥
हर बशर इसका मुजस्सम शिकवाएं तकदीर हैं ।
पत्ता पत्ता इस चमन का दर्द की तसवीर हैं ॥४१५॥जल्यांवाला बाग अमृतसर
न शादां है कोई जग में येह दुनियां देखी भाली हैं ।
न कोई भी बशर ऐसा जो रंजों गम से खाली है ॥४१६॥आरस्तु
नाज़ुकी उन पे फ़िदा होती हैं जो यूं फरमाते हैं ।
फर्शे मख़मल पर मेरे पैर छिले जाते हैं ॥४१७॥ टीपू सुल्तान
जब मिले जिस से मिलों ।
दिल खोल कर दिल से मिलों ॥४१८॥
एक आहा करे एक बाहा करे एक हंसता हैं एक रोता हैं ।
जो कर्म मे है बोह मिलता हैं जो कर्म करे सो होता हैं ॥४१९॥

आँख बन्द मति मन्द हैं अन्धा सब संसार ।
विष का प्याला हाथ में अमृत का करे विचार ॥४२०॥

आज इसकी हैं तो कल वोह दूसरे की यार हैं ।
जब तलक पैसा हैं तब तक वेश्या का प्यार हैं ॥४२१॥

औरत को मत देखों आँख, कान नीचे से गुल खिलेगा ।
इश्क का खंजर भड़क कर शोले दिखायेगा ॥४२२॥

याद रख दुःख पायेगा दुनियाँ में खोटे कर्म सें ।
घर का सुख देवी से हैं परलोक का सुख धर्म से ॥४२३॥

बुरे भले की किसी को यहाँ तहमीज नहीं ।
येह जान देते हैं उस पर जो कोई चीज नहीं ॥४२४॥

पड़े हैं जहिरी रुप और रंग के पीच्छे ।
है जैसे दौड़ते बच्चे पतंग के पीच्छे ॥४२५॥

फिर मुक्कों लातों की मार खायेगा ।
दुनियाँ की नजरों में तिरस्कार पायेगा ॥४२६॥

यहाँ कर्त्तव्य के कारण, कर्म से हर बात होती है ।
समय पर दिन निकलता है समय पर रात होती हैं ॥४२७॥

स्वर्ग के मिलने का येह ढग और येह युक्ती नहीं ।
जाति की सेवा करो, सेवा बिना मुक्ति नहीं ॥४२८॥

उससे जो व्यपार करते हैं उन्हें टोटा नही ।
दाम तुम समझों खरे है माल गर खोटा नहीं ॥४२९॥

बेबसी फाका गरीबी दुःख दर्द सब कट गया ।
क्या कमी हैं फिर जो उसके साथ सौदा पट गया ॥४३०॥

डूबने जाते हो खुद ही कूद कर मंझधार में।
सुख से रहना ही नहीं तुम चाहते संसार में ॥४३१॥

दःख भी सुख देगा समझ जाओगे अपनी भूल तुम।
पाओगे दुनियां के हर कांटें पे फिर एक फूल तुम ॥४३२॥

उसका हाजत मन्द निर्बल भी अभिमानी है।
जितना वोह धनवान है उतना ही वोह दानी भी ॥४३३॥
–कर्ण के विषय में

वोह किसी को अपने दरवाजे से पलटता नहीं।
हाथ खाली आदमी आता है पर जाता नहीं ॥४३४॥–दानी कर्ण

फिर तो भारत मिट गया बरबाद संसारी हुएँ।
जब ब्राह्मण और साधु भी दुराचारी हुए ॥४३५॥

येही रोना येही आफत वेही दुःख दम वादम होगा।
कामीनी मूजियों निकलों न तुम होंगी न गम होगा ॥४३६॥

बस इतना चाहिये सिद्धि मेरी तकदीर हो जाये।
रहम की एक नज़र किजे कि खाक भी अकसीर हो जावे ॥४३७॥

उन्हीं से पाया उन्हीं का है सब कुछ
उन्हीं पे जो कुछ वार दूं मैं
कलेजा क्या हैं जो नाथ मांगे
तो अपना सर तक उतार दूं मैं ॥४३८॥

सुबह होते दारा के सिर पर ताज था।
शाम हुई न सिर था न ताज था ॥४३९॥

औरंगजेब ने खड़ा होकर बड़े भाई क सिर कटवा दिया ।
चार टुकड़ों में चिरींजों के सामने फैंकवा दिया ॥४४०॥

अमीरी की तो ऐसी की सारा घर लुटा बैठे ।
फकीरी की ऐसी की खुदा के घर जा बैठे ॥४४१॥

ऐ मुसाफिर इश्क करना गर तुझे मंजूर हैं ।
इश्क कर उस नूर से जिस नूर का येह नूर है ॥४४२॥

न समझों रोग को मामूली, न समझों आग को कम ।
न समझों पाप को छोटा, न समझों शत्रु बेदम ॥४४३॥

किस काम की नदी वोह जिसमे नहीं रवानी ।
जो जोश ही न हो तो, किस काम की जवानी ॥४४४॥

निगाहें ढूंढती हैं तुझको किस पाक रूह में निहाँ है तू ।
मेंरी खलवत की फिजां उदास हैं तुझ वगैरह कहाँ हैं तू ॥४४५॥

करो दुनियां से गर दिल को जुदा यारों जुदा यारों ।
नजर आने लगे तुमको खुदा यारों खुदा यारों ॥४४६॥

उन्हें क्या खौफ हैं कि जिस पर पुण्य मेहरवां होवें ।
न होवें बाल भी बाकां कि दुश्मन कुल जहान होवे ॥४४७॥

हाथ पसारे रह गये बड़े बड़े प्रवीण ।
किस्मत जब उल्टी हुई, हो गये तेरह तीन ॥४४८॥

जो अहिंसा से नहीं रंगता है अपने पाक दामन को ।
सदा उपर उठाती हैं अहिंसा उसके जीवन को ॥४४९॥

महापुरुषों से होता है सदा उपकार दु:खियों का ।
उन्हें ही तो सताता है हमेशा प्यार दु:खियों का ।।४५०।।

दुर्जनों की जीभ सचमुच ही नदी की धार है ।
स्वच्छ सब ऊपर से अन्दर भीम मग भण्डार है ।।४५१।।

छेड़िये तो उसको जिसका अस्त्र तीर कमान है ।
पर उसे मत छेड़िये जिसका कि अस्त्र ज़बान है ।।४५२।।

सब गुज़र जाते हैं दुनियाँ से गुजरने वाले ।
जिन्दा रहते हैं फ़क्त धर्म पर मरने वाले ।।४५३।।

मरते मरते कह गये लुकमान से दानाँ हकीम ।
दर हकीक़त मौत की यारों दवा कुछ भी नहीं ।।४५४।।दाना हकीम

संभल आना नहीं मुश्किल कज़ा के तीर के आगे ।
नहीं तदबीर चल सकती कोई तक़दीर के आगे ।।४५५।।

जो अहसान करके जिताने लगे ।
वोह अपने किये को मिटाने लगे ।।४५६।।

मौत हो सन्मुख खड़ी सिर पर खड़ा हो काल भी ।
सिर तो क्या झुकना, नहीं झुकनेका सिर बाल भी ।।४५७।।

-हकीक़त राय

है दुनियाँ में रिश्ता जिनका, मैं नहीं उन रिश्तेदारों में ।
जो धर्म के साथ मखौल करें मैं नहीं हूँ उन गद्दारों में ।।४५८।।

तूने भेदभाव की उठती दीवारों को गिरा दिया ।
ऊँच नीच का भेद हटाकर दानवता को हिला दिया ।। ५९।।

—भगवान महावीर स्वामी

बन बन के बिगड़ जाते हैं कैसे ।
दिन ऐश की घड़ियों में गुज़र जाते हैं कैसे ॥४६०॥

(सिकन्दर शहनशाह और आत्मावादी का सम्वाद)

तू शहनशाहा है मैं दरका गदा, है रूह एक तकदीरें दो ।
तू तख़्ते नशीन में ख़ाके नशीन, है वतन एक तामीरे[1] दो ।
तू ज़र नशीन में ज़रा ख़ाक, हैं असर एक तासीरे[2] दो ।
तू ज़ाहिर हैं मैं बातन हूँ, है ख़्वाब एक तावीरे[3] दो ।
तू बस्ती में, मैं जंगल में, है मुल्क एक जागीरे दो ।
तू गुले चमन में, मैं ख़ारे बहशत, है नक़ाश एक तसवीरे दो ।
तू फ़िक्र मन्द में दर्द मन्द दिल मयान एक शमशीरे दो ।
तू कलम बन्द मैं ज़बां बन्द, बन्दिश है एक ज़ंजीरे दो ।
तू माले मस्त मैं ख़्याले मस्त, है मरज़ एक तदबीरे दो ।
तू लेह में चूर में ख़ुद मे चूर, है एक तीर नख़्चीरे[4] दो ॥४६१॥

यूसफ़ ने कहा ऐ बारे ख़ुदा, बन्दा तेरा कौन है बन्दे के स्वा ।
हुक्कम हुआ बन्दा हमारा वोह जो ले सके और न ले बदी बदला ॥४६२॥

दिखा न जोशों ख़रोश इतना ज़ोर पर चढ़ कर ।
गये जहान में दरिया बहुत उत्तर चढ़ कर ॥४६३॥

गई गई जान दे रहीं रही ने राख ।
नहीं तो रही रही भी जायेगी गई गई के साथ ॥४६४॥

तेरे दम से ऐ गुरु गुलिस्तां भी शान हैं ।
मुर्दा दिलों में भी फ़ूकी तूने आकर जान ॥४६५॥

---

१ निर्माण २ असर ३ स्वप्न देखना ४ दिल, अनुवान

जिन्दा दिल हैं और तू हिम्मते मरदान हैं।
तेरा क़तरा क़तरा खूँ का कौम पर क़ुर्बान हैं ॥४६६॥

अर्शों उत्तरी कई किताबे नाले उतरा डण्डा।
कई किताबे कुज़ नहीं करदी, जो करदा सो डण्डा ॥४६७॥

भर यौवन में टैंट करी सत गुरु की संगत न कर सक्यां।
दान न दाम, न भगवान भजा झूठ की बात सदा अख्यां।
पर नारी को देख रखी अखियां तिन कारण।
राजन एव पड़ी सिर कूंटत हाथ घिसे मख्यिां ॥४६८॥

राजा ने मंत्री से पूछा मन्त्री ने जवाब दिया :—

होश उठता हैं कबाये गम पहनने के लिये।
जोश उठता है जवाहरलाल बनने के लिये ॥४६९॥

ज़माने में सभी प्रकार के हमने बशर देखे।
गुणी देखे मुनि देखे बहुत से बशर देखे।
दिलावर शूर्मा देखे हैं और शेर बबर देखे।
बहुत बेख़ोफ़ देखे, तुम से कम लेकिन निडर देखे ॥४७०॥

ज़माना बहुत देखा हैं बहुत सा जगत देखा हैं।
मगर तुमसा नहीं परमात्मा का भक्त देखा है ॥४७१॥

ब्रह्मचर्य में वोह बल हैं ब्रह्मचर्य में वोह सदाकत हैं।
ज़माने को वोह पलट दे, ब्रह्मचारी में वोह ताकत हैं ॥४७२॥

न शुभ कर्मों में प्रवृत्ति न प्रभु का जाप करते हैं ।
गृहस्थी नर्कगामी रात दिन ही पाप करते हैं ॥४७३॥

ज़बाँ से आप की ऐसा कोई फरमान हो जाये ।
कि जिससे हम अधम बशरों का कुछ कल्याण हो जाये ॥४७४॥

कोई नाराज़ होगा तो हमारा क्या छीन लेगा ।
कोई प्रसन्न होगा तो हमें वोह क्या बकशीस देगा ॥४७५॥

नक़्शे बातिल मैं नहीं, जिसको मिटाये आसमाँ ।
मैं नहीं मिटने का जब तक है बिनाये आसमाँ ॥४७६॥ –बर्क

दरिया को अपनी मौज की तुगयानियों[1] से काम ।
किश्ती किसी की पार हो या दरमियाँ रहे ॥४७७॥

रहेंगे न मल्लाह ! यह दिन सदा ।
कोई दिन में गंगा उतर जायेगी ॥४७८॥

कुछ पता मंज़िले मक़सूद का पाया हमने ।
जब यह जाना कि हमें ताकतों गुफ़तार नहीं ॥४७९॥

इतनी ही दुश्वार अपने ऐब की पहचान है ।
जिस क़दर करनी मलामत और को अहसान ॥४८०॥

चिउँटियों में इत्तहाद और मक्खियों में इत्तफ़ाक़ ।
आदमी का आदमी दुश्मन खुदा की शान हैं ॥४८१॥

है ताक़ में उकाब[2] तो शहबाज़[3] घात में ।
हमले से यां अजल के नहीं एक दम फराग[4] ॥४८२॥

---

१ लहरों से २ बाज ३ गिद्ध ४ फ़ुर्सत

इक सम्भलते हम नज़र आते नहीं।
वर्ना गिर गिर कर गये लाखों सम्भल ॥४८३॥

कब तक आखिर ठहर सकता है वोह घर।
आ गया बुनियाद में जिसकी खल्ल ॥४८४॥

मेरा रूपों रंग बिगड़ गया मेरा वक़्त मुझसे बिछड़ गया।
जो शजर खिज़ां से उजड़ गया मैं उसी की फसले बाहर हूँ ॥४८५॥

स्त्री का शेर है ऐसा मालूम होता है

हम और रक़ीब दोनों यकजां बहम न होंगे।
वोह होंगे हम न होंगे, हम होंगे वोह न होंगे ॥४८६॥

फतह वा शकस्त नसीबों की है वले ऐ मीर।
मुक़ाबिला तो दिले नातवां ने खूब किया ॥४८७॥

हज़ार दाम से निकला हूँ एक जुम्बिश में।
जिसे गरूर हो आये करे वोह क़ैद मुझे ॥४८८॥

फलक मशशाक[1] है फहम नया जलवा दिखाने में।
ज़मीं को देर क्या गुज़रे हुओं को भूल जाने में ॥४८९॥

सदियों फिलासफी की चुना चुनी रहीं।
मगर खुदा की बात जहां थी वहीं रहीं ॥४९०॥

समय बड़ा बलवान वो ही अर्जुन वो ही अर्जुन के बाण।
भीलां लूटी गोपियां और कृष्ण के निकले प्राण ॥४९१॥

मेरे सिवाय नज़र आये न कोई दोज़ख में।
किसी का जुर्म हो ? मालिक मुझे सज़ा देना ॥४९२॥

---

1 आदत

मुहब्बत ही ना जो समझे वोह ज़ालिम प्यार क्या जाने ।
निकलती दिल के तारों से, वोह झंकार क्या जाने ।
उन्हें तो कत्ल करना और तड़फाना ही आता है ।
गला किसका कटा क्यों कर कटा ? तलवार क्या जाने ।
करों फरियाद सर टकराओं अपनी जान दे डालों ।
तड़फते दिल की हालत हुस्न की दीवार क्या जाने ॥४६३॥
सीरत के हम गुलाम हैं सूरत हुई तो क्या ।
सुर्खों सफेद मिट्टी की मूरत हुई तो क्या ॥४६४॥
जमीं फलक बनी हैं अपने चिराग लेकर ।
कह दो आसमां से अपने दिये बुझा दे ॥४६५॥
दर्दे दिल पासे वफ़ा जज्बए इमां होना ।
आदमियत है यहीं और यही इंसान होना ॥४६६॥
ज़ेरे पायत गर बिदानी हाले मोर ।
हमचों हालो तस्त ज़ेरे पाये पील ॥४६७॥
मूलार्थः-तुम्हारे पाँव के नीचे दबी चिंटी का वोही हाल होता है ।
जो यदि तुम हाथी के पाँव के नीचे दब जाओं तो तुम्हारी कैसी ।
अवस्थान्तर वेदना होती है येह तुम विवेकपूर्वक विचार सकते हों ।
आहिस्ता खराम बल्कि मखराम ।
कि ज़ेर कदमत हज़ार जानास्त ॥४६८॥
मूलार्थः—धीरे धीरे चल बल्कि चले ही मत क्योंकि तेरे पाँवाओं ।
हजारों जाने हैं दयालुता की कितनी ऊँची भावनाएँ हैं ।
अभिप्राय यह कि:— दृष्टिगोचर करके चलों ।
सताये तुझको जो कोई बेवफ़ा बिस्मिल ।
तो मुँह से कुछ न कहना आहा कर लेना ॥४६९॥

हम शहीदे दाने वफ़ा का दीनों इमां और हैं ।
सिजदे करते है हमेशा पांव पर जल्लाद के ॥५००॥

जां मे सितां कि जां हमारा अजीज अस्त ।
हम्मोरी ब पील इक सानस ॥५०१॥

मूलार्थ-किसी की जान मत लो क्योंकि अपनी जान सबको प्यारी है । चींटी और हाथी में एक सी जान है ।

हज़ार गंज कनाअत हजार गंज करम ।
हाजार आता अत शुवह ॥५०२॥ शेख शादी

मूलार्थः—मनुष्य मजहब में ऊँचा हो हजार खजाने रोज़ दान करता हो हजारों रातें केवल प्रभु स्मरण में बिताये और हजारो ऐसे सिजदा करे कि हर एक सिजदा में हजार नामाज पढ़े लेकिन अगर वह किसी को तकलीफ़ देगा तो उसके उपरोक्त काम खुदा को कभी स्वीकार नहीं होंगे ॥

अल्खल्क़ु इयालु अल्लाहि फ़ा दुब्बुल खल्क़ ।
इला अल्लाहि मन हसन इला इयालि ही ॥५०३॥ हदीस

मूलार्थ- सब प्राणी भगवान के कुटुम्बी हैं अतः भगवान के लिए सब प्राणियों के साथ अतिसुन्दर बर्ताव करो जैसा कि अपने कुटुम्बियों के साथ करते हो ॥

फरिश्ते से बेहतर है इन्सान बनना ।
पर इसमें मेहनत है जरूर यादा ॥५०४॥

कहे एक जब सुन ले इन्सान दो।
ख़ुदा ने ज़ुबां एक दी कान दो ॥५०५॥

रिचिवर ख़ुद मपसदी।
विदि मरां मपसद ॥५०६॥ शेख शादी

मूलार्थ—सेवा द्वारा किसी के दिल को जीत लेना सबसे बड़ी विजयोल्लास है।

हज़ार गज़ कनाग्रत हज़ार करम हज़ार आत ग्रत शुबहा॥
हजार वेदा हजार महर न महरदारा।
हज़ार नमाज कबूल ने सागर ख़ातर व्याजारी ॥५०७॥

मूलार्थ—मज़हब मे ऊँचा हो हजार ख़ज़ाने रोज दान करता हो, हजारों राते केवल प्रभु स्मरणार्थ में बिताये और हजारों ऐसे सिजदा करे कि हर एक सिजदा मे हजार नमाज पढ़े लेकिन अगर वह किसी को तकलीफ देगा तो उसके उपरोक्त काम ख़ुदा को कभी भी स्वीकार नहीं होंगे॥

दुनियाँ में गुज़री हुई मुझ से कोई चीज़ नहीं है। लखा सिंह

सिलवटे से जो पिस जाये कशनीज़[1] नहीं है।
मुफलीस हूँ बेशक हूँ हिम्मत रहे आली।
बिलोर से बेहतर है मेरा जाम[2] सफाली ॥५०८॥

बे[4] जरी का ना कर गिला गाफिल।
रख तस्सली के यूँ मुक़द्दर था।
हज़ारों मुमन[3] जहाँ से गुज़रे।
हाथ खाली कफन से बाहर थे ॥५०९॥

१—धनियाँ २—बतंन ३—आदमी ४—बेबस

दिल बिदस्त आवर कि हजि अकबर अस्त ।
किज हजरां कअबा यक दिल बिहतर अस्त ।
कअबा बुनगाहि खलीली आजर अस्त ।
दिल गुजर गाहि जलीली अकबर अस्त ॥५१०॥

मूलार्थ—किसी के मन को जीत लेना यही हज और तीर्थ यात्रा है। क्योंकि हजारों कअबा तीर्थ से एक दिल बेहतर होता है। कअबा तो इब्राहिम खलील अल्लाह (प्रभु मित्रा) जो आजर के पुत्र थे उनका निवास स्थान था किन्तु दिल तो स्वय परमसुन्दर भगवान का या परवदिगार अति कोमल लीला क्षेत्र अन्त:करण हैं ॥

उन्हें यह फ़िक्र हैं हरदम, नई तरजे जफ़ा क्या है।
हमें यह शौक़ हैं देखें, सितम की इन्तहा क्या हैं ॥५११॥

गैर से क्यों खफ़ा रहे चर्ख का क्यों गिला करे। भगत सिंह
सार जहां से अई सही आओ मुकाबला करें ॥५१२॥

कोई दम का मेहमां हूं ऐ अहले महफ़िल।
चिरागे सहर हूं बुझा चाहता हूं ॥५१३॥

मेरी हवा में रहेंगी खयालों की बिजली।
येह मुश्ते खाक है फानी रहे ना रहे ॥५१४॥

अच्छा इजाजत ? खुश रहो अहले वतन ? ।
हम तो सफ़र करते हैं हौसले से रहना ॥५१५॥

अमर-शहीद सरदार भगतसिंह का अन्तम शेर।
मतरंजा कर किसी को कि अमले तो एतक़ाद।
दिल ढाए कर जो कअबा बनाया तो क्या हुआ ॥५१६॥

मूलार्थ - सहानुभूति और अहिंसा की इसी वृत्ति ने बन्धुत्व दया न्याय सहिष्णुता आदि गुणों का विकास न किया और मनुष्य दूसरे प्राणियों से विशिष्ट बन सकने का कारण यही है कि विवेक और अनुष्ठान करने की उत्क्रान्ति मानव के अन्त करण में विद्यमान हैं।

दर्दे दिल के वास्ते पैदा किया इन्सान कों। गालिब
वरना ताअत के लिये कुछ कम न थे कररेब्बियाँ ॥६१७॥

मूलार्थ—प्रेम और सहानुभूति है ज्ञान विज्ञान को बटोर कर वोह कंचन का साँप नहीं बनना चाहता, उसे तो सभी उन्नति में अपनी उन्नति की प्राप्ति करनी है उसका कर्त्तव्य बहुत विशाल और ओजस्वी है।

हज़ारों ख्वाहिशे ऐसी की हर ख्वाहिश पे दम निकले।
बहुत निकले मेरे अरमान लेकिन फिर भी कम निकले ॥५१८॥

जिहाद उसको नहीं कहते कि होवे खून इन्सां का।
करे जो कत्ल अपने नफ़ से काफ़िर को वोह गाज़ि[1] हैं ॥५१९॥

फ़कीरों की निगाहओं में अजब तसीर होती है।
निगाहएँ कर्म से देखे तो खाक भी अक्सीर होती हैं ॥५२०॥

सामाया हैं जब से तू नजरों मे मेरी।
जिधर देखता हूँ उधर तू ही तू है ॥५२१॥
गुलशन में सुबाह को जुस्त जू तेरी हैं।
बुलबुल की ज़बाँ पर गुफ़्त गूं तेरी है ॥५२२॥
हर रंग में जलवा है तेरी ही कुदरत का।
जिस फूल को सूंघता हूँ बू तेरी हैं ॥५२३॥–दबीर

१–जीत कर आना २–अख़्तर

क्या देखते हो, खीच लो फोटो खड़े खड़े ।
हमने भी यार काम किये हैं बड़े-बड़े ॥५२४॥

खंजर चले किसी पे तड़फते हैं हम अमीर ।
सारे जहां का दर्द हमारे जिगर में है ॥५२५॥

दर्दे दिल के वास्ते पैदा किया इन्सान को ।
आदमी को भी मय्यसर नही इन्सां होना ॥५२६॥ -ग़ालिब

जानवर आदमी फरिश्ता खुदा ।
आदमी की हैं सैकडों किस्मे ॥५२७॥ -हाली

वोह कौन सा उकदा है जो वा हो नही सकता ।
हिम्मत करें इन्सान, तो क्या हो नहीं सकता ॥५२८॥

मेहजद में अल्लाह खडा और जगह क्या खाली पड़ा ।
जिधर देखो उधर खुदा नामाज़ की दरकार नही बाबा ॥५२९॥
तीस दिन तो रोजों के और दिन क्या चोरों के ।
एक जनार्दन का बन्दा जमीन आसमां भरा है खुदा ॥५३०॥

मरने की कीमत जिन्होंने उस दिन नहीं विगाड़ी थी ।
उस दिन इन्सानों ने वक्षों के रूख छाती तानी थी ॥५३१॥

नर थे नारियां भी थी रक्त दान था होली थी ।
यों शक्ल सार्थक समर्थ हमने तेरी जय बोली थी ॥५३२॥
बिखरे केश की बिखरे वैभव क्या अलमस्ते जवानी थी ।
रक्त रक्त पर उत्तर रही थी, ऐसी अमर कहानी थी ॥५३३॥

सेठ जी को फिक्र थी इक इक के दस दस कीजिये ॥
मौत आ पहुँची कि हज़रत जान वापस कीजिये ॥५३४॥
अकबर

न देखा वोह कहीं जलवा जो देखा खानाए दिल में । ज़फर
बहुत मस्जिद में सर मारा बहुत सा ढूंढ़ा बुत खाना ॥५३७॥

जिसको न निज गौरव तथा निज देश का अभिमान है ।
वोह नर नही नर पशु निरा हैं और मृतक समान हैं ॥५३८॥

खुश रहना खुश रखना जीना और जिलाना ।
नाथ ? मेरे जीवन का बस एक यही हो गाना ॥५३९॥

संसार क़यामत के दहाने पे खड़ा हैं ।
रावण तो हज़ारों हैं मगर राम कहाँ हैं ॥५४०॥

मत बिजली का लम्प जला रे ।
आंखें फूट जायेगी प्यारे ॥५४१॥

हर इक मकाँ जला फिर दिया दिवाली का ।
हर एक तरफ को हुआ उजाला दिवाली का ॥५४२॥

सभी केजी को समां भा गया दिवाली का ।
अजब बहार का है दिन बना दिवाली का ॥५४३॥

रात यह कैसी सुहानी आ गयी ।
जर्रे जर्रे में जवानी आ गयी ॥५४४॥

भूलने वाली नहीं हैं इस की याद ।
कह रहे हैं सब दिवाली जिन्दाबाद ॥५४५॥

कुछ ऐसा लग रहा है जैसे शमा की लो से ।
लिखा हो रोशनी ने अपना कोई फसाना ॥५४६॥

या रात जग गई हो उम्मीद ख्वाब लेकर ।
या लूट गया है शायद कारुन का खजाना ॥५४७॥

कहने को यूँ जहाँ में हज़ारों हैं यार ।
मुश्किल के वक्त एक है परवरदिगार दोस्त ॥५३५॥

ऐ अमीर, बन्दों से काम कब निकला ।
माँगना जो हैं ख़ुदा से माँग ॥५३६॥
गान्धी की भी दुआएँ या रब असर दिखाएँ ।
हो राम राज फिर से पुर लुत्फ़दिन वोह आएँ ॥५४८॥
घी के चिराग घर घर अहले वतन जलाएँ ।
मस्ती में आ के इशरत[1], इशरत के गीत गाएँ ॥५४९॥

न हो जिसमें अदब और जो किताबों से लदा फिरता ।
ज़फ़र उस आदमी को हम तसव्वुर बैल करते हैं ॥५५०॥ ज़फ़र
हो फरिश्ता भी तो इन्साँ ।
दर्द थोड़ा बहुत न हो जिन मे ॥५५१॥ हाली

फरिश्ते से बेहतर हैं इन्सान बनना ।
मगर इसमें पड़ती हैं मेहनत जियादा ॥५५२॥ हाली
इश्क़ के रुतबे के आगे आसमाँ भी पस्त हैं ।
सर झुकाया हैं फरिश्तों ने बशर के सामने ॥५५३॥ नसीक

फ़ना कैसी बक़ा[2] कैसी जब उसके आशना ठहरे ।
कभी इस घर में आ निकले, कभी उस घर में आ ठहरे ॥५५४॥
अमीर

१-आराम २-हमेशा रहने वाली ।

पराई आग में पड़ कर कभी दिल को जलाया हैं।
किसी बेकस की खातिर जान पर सदमा उठाया हैं।
कभी आसूं बहाएँ किसी की बदनसीबी पर।
कभी दिल तेरा भर आया है मुफलीस की गरीबी पर।
शरीके दर्दे दिल होकर किसी का दुःख बँटाया है।
मुसीबत में किसी आफत जदा के काम आया हैं ॥५५५॥

कुछ नहीं बाकी रही अपने पराये की तह्मीज।
इस मराएँ बेखुदी में कोई बेगाना नही ॥५५६॥

लगा कर पेड़ फूलों के किये तकसीम गुलशन में।
जमाया चान्द सूरज को सजाये क्या सितारे है ॥५५७॥

न सुनों गर बुरा कहे कोई न कहे गर बुरा करे कोई।
रोक लो गर गलत चले कोई, वख्श दो गर खाता कर कोई ॥५५८॥

बनी के चेहरे पर लाखों निसार होते हैं।
बनी जब बिगड़ती हैं तो दुश्मन हजार होते हैं ॥५५९॥

मत सता गरीब को गरीब रो देगा।
मालिक ने उसे सुन लिया तो जड़ से खों देगा ॥५६०॥

ढूढ़ते क्या हो गरीबों में निशानें जिन्दगानी।
लो सुनाते हैं हम अपनी दास्ताने जिन्दगानी ॥५६१॥

येह दिल हैं तेरा मक़सन तू बता कहाँ रहे।
येह तो आप ही का घर है जरा देखकर जलाना ॥५६२॥

न समझे उमर गुजारी बुते खुंख्तर को समझाते।
पीगल कर मोम हो जाता, अगर पत्थर को समझाते ॥५६३॥

शेर हो कर मत फ़िरो जगत में सवा सेर मिल जायगा कभी।
जो करता है बदी उसका सिर नीचा हो जायगा कभी ॥५६४॥

हज़ारों वर्ष में ऐसा मसीहा एक आया था। महावीर स्वामी
कि जिसने आदमी को आदमी बनाना सिखाया था ॥५६५॥

न ख़ुदा ही मिला न विसाले सनम।
न इधर के रहे न उधर के रहें ॥५६६॥

मज़ाहिब क्या? मुख़्तलिफ़ राहे हैं एक मंज़िल की।
और मंज़िल क्या हैं जहाँ सब कुछ होता हैं राहे नहीं होती ॥५६७॥

ज़िन्दगी तूफ़ान है अन्धी हैं।
जब गुजर जाती हैं ।
तब पता चलता है ।
कितनी रफ़्तार थी ।
तेज़ कितनी दौड़ गई ।
शेष क्या छोड़ गई ।
पीठ में दर्द हो घुटनों में पीड़ा श्वेत केश छोड़ गई ॥५६८॥

जो ज़ुल्म इन्सान करता है वोह हैवाँ कर नहीं सकता।
वोह कौन ऐसी जफ़ा हैं जो इन्सां कर नहीं सकता ॥५६९॥

दामे मादर कीजिये दामे कीजिये काम।
महिला का निरादर बुरा व्यवहार भाई के प्रति।

पहली बार आया था चूल्हा फ़ूकन मेरा नाम ॥५७०॥

ऐ इश्क़ अक्सर कौमों को खाके छोड़ा।
जिस घर से सर उठाया उसको बैठा के छोड़ा ॥ ७१॥

इश्क़ से जीवन बेक़रार हुआ बहारों से ये चमन हुआ।
सुन्दरताओं से जवान हुआ दो आंख की गलियों में गमन हुआ ॥५७२॥

ब्राह्मण और शेख में झगड़े यही है रात दिन के।
तेरी किताब कुछ नहीं तेरी किताब कुछ नहीं ॥५७३॥

जब गाँठ में पैसा होता जब पेट में रोटी होती है।
तो हर एक जर्रा हीरा है तो हर एक शबनम मोती है ॥५७४॥

जब पड़े पेट में रोटी।
तो फड़के बोटी बोटी ॥५७५॥

किस्मत की कुंजी तेरे पास थी।
अगर पास कर देता तो क्या बात थी ॥५७६॥

किताबों की कुंजी तेरे पास थी।
अगर खूब रट लेता तो क्या बात थी ॥५७७॥

गलतियाँ की नही जाती लतियाँ हो ही जाती हैं।
खुदा ने गलतियाँ बना के बड़ी भूल की है ॥५७८॥

इमान ही बदल जाता है लगे जो भूख तो डगमगाता है।
भरे जो पेट इन्सान का तो संसार जगमगाता है ॥५७९॥

मत जुल्म करो मत जुल्म सहो इसका ही नाम अहिंसा है।
बुज़दिल हैं जो वे ज़ान हैं जो उनसे बदनाम है अहिंसा ॥५८०॥

मेरी आँखों में तूफाने आतिश की रवानी है।
ज़बाँ में बारिशे रहमों करम शीरीं बयानी है ॥५८१॥

मेरी इक आँख में शोले है इक आँख में पानी है।
मुझे कुदरत ने बख़्शे हैं येह दोनों राज़े सुलतानी है ॥५८२॥

लुटा दो ज़र ग़रीबों पर कि वोह हक़दार है इसके।
उन्हीं के ज़रिये तुम पर येह ज़र के मिंही बरसते हैं ॥५८३॥

जितनी जितनी लोग जताते अपनी यारी मुँह से ।
उतनी उनकी खातिरदारी हम भी करते मुँह से ॥५८४॥

मुँह के मीट्ठे दिल के कड़वे अहले दुनियाँ में देख लिया ।
झूठी झूठी करते खु़शामद आके हमारी मुँह से ॥५८५॥

दिल में भरे हैं उनके लाखों बुगजों अदावत कीनो-निफाक ।
करते ज़ाहिर अपनी उल्फ़त और हम ख़्वारी मुँह से ॥५८६॥

कहते है कुछ करते है कुछ डरते रहिये इन से "जफ़र" ।
दुश्मने जाँ हैं दिल करते ज़ाहिरदारी मुँह से ॥५८७॥

ऐबों हुनर न पूच्छों तुम आदमी में क्या है ।
तुम मैं भी कुछ न कुछ है प्यारे हमीं में क्या है ॥५८८॥

जब तलक दम है रहेंगे यूँ ही गम साथ के साथ ।
देखना जायेंगे गम और येह दम साथ के साथ ॥५८९॥

ज़फ़र क्या पूच्छता है राह मुझसे उसके मिलने की ।
इरादा हो अगर तेरा तो हर जानिब से रस्ता है ॥५९०॥

न बद ख़्वाहों से कुछ होगा न होगा ख़ैर ख़्वाहों से ।
जो कुछ तक़दीर की अपनी हैं गर्दिश होने वाली अपनी ॥५९१॥

ताक़त नहीं फिरने की आदत लिये फिरती हैं ।
या सिर्फ मुझे मेरी हिम्मत लिये फिरती हैं ॥ ९२॥

हमीं में रंज भी हैं और राहत भी हमीं में हैं ।
जहन्नुम भी हमीं में हैं और जन्नत भी हमीं में हैं ॥५९३॥

कहीं मशहूर आकिल कहीं बदमस्त लालौक़ल ।
की हुशियारी भी हम में और ग़फ़लत भी हमीं में है ॥५९४॥

नहीं गैर अज़ अलाहूीं खैरवां तो और कुछ हरगिज़ ।
ज़फर शर भी हमीं में है शरारत भी हमीं में हैं ॥५९५॥

खाक का पुतला है इन्सां ऐ "ज़फर" उसके लिए ।
सरकशी अच्छी नहीं खाक़सारी चाहिए ॥५९६॥

हिसाबे उमर का बोह् अजब तरीका हैं ।
उमर बढ़ती है मगर वाक़ये में घटती है ॥५९७॥

मेरी ज़िन्दगी एक मिस्ले सफ़र है ।
जो मंज़िल पे पहुँचा तो मंज़िल बढ़ा दी ॥५९८॥

तिफ़्ली गई अलमते पीरी आयी हुई को ।
हम ताकते ही रह गये अहदे शबाब को ॥५९ ॥

सुबह दारा मुकट बन्ध शाही तख़्त पे था ।
शाम को ना दारा था ना मुकट था ना तख्त था ॥६००॥

सिर्फ उस वक़्त ख़ाक़ में ख़ून से लथ पथ था ।
चार टुकड़ों में उस समय विभक्त था ॥६०१॥

तड़फता है बशर जब सांस ख़ामोश होता है ।
भकड़ता है चिराग सुबह जब खामोश होता है ॥६०२

न मुलाज़िम साथ आयेंगे न चेले जायेंगे ।
न शाहें जायेंगे न शहा जायेंगे और अकेले ही जायेंगे ॥६०३॥

तू यां से जाके फिर नहीं रहने का हुक्मरां ।
है तेरी चन्द रोज हुकूमत यहीं तलक ॥६०४॥

क्या हुआ गर मिट गये अपने धर्म के वास्ते ।
बुलबुले कुर्बान होती हैं अपने चमन के वास्ते ॥६०५॥

खूब ढूंढ़ा देखा कुछ नज़र आया नहीं ।
आज तक अपने में हम ने आप को पाया नहीं ॥६०६॥

दुनियाँ में बला से अगर आराम न पाया ।
हमने यहीं पाया कि बुरा नाम ना पाया ॥६०७॥

हम न है माल के मोहताज, नज़र के मोहताज ।
है फ़क़त तेरी इनायत की नज़र के मोहताज ॥६०८॥

जिन गलियन में पहले देखी लोगन की रंग रेलिया थी ।
फिर देखा जो उन लोगन की सूनी पड़ी वोह गलियाँ थी ॥६०९॥

तदवीर को सौ तरह की तदवीर से बदलूँ ।
तक़दीर को किस तरह से तक़दीर से बदलूँ ॥६१०॥

अंग्रेज़ राज सुख साज़ सजे सब भारी ।
पर धन विदेश चला जाता है यही अति ख़्वारी ॥६११॥

ज़िन्दगानी पाकर हुआ सारा ज़माना बेख़बर ।
मौत भी आएगी इक दिन इस का किस को होश था ॥६१२॥

ज़िन्दगानी है अपने कब्ज़े में न अपने वस मैं मौत ।
आदमी मजबूर हैं और किस क़दर मजबूर हैं ॥६१३॥

जब दिल में दर्द होगा निकलेंगे आप आँसू ।
दामन में आग रखकर कैसे धूआँ छिपाएँ ॥६१४॥

क़ातिल का इरादा है बिस्मिल को मिटा देंगे ।
बिस्मिल का तक़ाज़ा हैं क़ातिल को दुआएँ देंगे ॥६१५॥

हमारी आँखों ने भीं तमाशा अजब, अजब इन्तख़ाब देखा ।
बुराई देखी भलाई देखी अज़ाब देखा सवाब देखा ॥६१६॥

अब न दिन अपना रहा और न रही रात अपनी ।
जब पड़ी ग़ैरों के हाथों में हर एक बात अपनी ॥६१७॥

लोग कहते हैं कि ज़माने में बदला है हम को ।
मर्द तो वोह हैं जो जमाने को बदल देता हैं ॥६१८॥

इन्सान मुसीबत में हिम्मत न अगर हारे ।
आसां से वोह आसां हैं मुश्किल से जो मुश्किल हैं ॥६१९॥

यक़ीं पैदा कर ऐ नादां यक़ी से हाथ आती हैं ।
वोह दरवेशी की जिस के सामने झुकती है मग़रूरी[1] ॥६२०॥

जिसने दिल खोया उसी को कुछ मिला ।
फ़ायदा देखा इसी नुकसान में ॥६२१॥

न दावे की जरूरत है न कोई रोक सकता हैं ।
किसी में फितरती जौहर जो हो वोह ख़ुद चमकता है ॥६२२॥

इश्क़ है एतबार के काबिल ।
हुस्न का एतबार कौन करे ॥६२३॥

हुस्न खुद ही इश्क़ का पहगाम हैं ।
आँख मेरी मुफ़्त में बदनाम हैं ॥६२४॥

तेरा हुस्न बेशक बड़ी चीज हैं ।
मेरा इश्क भी तो कोई चीज है ॥६२५॥

भली चीज हैं यां बुरी चीज हैं ।
मुहब्बत भी आखिर कोई चीज़ हैं ॥६२६॥

सितम बेगुनाहों पे आसां न समझे ।
तड़प जाइएँगा जो तड़पाएँगा ॥६२७॥

---

१ बादशाही

रोज़ नज़रों से गुज़रते हैं हज़ारों चेहरे ।
दिल के सामने मगर एक ही चेहरा ठहरा ॥६२८॥

होता हैं राजेदिलका भी पर्दा इसी से फाश ।
आँखें ज़ुबाँ नही हैं मगर बेज़ुबाँ नहीं ॥६२९॥

दर्द इश्क़ का दुनियाँ को बताया नही जाता ।
येह गीत हर एक साज़ पर गाया नहीं जाता ॥६३०॥

मुहब्बत की नहीं जाती मुहब्बत हो ही जाती ।
वोह शोला खुद भड़कता हैं वोह भड़काया नहीं जाता ॥६३१॥

न कुछ हम हँस के ही सीखें है न कुछ हम रोके सीखे है ।
जो कुछ थोड़ा सा सीखें है किसी के होके ही सीखे हैं ॥६३२॥

नज़रे बदल गई तो नज़ारे बदल गए ।
जब सुबह हो गई तो सितारे बदल गए ॥६३३॥

मुझे इसका गम नहीं हैं कि बदल गया ज़माना ।
मेरी जिन्दगानी है तुमसे कहीं तुम बदल न जाना ॥६३४॥

वक्त़ दो गुज़रे है मुश्किल हमको सारी उमर में ।
एक तेरे आने के पहले एक तेरे जाने के बाद ॥६३५॥

अजब निगाहों से साक़ी ने बन्दोवस्त किया ।
शराब बाद को दी पहले मबको मस्त किया ॥६३६॥

सीने की चोट दिल की पहलू की हाय चोट ।
खाएँ किधर की चोट बचाएँ किधर की चोट ॥६३७॥

असर लुभाने का प्यारे तेरे ब्यान में हैं ।
किसी की आँख में जादू तेरी ज़ुबान में है ॥६३८॥

खुदपरस्ती बुतपरस्ती से नहीं कम ऐ ज़फर ।
जिसने छोड़ी खु.दपरस्ती उसने बुतपरस्ती छोड़ दी ॥६३६॥

ज़फ़र आँखें कहे देती है तेरी रंजिश क्या छुपाता है ।
मर्ऐ उल्फ़त की कफ़ीयत छुपाये से नहीं छुपती ॥६४०॥

ज़फ़र ऐसी नहीं है कोई महफ़िल इस ज़माने में ।
जहाँ कुछ हर्फ़ गीरी और सुखन चीनी[1] नहीं होती ॥६४१॥

हम खु.द है खु.दा वोह नहीं हैं हम से जु.दा ।
जो जाने जु.दा वोह न पावे खु.दा ॥६४२॥

जो हैं रूप तेरा वोही है रूप मेरा ।
परदा पड़ा हैं बीच में, अगर यकी आये तो उड़ा दूँ ॥६४३॥

दुनियाँ के बज़ार मे चल कर आया एक ।
मिले बहुत पर अन्त मे रहा एक का एक ॥६४४॥

आदम को खु.दा कहूँ या खुद को खु.दा कहूँ ।
आदम खु.दा दोनों एक है किस को जु.दा की शकल कहूँ ॥६४५॥

आदम को खु.दा मत कहों आदम खु.दा नहीं ।
लेकिन खु.दा के नूर से आदम जु.दा नहीं ॥६४६॥

जो उस के भक्त है उनको वोह हर सूरत में मिलता हैं ।
है जैसा कि यकी उसको उसी सूरत में मिलता हैं ॥६४७॥

जिन्दगी हैं जब तलक फ़ूर्सत नहीं यहाँ से ।
दो घड़ी ऐसी निकालों मुहब्बत करो खु.दा से ॥६४८॥

---

१ ईर्षा

मन्दिर तोड़ों मस्जिद तोड़ों इससे कुछ नहीं होता हैं।
पर दिल को तो यार किसी का मत तोड़ों येह तो घर है ख़ास
ख़ुदा का ॥६४९॥

उस अकल पर पत्थर पड जावें उस धन पर बिजली टूट पड़े।
वोह घर ही क्या हो सकता हैं जहाँ बन्धु-बन्धु में फूट पड़े ॥६५०॥

येह जन्म नर का मिला है कुछ काम करने के लिए।
येह न समझों कि मिला हैं पेट भरने के लिये ॥६५१॥

वोह फूल सिर चढ़ा है जो चमन से निकल गया।
इन्सान वोह बन गया जो वतन से निकल गया ॥६५२॥

यों तो सभी मरण के राही, एक रोज़ मर जाते हैं।
लेकिन धन्य उन्हीं को जो मरकर भी नाम अमर कर जाते है ।६५३।

नही वोह जिन्दगी जिसको जहाँ नफ़रत से ठुकराये।
नहीं वोह जिन्दगी जो मौत के क़दमो में गिर जाये ॥६५४॥

वोह है जिंदगी जो नाम पाती है भलाई में।
ख़ुदी को छोड़कर जो पहुँच जाती हैं ख़ुदायी में ॥६५५॥

फकीरों की निगाहों में अजब तासीर होती है।
निगाहे मेहर से देखें तो ख़ाक अक्सीर होती है ॥६५६॥

ज़ुदाई सिखलावें वोह मजहब भला किस काम का।
वोह आडम्बर है निरा मजहब है ख़ाली नाम का ॥६५७॥

मत काट गला औरों का तेरा भी गला कट जावेंगा।
औरों की बस्ती को बसा तेरा भी महल बस जावेंगा ॥६५८॥

आ गया यम का परवाना मौत ने मारा एक चाबक नीचे
घोड़े से आना ।
मानसिंह का मौत से जंग मचना रूह को फिर शरीर से
यकदम निकल जाना ॥६५६॥

मोहब्बत न रही भाई की भाई को ।
पड़ा खाट पर भाई नहीं जाता दवाई को ॥६६०॥

दुबारा जगत में ऐसी औरतें न होगी ।
हजारों औरते होगी मगर सीता नहीं होगी ॥६६१॥

मिला है मान हिन्दूस्तान को पति व्रत की शान पर ।
कायम है चान्द और सूरज इन्हीं सतियों की आन पर ॥६६२॥

सती की है ज्योति सती है कीमती मोती ।
सती है सत्य को बोती सती है पाप को खोती ॥६६३॥

ग़रीबों को मत सताओ येह हैं दुख के मारे ।
इमदाद करों इनकी येह भी भाई है तुम्हारे ॥६६४॥

कौन कहता हैं पत्थर मे खुदा रखा हैं ।
दिल बहलाने को एक बुत बना रखा है ॥६६५॥

पूरे है मर्द वोह हर हाल में खुश हैं ।
रोटी न मिले दाल तो है वोह दाल में खुश हैं ॥६६६॥

इन्सान रूकता नहीं दुनियाँ में इन्सान हमेशा बढ़ता हैं ।
युग की हर मजिल पर वोह रोज़ इमारत चिन्ता है ॥६६७॥

मानव हो कर मानवता से तुमने कितना प्यार किया ।
इस जीवन में तुमने कितना औरों का उपकार किया ॥६६८॥

मुबारिक है जो दिल दूसरों का दर्द रखते है ।
आखों में आंसू दिल में आहाएँ सर्द रखते है ।।६६९।।

कांपते थे जिनके फूको से ज़मीं और आसमां ।
दब चूके है खाक़ में अब हां हूं कुछ भी नहीं ।।६७०।।

जो हिम्मत है उसका रहम्मते हक़ साथ देती हैं ।
कदम खुद आगे बढ़ा के मजिले मकसूद लेती है ।।६७१।।

दो दिन की शान हर कोई दिखला के मर गया ।
जीता रहा न कोई हर एक आके मर गया ।।६७२।।

कल तो कहते थे कि विस्तर से उठा जाता नहीं ।
आज दुनियाँ से चले जाने की ताक़त आ गई ।।६७३।।

कुछ अपनी मुसीबत पर ऐ दिल निगाह कर ।
हर हालत में मालिक़ का शुक्रिया अदा कर ।।६७४।।

अगर पाक़ बनना है तो रूहानियत को जगता जा ।
छोड़ दुनियाँ की तम्मन्ना हवसाओं को खाक़ बनाता जा ।।६७५।।

खुदा की कर बन्दगी तू खुदा बन जायेगा ।
नही तो अपना आशना खोकर दोज़ख़ में दुःख पायेगा ।।६७६।।

तिफ़ल[1] में बू आये क्या शिक्षा तो है सरकार का ।
और दूध तो डब्बे का है फिर अक़्ल है माँ बाप की ।।६७७।।

उपदेश वर्षा की तरह बह के निकल गया ।
रस्सी सारी जल गई पर बल रह गया ।।६७८।।

नहीं था मालूम कि ज़ालिम इस तरह मतभेद करते हैं ।
कि जिस पत्तल में खाते हैं उसी में छेद करते हैं ।।६७९।।

---

१ जीवत के गुण

दुनियाँ की सरे राह में काँटे हजार है ।
इस को बचा के जो चले वोही होशियार हैं ॥६८०॥

किसी पर क्या गुज़रती हैं कोई अनजान क्या जाने ।
किसी की जान जाती कोई बेदर्द क्या जाने ॥६८१॥

कह रहा हैं आसमाँ सब समय का फेर है ।
पाप का घड़ा भर चुका फूटने की देर है ॥६८२॥

दु:ख में धर्म वीर की इज्ज़त कभी घटती नही ।
कूट डालों सोने को कीमत कभी घटती नहीं ॥६८३॥

मुबारिक है बशर को जो त्याग का जीवन रखते है ।
सदा अमन चैन में रहते, जो योवन को अक्ल में रखते है ॥६८४॥

अपनी हस्ती को मिटाकर सूरमा बन जायेगा तू ।
अहले आलम की निगाहों में समा जायेगा तू ॥६८५॥

कल जो रखते थे फख्कर के साथ ताज सर पे ।
आज वोह हो रहे हैं रोटी के मोहताज ॥६८६॥

ज़ोक कहता हैं बदलता है ज़माना अक्सर ।
मर्द वोह हैं जो ज़माने को बदल देते हैं ॥६८७॥

बजते थे जिनके डंके ज़मीं पर वोह किधर गये ।
अग्नी मे भस्म हो गये और वोह कबरों में भर गये ॥६८८॥

जो जो थे पृथ्वीराज उन्हे पृथ्वी खा गई ।
कबरों में वागवाँ गये और घास आ गई ॥६८९॥

जिन दाँतों से हँसे थे हमेशा खिल खिलाकर ।
अब दर्द से है वोही रूलाते है हिलमिला कर ॥६९०॥

जब आये थे रोते हुए आप आये थे ।
अब जायेंगे तो औरों को रूला के जावोंगे ॥६६१॥

सुरखरू होता हैं इन्सां आफते आने के बाद ।
रग लाती हिना पत्थर पर घिस जाने के बाद ॥६६२॥

क्या तवगर क्या गनी[1] क्या अमीर क्या बालुका[2] ।
सबके दिल में फ़िक्र है दिन रात आटे दाल का ॥६६३॥

जितने सुख़न हैं सब मे ये ही सुखन दुरूस्त है
अल्लाह आबरू से रखे और तन्दुरूस्त ॥६६४॥

दु:ख पा के मर गया कोई सुख पा के मर गया ।
जीता रहा न कोई हर एक आ के मर गया ॥६६५॥

पड़े भटकते हैं लाखों पण्ड़ित हज़ारों मुल्लां करोड़ों सियाने ।
जो ख़ूब देखा तो यार आख़िर ख़ुदा की बात ख़ुदा ही जाने ॥६६६॥

न इतना हलावां बन कि चटकर जाये भूखें ।
न इतना कड़वा बन कि जो चखें सो थूके ॥६६७॥

क्या हँसी आती है मुझको हज़रते इन्सान पर ।
बदफैल तो ख़ुद करे लानत करे शतान पर ॥६६८॥

जा़न तो येह जायेगी, रह जायेगी मिट्टी पड़ी ।
सदा हरी रहती नहीं यारों फूलों की छडी ॥६६९॥

किस्मत की ख़ूबी देखिये दिल बुरे आने लगे ।
जिनकी थी सेज़ फूलन की वो ठोकरे खाने लगे ॥७००॥

१—मालदार २ शिष्य

करना है सोकर चलो दुनियाँ में दो दिन का नाम है ।
पीछे से कुछ बनता नही जीते ही जी का काम हैं ।।७०१।।

मैं गया था मक्का जब दिल नहीं था पक्का ।
अब दिल हुआ पक्का तो जहाँ देखूं वोही मक्का ही मक्का ।।७०२।।

बुरे दिनों में न भाई और जाया काम आता हैं ।
फक़्त अपना कामाया और बचाया काम आता हैं ।।७०३।।

सभी हँसते हुए मिलते हैं जब तक चार पैसे है ।
न पूच्छेंगा गरीबी में कोई भी आप कैसे हैं ।७०४।।

मजा भी आता हैं दुनियाँ से दिल लगाने मे ।
सजा भी मिलती है दुनियाँ से दिल लगाने में ।।७०५।।

क्या ताब रखती है उस तीर के आगे ।
तदवीर के पर जल गये तकदीर के आगे ।।७०६।।

कम खाना और कम बोलना अकलमंदी है ।
बहुत खाना और बहुत बोलना बेवकूफी हैं ।।७०७।।

कम खाना लज्जतका यादे खाना फज्जत का ।
कम बोलना लज्जतका यादे बोलना फज्जतका ।।७०८।।

कुछ काम कीजिये या कुछ नाम कीजिये ।
इल्मों हुनर से नाम का अंजाम कीजिये ।।७०९।।

परवरदिगार का नाम किस्मत के लिये लीजिये ।
नहीं तो बदकिस्मती से सारी उमर झूजिये ।
बदकाम का फल जीवन में लीजिये ।
परवरदिगार का ध्यान सुख पाने लिये कीजिये ।।७१०।।

गर कुछ नहीं तो हज़रते अकबर का कौल है ।
मुर्दों के साथ कबर में आराम कीजिये ॥७११॥

हमारा काम है हर एक को छोटे से बड़ा करना ।
अमीरों की कमाई से गरीबों का भला करना ॥७१२॥

लानत है उसकी हश्मतों जलाल पर ।
जिसको तरस न आये गरीबों के हाल पर ॥७१३॥

मोहब्बत रगदे जाती हैं दिल जब दिल से मिलता है ।
मगर दिक्कत तो यह है दिल बड़ी मुश्किल से मिलता है ॥७१४॥

शरीफ़ इन्सान वोह है जो शरीफ़ी का चलन समझे ।
पराई माँ बहीनो को खास अपनी माँ बहीन समझे ॥७१५॥

भलाई की अगर हो तो मौत तो जीने से बेहतर हैं ।
बुराई का तो जीना मौत के सदमे से बेहतर हैं ॥७१६॥

करोड़ों मुफ़लिस हो गये करोड़ों तवंगर हो गये ।
खाक में जब मिल गये दोनों बराबर हो गयें ॥७१७॥

छोटी न समझों कभी न समझों चार चीजों को ।
कर्ज़ को मर्ज़ को और आग को अपने रकीबो[1] को ॥७१८॥

सच है तपो बल से भूमि आकाश हिलते है ।
मगर भक्ति के बल से तो सदा भगवान परवरदिगार मिलते है ॥७५९॥

पिताजी आप रूठोगे सिर्फ आराम बिगड़ेगा ।
मगर परवरदिगार रूठा तो सारा काम बिगड़ेगा ॥७२०।

---

१ शत्रुओं को

सूरज पश्चिम से उदय हो हिमालय सारा गल जाये ।
मगर मुमकिन नहीं कि निश्चय मेरा बदल जाये ।।७२१।।

तमाशा देखना तुम मातृभूमि के सपूतों का ।
समय पर जान देना तो धर्म हैं राजपूतों का ।।७२२।।

खुदा रहम करता नही उस बशर पर ।
न हो दर्द की चोट जिस जिगर पर ।।७२३।।

दर्द कांटे का तुमसे सहा जाता नहीं ।
बेकसों पर अ बशर फिर क्या रहम लाता नही ।।७२४।।

साथ में लाया न कुछ साथ कुछ भी न लें जायेगा ।
संसार की सब वस्तुयें संसार को दे जायेगा ।।७२५।।

याद रखो जिन्दगानी हर वक्त मिलने की नहीं ।
येह चमन फुलवारी फिर हर वक्त खिलने की नही ।।७२६।।

बुरा मांगे जो औरों का तो खुद उसकी बदी होगी ।
जो खोदेगा गढा उसके लिये खाई खुदी होगी ।।७२७।।

हजारो ऐश के समान मुल्की और मालिक थे ।
सिकन्दर जब गया आलम से दोनों हाथ खाली थे ।।७२८।।

मरते दम तक भी रखी हैं राजपूती शान को ।
जल मरी जीवित चिता में पर न छोड़ा आन को ।।७२९।।

नाम ले भगवान का खेल जाओं जान पर ।
जान देना धर्म हैं कौम और इमान पर ।।७३०।।

क्या तकल्लुफ़ तकल्लुफ करता हैं जिन्दगी भर में।
अगर तू बिस्मल बिस्मल करे तो जन्नत तेरे हाथ में है ॥७३१॥

कुर्सी के गुलाम, कुर्सी छोड़ न सके।
बनना था वज़ीरे आजम, मेम के गुलाम हो बैठे ॥७३२॥

कालेज से निकली बीवी ने शौहर से
अपने कालिज के दिनों की
लो छक छक कर बात की
लेकिन यह न बतलाया की
कहाँ रखी हैं रोटी रात की ॥७३३॥ अकबर

बुजदिल और कायर छूपा करते है परदों में।
उठा सकता हैं क्या नामर्द वोह तलवार मर्दों मे। ७३४॥

जो कुछ किया है पाप और झूठ नें।
भारत की शान खोई आपस की फूट ने ॥७३५॥

दरख़्त जो फलता नहीं तो फल कभी गिरता नही।
जन्म जो धरता नहीं तो वे भी कभी मरता नहीं ॥७३६॥

रूतबाँ वहाँ पे शाह गदा सब का एक है।
वदे है सब खुदा के खुदा सब का एक है ॥७३७॥

वोही इन्सान जो हैं इन्सान पर रहम करता हैं।
कज़ा के हाथ से कतिल को अपने दिल से बख़शती है ॥७३८॥

मेरी नज़रों में जीना या मरना बराबर है।
दिया हैं तुमको दिल तो जान भी निछावर है ॥७३९॥

न रूस्तम रहा ज़मी पे न वोह राम रहा।
मर्दों का आसमां में नाम रहा ॥७४०॥

जिन्दा तो हमेशा ही बन्दे रहते हैं घर पर।
मुर्दों को भी ले जाते हैं जकड़ कर ॥७४१॥

न शाहों के तख़्तों ताज रहें।
न किसी के हमेशा राज रहे ॥७४२॥

कौन ठहरा हैं सराये फ़ानी में।
कल चले जायेंगे अपनी राजधानी में ॥७४३॥

छूरी का तीर का तलवार का तो घाव भरा।
लगा जो ज़ख़्म ज़ुबां का हमेशा हरा भरा ॥७४४॥

जो बात कहो साफ कहो सुघरी हो भली हों।
कड़वी न हो मिश्री की डली हो ॥७४५॥

हक़ीक़त असलियत में इन्सां वोही नेक है।
कि जिसकी ज़ुबां और दिल एक है ॥७४६॥

ऊठ ऊठ मैं यक़ीनों के कलेजों को हिला दो।
इन फ़िरका परस्ती के निशानों को मिटा दो ॥७४७॥

जब सब का एक ख़ुदा तो आपस में लड़ते हैं क्यों।
मुफ़्त में बढा कर दुश्मनी फिर मरते हैं क्यों ॥७४८॥

सीरत नहीं है जिस में वोह सूरत फ़िज़ूल है।
जिस गुल में बू नहीं वोह क़ाग़ज़ का फूल है ॥७४९॥

क्या हँसी आती हैं मुझे इस हज़रते हैवान इन्सान पर।
बदफहलियां तो खुद करे दोष दे निर्दोष भगवान पर ॥७५०॥

एका करके ईन्टों ने भी बान्ध दिया पुल नदियों में ।
बिना एकता के तुम हम उठ सकते नहीं सदियों में ।।७५१।।

गुल क्या है ख़ार तक ना बचे है लूट सें ।
भारत का बाग उजड़ गया आपस की फूट से ।।७५२।।

खूब सैर की चमन की फूल चुने और शाद रहे ।
बागवां हम जाते है गुलशन तेरा आबाद रहे ।।७५३।।

फ़कीरों का येह तोहफ़ा है इसे स्वीकार लेना ।
अगर कुछ हो सके तो जीवन का उद्धार कर लेना ।।७५४।।

कहाँ वोह वीर हैं जिन से ज़माना थरथराता था ।
जिन की गर्जना से शेरों का कलेजा मुँह को आता था ।।७५५।।

खाक़ का पुतला हैं आख़िर ख़ाक़ में मिल जायेगा ।
ज़िस पर तुझको नाज है वोह ज़िस्म आग में मिल जायेगा ।।७५६।।

काला मुँह हो जायेगा तो वां तमाचा खायेगा ।
उजला मुँह हो जायेगा तो वां बख़शीस पायेगा ।।७५७।।

चार दिन के हुस्न पे तुमको क्यों इतना मग़रूर हैं ।
कल के लड़के यों कहेंगे हट बे बुढ़े हो दूर ।।७५८।।

रहम जो करता है बदला रहम का पायेगा ।
ज़ुल्म करता हैं तो बदला ज़ुल्म का मिल जायेगा ।।७५९।।

सीखता है देखकर क्यों गैर की बदचाल तू ।
चोरी चोरी जो करे एक दिन तो पकड़ा जायेगा तू ।।७६०।।

जो यहाँ आया है उसको चलना होगा एक दिन ।
जब फ़नाह ठहरी तो क्या फिर सौ बरस क्या एक दिन ॥७६१॥

मक़बरों में पाँव फैलाये हुए सोते हैं वोह ।
था ज़मीं से आसमाँ तक जिनका डका एक दिन ॥७६२॥

खुदा के ग़ज़ब से डरों से लड़ने वालों येह हुक्कमों खुदाएँ जहाँ आ गया ।
मारेगा वोह भी मरेगा यकीन नहीं तो रूहानियत से हुक्कम
आ गया ॥७६३॥

मिला दूँ ख़ाक में तन मन लगा दूँ आग जीवन में ।
बुराई का अगर धब्बा लगे नेकी के दामन में ॥७६४॥

मर्द उसको जानियेगा जो बात पर कायम रहे ।
ठान ले करने की पहले ही तब कहीं मुख से कहे ॥७६५॥

जिस तरह रोती हूँ मैं रोवेंगी तेरी नारियाँ ।
धिक्कार से थूकेंगे तेरे नाम पर नर नारियाँ ॥७६६॥

सीता का उत्तर रावण को

पण्डित को भी सलाम है और मौलवी को भी ।
मज़हब न चाहिये .मुझे इमान चाहिए ॥७६७॥

हक़ीक़त पर नज़र रखता हूँ जब दुनियाएँ फ़ानी की ।
बहारे ख़ाक में मिल जाती है सब जिन्दगानी की ॥७६८ ।

मुक्ति का मार्ग छोड़ के क्यों दु.ख का रास्ता लिया ।
पेट पाला पाप झूठ से तन मन जिया तो क्या जिया ॥७६९॥

अब मर जायें तो कोई मुँह में न डाले पानी ।
किस हालत में छोड़ गई हाय ज़वानी ॥७७०॥

मक्का गया मदीने गया नाम पाया हाजी ।
दिल का कुफ़्र गया नहीं आखिर पाजी का पाजी ॥७७०॥

दुनियाँ की सरेराह में कांटे हजार हैं ।
उससे जो बच के चलते वोही होशियार ॥७७१॥

हसीनों की मुहब्बत का बुरा अंजाम होता हैं ।
नतीजा दिल्लगी का मौत का पहग़ाम होता है ॥७७२॥

किया इस देश को बरबाद आपस की लड़ाई नें ।
दिलों में बैर भर दिया अपनी पराई ने ॥७७३॥

धर्म पर जो हैं फिदा मरने से कभी वोह डरते नहीं ।
लोग कहते हैं वोह मर गये दरअसल वोह मरते नहीं ॥७७४॥

लाख दुःख देवें जमाना होवे दुश्मन बेशुमार ।
इक कदम पीछे न हटते धर्म पर जिनको यकीं हैं ॥७७५॥

न खुशी जीने की उनको मौत का खतरा नहीं ।
आसूंओं का आंखों से गिरता कभी कतरा नहीं ॥७७६॥

आया है क्या साथ में जायेगा क्या साथ में ।
जीव अकेला जायगा बन्ध पसारे हाथ में ॥७७७॥

मनुष्य में फ़र्क नहीं फ़र्क पुण्य और पाप का ।
जैसी होवें चासनी मिठाई वैसी दुकान की ॥७७८॥

मरना भला है उसका जो अपने लिये जिये ।
जीता है वोह जो मर चुका इन्सान के लिये ॥७७९॥

पैसा देकर जूते खाना यह मजा शराब में देखा ।
घर बैठे दुनियाँ की सैल करना यह मजा किताब में देखा ॥७८०॥

आजकल के दोस्त है काग़ज़ के फूल ।
देखने में खुशनुमा बुए वफा कुछ भी नहीं ॥७८१॥

दिल दे इस मिज़ाज का परवरदिगार दे ।
जो रंज की घड़ियाँ खु.शी में गुजार दे ॥७८२॥

दिल दे इस मिज़ाज का परवरदिगार दे ।
धर्म की घड़ियों में जीवन गुजार दें ॥७८३॥

रूहानियत का हार कर, खु.दा का फर्मान याद कर ।
आत्मा से प्यार कर कर्मों का मन से विचार कर ॥७८४॥

हे लाल ? बाप ने तो राज दे दिया वचन के वास्ते ।

तारा राणी के उद्गार

आज तू मोहताज़ हैं दो ग़ज़ कफ़न के वास्ते ॥७८५॥

रोहत के मूच्छतावस्थामें

नाम ले परवरदिगार का खे.ल जाओ ज़ान पर ।
ज़ान देना धर्म हैं कौम और ईमान पर ॥७८६॥

करना हो सो कर चल दुनियाँ में दो दिन का नाम हैं ।
पीच्छें कुछ बनता नहीं जीते जी काम हैं ॥७८७॥

किसी पर न होना गुस्से से शेर ।
गुस्सा जिन्दगी को करता हैं ज़हर ॥७८८॥

मौत जब नज़दिक आ जाती किसी इन्सान की ।
नष्ट हो जाती शक्ति आँख की और कान की ॥७८९॥

परखने की है मुसीबत माल येह खोटा नहीं ।
सत्य जिसके पास हैं उनको कभी टोटा नहीं ॥७९०॥

सचाई छुप नहीं सकती बनावट के उसूलों से ।
ख़ुशबू आ नहीं सकती कभी काग़ज़ के फूलों से ।।७६१।।

जलाओ जितना चन्दन को वोह उतनी हीं महक देगा ।
जलाओ जितना सोने को वोह उतनी ही चमक देगा ।।७६२।।

ज़मीं तावें में हैं उसके आसमाँ भी पार होता हैं ।
कि जिसमे संग उनका है दिल में जोश और प्यार होता हैं ।।७६३।।

वोही मर्दानगी हैं जान दो इन्सान के बदले ।
नहीं लाज़िम हैं किसी की जान लेना जान के बदले ।।७६४।।

सदा दौर दौरा दिखाता नही ।
गया वक्त फिर हाथ आता नहीं ।।७६५।।

संसार सागर में अनेकों जीव जन्मे और मर गये ।
पर वोह है अमर तन, धन निछावर मुल्क पर कर गये ।।७६६।।

फूट की जढ जम गई अज्ञान आ कर अड गया ।
यों देश हमारा दीन दुर्बल पड गया ।।७६७।।

दिल सताना नहीं रवाएँ ख़ुदा का फरमान है ।
खास इबादत्त के लिए पैदा हुआ इन्सान है ।।७६८।।

दिल बड़ी हैं चीज़ जहाँ में खोल के देखों चश्म ।
दिल गया तो क्या रहा मुर्दा तो वोह श्मशान है ।।७६९।।

ज़ुल्म जो करता उसे हाक्किम भी यहाँ पर दे सज़ा ।
मुआफ़ हरगिज़ होता नहीं येह कानून के दरम्यान है ।।८००।।

ख़ाक का पुतला बना येह ख़ाक की तस्वीर है ।
ख़ाक में मिल जायेगा, जो ख़ाक दामन गीर हैं ।।८०१।।

"भ्ररन" बरसात की बूंदे चमन में गुल खिलाती हैं ।
दुआएं मां बाप की मोहताज को सुल्तां बनाती है ॥८०२॥

गूचे हमारे दिल के इस बाग में खिलेंगे ।
इस खाक से उठे है उस खाक में जा मिलेंगे ॥८०३॥

दो हाथ वालों के सामने मत पसारो हाथ ।
उसके आगे पसारिये जिसके लाखों है हाथ ॥८०४॥

लिखा परदेश किस्मत में वतन को याद क्या करना ।
जहाँ बेदर्द हाक्कम हो वहाँ पर फरियाद क्या करना ॥८०५॥

दिल के अन्दर है खुदा दिल से खुदा क्या जुदा ।
दिल सताना ऐ मियाँ उस रब्ब को दिल दुखाना कब मंजूर है ॥८०६॥

हिम्मत बड़ी है हिम्मत से काम लो ।
जब तक न मिले मंजिल तब तक न विश्राम लों ॥८०७॥

खुशी जब रूठ जाती हैं तो गम से काम होता है ।
मोहब्बत करने वालों का येही अंजाम होता हैं ॥८०८॥

जहाँ देखूं जिधर देखूं तेरा जलवा नजर आये ।
जमीं से आसमाँ तक लेला ही मुझको नजर आये ॥८०९॥

जलती हुई चिता कहती है यहाँ कौन किस का ।
मरना है पर कब मरना है पता नहीं इसका है ॥८१०॥

गैरों के वास्ते जो परेशान हो गया ।
इन्सान भर के फिर से वोह भगवान हो गया ॥८११॥

जिन्दगी ऐसी बना तू जिन्दा रहे दिलशाद तू ।
तू न रहे दुनियाँ में दुनियाँ को याद आये तू ॥८१२॥

करेंगे भलाई अगर हम, तो हमारा भी भला होगा ।
बुराई का नतीजा भी बुराई में मिला होगा ॥८१३॥

काम गैरों के न आये जिन्दगी किस काम की ।
लानत है उस दौलत को जो आबरू हो बदनाम की ॥८१४॥

दिया न कुछ लिया, न कुछ धन का खजाना भर चला ।
आया था मुट्ठी बान्ध के हाथ पसारे चल चला ॥८१५॥

आज मन्दिर मे भगवान नज़र नहीं आता ।
आज मस्जिद में रहमान नज़र नही आता ॥८१६॥

चाहे तुम नास्तिक समझलों मुझको ।
इन्सान में आज इमान नज़र नहीं आता ॥८१७॥

शराब है शराब है बोतलों में भारी आग हैं ।
पिना इसे हराम है इन्सानियत पर भारी दाग है ॥८१८॥

नहीं है जिन्दगी जो नाम पाती है भलाई में ।
खुदी को छोड़ कर जो पहुंच जाती है खुदाई में ॥८१९॥

फंसा जो इश्क में आ कर वोह आठों पहर रोता हैं ।
न खाता है न पीता है न जागता हैं न सोता हैं ॥८२०॥

चाहेंगा नुक्सान इन्सान किसी के हाल में ।
खुद पड़ेगा एक दिन नुक्सान के जजाल में ॥८२१॥

बादल के गरजने से शेर डरते नहीं ।
तेरी गीदड़ भभकियों से बीर खौफ करते नहीं ॥८२२॥

आती हैं जिसको गर्दिश बड़ी ।
मुश्किल से कटती हैं आधी घड़ी ॥८२३॥

गर्दिश न आवे किसी के भी पास ।
ताने सुनाती है औरत भी बे ज़बान ॥८२४॥

गर्दिश में ऐसा बिगड़ता है काम ।
सिर मुड़ने को न मिलता हज्जाम ॥८२५॥

जिसको है गर्दिश जब मारता हैं ।
सच्चा मुक़दमा वोह् हारता हैं ॥८२६॥

इसी से न करना कभी मग़रूर ।
गर्दिश सभी पर आती है ज़रूर ॥८२७॥

नुक्सान करे नुक्सान मिले एहसान करे एहसान मिले ।
जो जैसा जिसके साथ करे फिर वैसा उस को आन मिले ॥८२८॥

कुछ देर नहीं अन्धेर नहीं इन्साफ़ अदल परास्ती है ।
इस हाथ करो उस हाथ मिले येह् सौदा दस्त बदस्ती हैं ॥८२९॥

जो पार उतारे औरों को उसकी भी नाँव उतरने वाली हैं ।
जो ग़र्क़ करे औरों को उसकी भी नाँव डूबने वाली हैं ॥८३०॥

बेज़ुरम ख़ता जिस ज़ालिम ने मज़लूम ज़बाँ कर डाला है ।
उस ज़ालिम के भी लोहू का एक दिन बहता नाला है ॥८३१॥

जो औरों को डाले चक्कर में फिर वोह् भी चक्कर खाता है ।
जो औरों को ठोकर मारे फिर वोह् भी ठोकर खाता हैं ॥८३२॥

मग़रूर न हो तलवारों पर मत भूल भरोसे ढालों पर ।
सब शस्त्र छोड़ के भागेंगे मुँह देख अजल के भालों के ॥८३३॥

उमर दो रोजा पर क्यों ए फिरता भूला ए खलील ।
देख लेना एक दिन तू भी फ़नाह् हो जायेगा ।।८३४।।

जवानी में आदम[1] के वास्ते सामान कर गाफ़िल ।
मुसाफिर शब[2] से उठते हैं जो जाना दूर होता है ।।८३५।।

मुझे तोड़ लेना बनमाली उस पथ में देना तुम फेंक ।
मातृ भूमि हित शीश चढ़ाने जिस पथ जायें वीर अनेक ।।८३६।।

मुमकिन न बुवद कि यार आयद व किनार ।
खुदरा अज खयालों खामों अन्देशा बरार ।
हर चीज़ कि गहर अस्त दर सनिए तुस्त ।
त्रिसयार हिजा बेस्त मियाने तो व यार ।।८३७।। सरमद सूफी

मूलार्थ :–जबतक तेरे दिल में बाहरी चिन्ताएँ भरी हैं झूठ भावनाएँ भरी हैं तबतक यह कैसे मुमकिन है कि तेरा यार तेरा प्रेमास्पद ब्रह्म तुझे मिल जाये ? जबतक तेरे दिल में येह दूसरी चीजे भरी है तबतक यार से कैसे मिल सकेगा । तेरे और उसके बीच मे येही तो दीवार विशाल मेंजींयन का पर्दा हैं

निसार मैं तेरी, गलियों, पे ऐ बम्बई
जहाँ येही है रस्म कि जो चले, डरड़र के चलें ।।८३८।।
बम्बई के विषय

तरीके फ़नाह् में कदम रख के पूछो ।
मुहब्बत की रस्मे मुहब्बत की राहें ।।८३९।।

---

१ परलोक २ प्रभात से

देश जाती और धर्म पर मरना हैं सुखकार ।
मरना वोह मरना किस काम का जाने नहीं संसार ॥८४०॥

किस की शादी किसी का गम ॥
हूँ अल्लाह हूँ दम पर दम ॥८४१॥

तंगदस्ती में कोई इमानदार नहीं रह सकता ।
जो कोई रहता हैं वोह इन्सान नहीं वोह परवरदिगार हैं ॥८४२॥

पढ लिया इल्म नहीं किया अमल खर पे चन्दन को ढोहया है ।
नेकी बदले बदी करे, समझों उसने नर भव खोया हैं ॥८४३॥

मोहब्बत कीजे मर्द की कभी आयें काम ।
काम पडे बदले नहीं दु:खियन के इन्सान (धाम) ॥८४४॥

मित्र मित्र में फेर हैं ताली मित्र अनेक ।
जिसको देख मन ठरे श्रो करोडन में एक ॥८४५॥

मेरी जिन्दगी तुझी से मेरी शायरी भी तुझी से हैं ।
मेरी जिन्दगी न सम्बर सकी मेरी शायरी को सम्बर दो ॥८४६॥

येह चलती ज़मीं पर निगाहें जाती हैं ।
वोह होंटों में अपने क़लम को दवाती है ॥८४७॥

ज़मीं जब डूबते सूरज की ख़ातिर आहा भरती हैं ।
किरण जब आसमां को इक़ विदाई का प्यार करती हैं ॥८४८॥

ज़िन्दगी होगी मोहब्बत की कहानी तेरी ।
मुस्करायेंगी दुल्हन बन के जवानी तेरी ॥८४९॥

देख तारों की नज़र पथरा गई ।
रात की चोट कमर तक आ गई ॥८५०॥

रूह पिछली याद से घबरा गई ।
रूह रूहानियत में आगे के लिए जोश में आ गई ॥८५१॥

सल्तनत इक ज़ुल्म मज़हब इक बला ।
मुफलिसी इक जुर्म मेहनत इक सज़ा ॥८५२॥

मुसाफिर ! कहीं राह मत भूल जाना ।
जवानी की वादी के खंदां[1] नज़रे ॥८५३॥

मोहब्बत के गर्दूं[2] के रकखा[3] सितारे ।
तुझे रास्ते में करेंगे इशारे ।
कि आ हम सिखायें तुझे दिल लगाना ।
मुसाफिर ! कहीं राह मत भूल जाना ॥८५४॥

हँसीनों पे बिजली गिराता गुज़र जा ।
तमन्ना के शोले बुझाता गुज़र जा ।
नज़र से नजर यूँ मिलाता गुज़र जा ।
तुझे जैसे आता नहीं मुस्कराना ?
मुसाफिर ! कही राह मत भूल जाना ।.८५५॥

बहुत राह में खान[4] काहें मिलेंगी ।
मशाइख़[5] तफ़रीह[6] गाहें मिलेंगी ।
मज़हब की पुर पेचराह मिलेंगी ।
नहीं जिन में मंज़िल का कोई ठिकाना ।
मुसाफ़िर ? कहीं राह मत भूल जाना ॥८५६॥

---

१ मुस्कराते २ आकाश ३ नृत्यशील
४ धर्म-मठ ५ शेखों ६ क्रीड़ास्थल

आज हमारे लाखों साथी ।
साथी ! हिम्मत हार न जाओ ।
आज करोड़ों हाथ बढ़ेंगे ।
जब हम सत्य पर चलेंगे ।

मानवता की झलक देखेंगे ।
अनन्त कर्मों पर विजय पायेंगे ।

पिघलती शम्माओं पर गिरते हैं जब ताकों मे परवाने ।
सुनाता है कोई जब दूसरों के दिल के अफसाने ।।८५९।।

अपनीं कुर्बानी से है मशहूर नेहरू खानदान ।
शाम ऐ महफ़िल देख लो येह घर का घर परवाना है ।।८६०।।

न किसी की आंख का नूर हूं न किसी के दिल का करार हूं ।
जो किसी के काम न आ सका, मैं वह एक मुश्ते गुबार हूं ।।८६१।

ज़रा कर्म देखकर कीजिये इन कर्मों की बहुत बुरी मार है ।
नहीं बचा सकेगा इन्सानियत, फिर औरों की क्या औकात हैं ।।८६२

कौन पहुंचाता है पानी नारियल के झाड़ पर ।
जिसकी किस्मत में लिखा हो आता है फाड़ कर ।।८६३।।

सितारों से नहीं रोशनी चान्द की होती ।
हजारों से नहीं मुहब्बत एक से होती ।।८६४।।

रण्डि बाज़ी वोह करे जो जान की बाजी करे ।
खुद तो फ़ाक़ाकशी करे पर राण्ड को राज़ी करे ।।८६५।।

सिनेमा देखने के लिये जावे जेबां खाली करे मन की कंगाली करे
बन्धु के लिये आंखें लाली करे हुवानियत की दलाली करे ॥८६५।
लिखता हूँ खत खून से स्याही न समझना ।
मरता हूँ तेरे लिये पागल नहीं समझना ॥८६६॥
मैं लेट हुई मैं लेटी थी वोह मेरे उपर लेटा था ।
मैं उसको मना नहीं कर सकी क्योंकि वोह मेरा बेटा था ॥८६७॥
आशिक का इश्क खुदा निभाता हैं ।
धरती से नही आसमाँ से आता हैं ॥८६८॥
हमरी बदौलत शहर में कंचन वर्षते हैं ।
अवसोस येह है कि हम दो दाने के लिये तड़फते हैं ॥८६९॥

एक कृषाण की पुकार

गुलों से खार अच्छें है जो दामन थाम लेते है ।
सगों से गैर अच्छे है जो गिरते को थाम लेते हैं ॥८७०॥
दुनियाँ दुरंगी नक्करो सराय ।
कहीं खैर खुब्बी कहीं हाय हाय ॥८७१॥
इस दिल को मोल देते हैं इस दिल को मोल लों ।
इस दिल में फर्क हो तो कांटे में तोल लों ॥८७२॥
वोह सूर नहीं वोह कायर है जो रण में पलट जायें ।
वोह मर्द नहीं नामर्द है जो कह कर बचन पलट जायें ॥८७३॥
ना खुदा कावें में रहता है न बुतखाने में है ।
शेख जी रंदों[1] से पूच्छों दिल के काशाने[2] में हैं ॥८७४॥
रबिजा सूज[3] कहता हैं नबी ने एक बार ।
देखी एक हिरणी को रस्सी में बन्धी हैं बेकरार ॥८७५॥

---

१ भक्ति वात्सल्य २ झोपड़ी के दिवानों से पूछे ३ अकल

बोली वोह् हिरणी के ऐ मेरे नबी मेरे रसूल ।
अरज् एक रखती हू खिदमत में अगर होवें कुबूल ।।८७६।।

एक शिकारी ने मुझे रस्सी से बान्धा है इधर ।
मेरे बच्चे भूखे रोते है मेरे आका[1] उधर । ८७७।।

दूध भी हरगिज् न थी उनको पिल कर आई में ।
जो के इस रस्सी से कसे रगड़ों पर के बला पर आई मे ।।८७८।।

ऐ नबी प्यारे मुझे तुम खोलदो बहरे खु.दा ।
दूध उन बच्चों को जा कर मैं पिलाऊँ अब ज़रा ।।८७९।।

बोले हज़रत जो कि यहाँ से रह गई तू गर वहाँ ।
मैं शिकारी को भला दूंगा तेरा क्यों कर निशाँ ।।८८०।।

बोली वोह ज़ामिन खु.दा को अपने दे जाती हू मैं ।
उलटे पाँवों दूध पिल कर यूंही आती हू मैं ।।८८१।।

रहम खाया हाल वेकस पर शाहे अबरार[2] ने ।
खोल डाली उसकी रस्सी अहमदे मुख्तर ने ।।८८२।।

इतने में शिकारी आया दौड़ा घबराया हुआ ।
बोला यूं हिरणी मेरी जाती रही येह क्या हुआ ।।८८३।।

बोले पेगम्बर के हमने तेरी हिरणी छोड़ दी ।
और गले की रस्सी भी हमने तोड़ दी ।।८८४।।

अपने बच्चों को पिलाकर दूध वोह आ जायेंगी ।
आयेंगी वोह आयेंगी हाँ वोह मुकररं आयेंगी ।।८८५।।

---

१ मालिक २ खिताब

उसने हैं ज़ामिन दिया अपने ख़ुदाएँ पाक को ।
सुनकर नाम ग़म अब अपने दिल ग़म नाक को ॥८८६॥

बोला वोह हिरणी गई फिर हाथ आती हैं कहीं ।
फ़हम[1] में भी कुछ भुलाये बात याद आती हैं कहीं ॥८८७॥

था अभी कहता येह वोह पेशे रसूले कायनात को ।
इतने में वोह हिरणी भी आ पहुँची लिये बच्चों को साथ मैं ॥८८८॥

बोली ऐ बच्चों तुम्हारा हैं निगाहें बा कीर्दगार[2] ।
अब छूरी चल जायेंगी मेरे गले पर आबदार[3] ॥८८९॥

ज़ीभा कर डालेगा मुझको येह शिकारी हाथ से ।
अब तवक्का[4] तुम रखें अपने ख़ुदा की ज़ात से ॥८९०॥

नन्ने नन्ने उसके बच्चे बोले याँ शाहे ऊँम्म ।
अब कोई दम्मे में बिछुड़ जावेंगे अपनी माँ से हम ॥८९१॥

है तवक्का हमको याँ हज़रत तुम्हारी ज़ात से ।
तुम छूड़ा दोंगे हमारी माँ को इस के हाथ से ॥८९२॥

गर्ज़ हैं रज्ज़ाक हर एक का ख़ुदा एँ कायानात[5] ।
पर हमारा रीज़क हैं हक़ ने उत्तारा उसके साथ ॥८९३॥

कौन फिर मुहब्बत से पहलु में विठायेंगा हमें ।
दूध यूँ फिर कौन उल्फत से पिलावेगा हमें ॥८९४॥

बोली वोह हिरणी के ऐ बच्चों न हो तुम बेकरार ।
क्योंकि नबी के रूबरू करते हो मुझको शर्म सारा ॥८९५॥

---

१ अकल २ अल्लाह ३ तेजधार ४ उम्मीद ५ सव्वर कर

कैसा मुझ बेकस का देखों तो किया कहना कबूल।
मेरे जां पर आप यूं बैठे रहे मेरे रसूल ॥८९६॥

बेकरारी आहा जारी कुछ नहीं खामोश हो।
मेरे हजरत को न ज़ियादा और मत तकलीफ दो ॥८९७॥

यूं लगे कहने शिकारी से रसूले कीर्दगार।
तेरी हिरणी आन पहुंची अब तुझे है इख़्तियार ॥८९८॥

अब के देखा मोहजेज़ा अल्लाह रसूले पाक का।
पढ़ लिया कलमा शिकारी ने शाहे लवलाक का ॥८९९॥

जान दिल से हो गया वोह जां फिदाएँ मुस्तफ़ा।
कर दिया आजाद हिरणी को बराएँ मुस्तफ़ा ॥९००॥

अपने बच्चों को लेकर चलदी हज़रत को दुवाएँ देती कीर्दगीर को।
बच्चे येह जानकर उच्छल कूद करने लगें रहम की दवाएँ देने लगें॥९०१॥

'सर सिकन्दर के जीवन का वर्णन'

वक्ते मुर्दन[1] यूं सिकन्दर ने हकिमों से कहा।
मौत से मुझको बचा लों करके मेरी कुछ दवा ॥९०२॥

सिर हिला कर यूं लगे कहने के ऐ शाहाएँ जमा।
मौत से किस को पनाह है क्या है दरमाने[2] कज़ा ॥९०३॥
बरग़ज़िदा नोकरों से फिर हुआ यूं हम कलाम।
है कोई इस वक़्त मुश्किल में मेरा मुश्किल कशा[3] ॥९०४॥
यक ज़वां हो कर लगे कहने के हम मजबूर है।
कुन्द[4] है तदवीर के नखून अकल है नारीशां[5] ॥९०५॥

---

१ मरते वक्त	२ इलाज	३ खोलनेवाला
४ कठिन	५ अकल पहुंचने वाली नहीं

बेगमों और लौंडियों से फिर मुख़ातिब यूँ हुआ ।
नाज़निनों इस घड़ी है तुम से उम्मीदे वफ़ादारी ॥६०६॥

सरद आहाएँ भर कर के और वाचश्मतर कहने लगी ।
बेबसों मजबूर है हम किस तरह से ले बचा ॥६०७॥

कुल ख़ज़ाइन और दफ़ाइन खोल कर कहने लगा ।
साथ में चलना ज़रा अब ऐ मेरे फ़ख़रे जहाँ ॥९०८॥

तब दौलत ने यूँ कहा हसरत भरी आवाज़ से ।
मैं थी साथी इस जहाँ की वोह मुल्क हैं दूसरा ॥६०६॥

तोता चश्मी देख कर इनकी और टका सा सुन जवाब ।
रो पड़ा आहाएँ सिकन्दर हाथे में तनाहा[1] चला ॥६१०॥

हो गया माजूस जब वोह ज़िन्दगी से इस तरह ।
यूँ नसीयत की अमीरों और वज़ीरों को बुला कर ॥६११॥

हर तबीबे नाम वर लाशा उठाये दोश[2] पर ।
मुन[3] कसफ़िवता[4] सब पे हो के दे सके न येह शफा ॥६१२॥

बाद मुर्दन हाथ मेरे कफ़न से बाहर रहे ।
देख लेता ख़ल्क़ मुझको साथ हूँ क्या ले चला ॥६१३॥

कुल ज़रों लालों जवाहर हो भरे शकड़ों मेरे साथ ।
बेगमाते साथ हो और साथ बुढी वालदा ॥६१४॥

फील हो हौदे सजे, और अस्प हो वाजीन साथ ।
सब रासले हो मुसल्ला साथ हो सारी सपाहा ॥६१५॥

---

१ अकेला २ कन्धा ३ हाकिम ४ मालूम हो जाये

बुढ़े बच्चे और जवाँ सारी रियाया साथ हो।
हो जनशे का हमारे रहनुमा छोटा बड़ा ॥६१६॥

येह नसीयत कर चुका तो रूह ने परवाज़[1] की।
हो गया वोह शाहाएँ आली राहिये मुल्के बक़ा[2] ॥६१७॥

कार परदाजों[3] ने हुक्म आखि़री की शौक़ से।
हू बहू तामील की सब कुछ किया जो था कहा ॥६१८॥

आहो ज़ारी गिरियाँ वारी घर बा घर होने लगी।
जिसको देखों महब[4] ग़म हैं लब पे है आहों बुका़[5] ॥६१९॥

माँ पिसर के हिज्र[6] में अब रात दिन घुलने लगी।
कबर पर बेटे की जाकर रोके कहने लगी ॥६३०॥

ऐ मेरे लकते जिगर कैसा दिया मुझको दग़ा।
पच्छती हर किसी से है सिकन्दर किस जगह है ॥६२१॥

अब कहाँ रहते हो बेटा किस जगह रूह पोश हो।
कौन सी बदली मे अब तू चान्द मेरे आ छीपा ॥६२२॥

तू कभी रूठा न था बच्चपन्न में ऐ मेरे अज़ीज ॥६२३॥

इन दिनों क्या जी में आयी जो हुवें मुझसे खफा।
मखमली गदों पे तुझको नीद तक आती न थी ॥६२४॥

आज ज़ेरे खाक़ कैसा ग़मग़लत[7] है सो रहा।
ऊँठ मेरी जाँ घर को चल वापस न यूँ नराज हो ॥६२५॥

---

१ निकल गई २ हमेशा के लिये ३ काम करने वाले
४ ग़मगीन ५ डूबना ६ जुदाई ७ बेफ़िक्र

वोह मोहब्बत मत भूल तू मेरी पीरी के असाएं[1] ।
मुनत[2] ज़िर दरबार में है दाद खाहों का हजूम ॥१२६॥

उठ ज़रा बेदार हो और जाके सुन उनकी सदा ।
है बिशी सतरंज और शातिर है तेरे मुनतज़िर ॥१२७॥

तू भी हो मशगूल उन में जाके ऐ मर्दे खुदा ।
जिस तरह मुसताक़ था मुसा तंजली[3] के लिए ॥१२८॥

में भी मुतलासी हूं मेरी महजबी सूरत दिखा ।
नीम[4] जां हैं हिज्र[5] तेरे वहां[6] खुर्दो कलां[7] ॥१२९॥

शरबते दीदार के जाकर उन्हें सागर पिला ।
शोर चुग़दों[8] बुम[9] है तेरे महलों पिसर ॥१३०॥

बुलबुल कुमरी वोह तूती का जहां था वह बाहा ।
इस क़दर नाले की दिल सोज पीरे ज़ाल ने ॥१३१॥

दिल हला चर्खं कोहन बे रहम कज़ रफ़तार[10] का ।
येह सदा आई फ़लक़ से उस घड़ी "अखतर" वहां ॥१३२॥

थाम ले दरिया ऐ गम बे सूद ने आंसू न बहा ।
शहरे खामोशाए[11] रोती है सिकन्दर कौन सा ॥१३३॥

बस्ते हैं लाखों सिकन्दर इस जगह शाहों गदा ।
लौटने का अब नहीं वोह ढूंढती है तू जिसे ॥१३४॥

---

१ लाठी २ इन्तजार ३ जलवा के लिए ४ अधमुहवे
५ जुदाई ६ छोटा ७ बड़ा ८ चामगीड ९ ऊल्लू का
१० टेढी ११ कबरस्तान

आ सब्र से घर को अपने किस पे नादां[1] है फिदा।
आ सब्र कर और परवरदिगार से दिल लगा
किस्मत को कर पैदा ॥६३५॥

कल हविश इस तरह से तरग़ीब देती थी मुझे।
ख़ूब मुल्कं रूस हैं और सर ज़मीने तूस हैं ॥६३६॥

गर मुज़शर हो तो किस इशरत से कीजे़ जिन्दगी।
इस तरफ़ आवाज़े तबल उधर सदाएँ कूंच है ॥६३७॥

सुनते ही इबरत येह बोली इक तमाशा में तुझे चल दिखा दूं।
तू जो कहदे आज में महबूश[2] दिलगीर बेताब हूं ॥६३८॥

ले गई यक[3] बार्गी गोरे ग़रीबां[4] की तरफ़।
जिस जगह जाने तमन्ना सौतरह महवूश[5] ॥६३९॥

मरक़दे दो तीन दिखला कर लगी कहने मुझे।
येह सिकन्दर है येह दारा है येह कहकौस है ॥६४०॥

पूछ लो इनसे के जाओ हसमते दुनियां से।
आज कुछ भी इन के साथ बजुज़[6] हसरते महयूस[7] है ॥६४१॥

शायद में जैसे मगस हम हिर्स में पाबन्द[8] है।
बाये[9] हसरत इस स्याहा[10] जिन्दा में यूं ही खुर[11] सन्द है ॥६४२॥

लाख तूफ़ान उमंड आये तो हरान न हो।
मर्द बोह है जो मुसीबत में परिशान न हों। ॥६४३॥

---

१ अज्ञानावस्था २ न खुश ३ एक बार ४ कबरस्तान ५ न खुश, खामोश ६ स्वाय ७ निराशा ८ कैदखाना ९ गमगीम १० अंधेरा ११ खुश

नाम निशान एक हैं ।
तीरान्दाज़ अनेक हैं ॥१४४॥

औरत तो बड़ी चीज़ है कुछ है नहीं ठठा ।
जो इस को न समझे वोह बड़ा ऊँलू का पठा ॥१४५॥

धर्म कर ले आदी क्यों मग़रूर में फिरता है ।
ज़िन्दगानी और दौलत फ़नाह होने वाली है ।

क्यों खाली हाथों में सफ़र करता है ।
क्यों चौरासी के फेर में तमन्नाएँ लिये फिरता है ॥१४६॥

वा वक्त तंगदस्ती आशना बिगाने होते हैं ।
सुराई जब हुई खाली ज़ुदा पैमाने[1] होते है ॥१४७॥

मेरे गुनाह यादा या तेरी रहमत ।
बतादे ऐ मेरे मौल्ला हिसाब कर के मुझे ॥१४८॥ इकबाल

झूक के मिलना बड़ी करामात हैं ।
इससे दुनियाँ मुरीद होती हैं ॥१४९॥

रहम कर अपने आइने कर्म को भूल जा । इकबाल
हम तुझे भूले है लेकिन तू ना हम को भूल जा ॥१५०॥

दो चार में क्या पाँच में कह दूँगा दस में ।
अल्लाह किसी को न करे जोरू के बस में ॥१५१॥

जो सिनेमा देखने के लिये जाता हैं ।
उसको समझों तुम वोह किस्मत अपनी लूटाता है ॥१५२॥

---

१ पयाले

ज़र का नाश करे और झूठे पयालों में पान करे ।
मूर्ख अभिमान करे नीच गति का निर्वाण करे ॥९५३॥

सिनेमा देखकर राग द्वेष करे किस्मत का नाश करे ।
दो जख़ में जाने के लिये हुवानियत की तरह् परयान करे ॥९५४॥

जहाँ तक हम ने देखा बेवफा पाया ज़माने को ।
इसी से दिल नहीं चाहता किसी से दिल लगाने को ॥९५५॥

ज़रूरत क्या ? तकल्लुफ़ कीं अगर सच्ची मोहब्बत है ।
हलावत सीरे मादर में नहीं होती सीरे शक्कर में ॥९५६॥

उमर सारी हो गयी पर है अभी नख़रे वोही हैं ।
बल न रस्सी का गया अबसोंस जल जाने के बाद ॥९५७॥

काम रूकने का नहीं ऐ दिले सादा कोई ।
गे.ब से हो जायेगा तू देख ले सामाँ कोई ॥९५८॥

निदान की दोस्ती जीव की जान गिरी ।
इल्मदार की दोस्ती रूह की शान गिरी ॥९५९॥

सराये दहर[1] में मेराज[2] हैं उसी के लिये ।
जो ज़िन्दगी को पराया करे किसी के लिये ॥९६०॥

एतायारे लाहुती इस रिज़क .से मौत अच्छी है ।
जिस रिज़क़ से आती हो परवाज़ में कोताही ॥९६१॥

सब्क़ फिर पढ़ सदाकत का इजाज़त का शाजत का ।
जहाँ लेना तुम से काम दुनियाँ की इमानत का ॥९६२॥

---

१ दुनियाँ २ भगवान से मिलना

फूल की चाह

चाह नहीं मैं सुर बाला के गहनों में मैं गूंथा जाऊं मैं ।
चाह नहीं प्रेमी माला बिध बिच प्यारी को ललचाऊं मैं ।
चाह नही सम्राटों के शव पर देह रि डाला जाऊं में ।
चाह नही देवों के सिर चढ़ूं भाग्य पर इठलाऊं में ।
मुझे तोड़ लेना बन माली उस पथ में तुम देना फेंक ।
मातृ भूमि पर शीश चढ़ाने जिस पथ जावे वीर अनेक ।।९६२।।

कांटा किसी को मत लगा जो मिस्ले गुल फूल हैं तू ।
हक में तेरे तीर है किस बात पर भूला हैं तू ।।९६३।।

ज़ुल्म भी टहनी कभी फलती नहीं ।
नाव कागज़ की कभी चलती नही ।।९६४।।

छुपे रहते थे महलों मे, जो हो गलतान ऐशों में ।
दिखाते मुंह न सूरज को, उन्हें भी काल ने घेरा ।।९६५।।

लगाता दिल तू किस पर है जहां में कौन है तेरा ।
सभी मतलब के गर्ज़ी है किसे कहता है तू मेरा ।।९६५।।

जिसको तू जाता देखने काशी और द्वारका ।
मुकाम हैं जिस्म में तेरे उसी यार का ।।९६६।।

रूहानियत को जाना नहीं भटकता फिरा मक्का मादीना ।
काशी में हरिद्वार में गोता लगाता कामीना ।।९६७।।

दम पर दम हरिभज, नहीं भरोसा दम का ।
एक दम में निकल जावेगा दम आदमा का ।।९६८।।

जिस लिये तू जाता मक्का और मदीना ।
रूह तेरे जिस्म में है येही हैं मक्का और मदीना ॥६६९॥

अगर तू गया मक्का और मदीना में ।
रूह पाक नहीं हुई तेरी हाजी आदम की ॥६७०॥

हरा खुला जमीं का सीना बूंदों का ढल रहा पसीना ।
सफल हो रहा किस्मत का जीना रोटी खाना पानी पीना ॥६७१॥

आप में जब तक के कोई आप को पाता नहीं ।
मोक्ष के मन्दर तलक हरगिज़ कदम जाता नहीं ॥६७२॥

वेद या पुराण या कुरान सब पढ लीजिये ।
पर आप को जाने बिना मुक्ति कभी पाता नहीं ॥६७३॥

जिन्हों का इश्क सादक[1] है वोह कब फरियाद करते हैं ।
लबों पे मोहरे खामोशी दिलों में याद करते हैं ॥६७०॥

जख्मों से कलेजे को भर दो पामाल सकूने दिल कर दो ।
ओ मस्त नजर वाले साकी मस्ती भरदों विस्मल करदो ॥९७५॥

जबदर्द से होता था मुझतर[2] कहता था यह मजनू रो रो कर ।
दुनियां की हर एक शह को या रब्ब लैली करदो या महबल[3]
करदो ॥६७६॥

मक़तबे इश्क़ है रोता हैं क्या ।
आगे आगे देखना होता है क्या ॥६७७॥ मास्टर का मजनूं को कहना

मक़तबे इश्क है इश्क मोहब्बत के लिए ।
मैं यहां आता हूं फ़क़त लेली की बयार[4] के लिए ॥६७८॥

रघूवीर सिंह मजनूं का मास्टर को उत्तर

---

१ सत्य, सच्चा २ तड़फना ३ कुछ भी आकार न हो ४ बन्दनीय

मौत एक लफ़्ज़ बेमानी है ।
जिसको मरा हयात ने मारा ॥९७९॥

शाहों को रोब और हसीनों को हुस्नों नाज़ है ।
देता हूँ जब कि देखूं उठाकर नज़र में ॥०८०॥

लगाकर पेड़ फूलों के किये तक़सीम गुलशन में ।
ज़माया चांद सूरज को सजाये क्या सितारे है ॥९८१॥

किसी ने पूच्छा किसी से जा कर हुसूले[1] बहदत में लुत्फ़ है कुछ ।
लगे वो कहने तलाशे[2] क़तरा में बहर[3] मिलना मलाल है क्या ।९८२।

माना कि तेरी दीद[4] के काबिल नहीं हूँ में ।
तू मेरा शौक़[5] देख मेरा इन्तज़ार देख ॥९८३॥

अर्जो समा[6] कहां तेरी बुस अत[7] का पा सके ।
मेरा ही दिल है वोह कि जहां तू समा सके ॥९८४॥ आकाश

तेरी नासिहा यह चुना ओह चुनी ।
कि है खु़दपसन्दी के ये सब करीं ॥९८५॥

न बेगी दिखाई तुझे ये कहीं ।
सुझाया किसी ने कभी जो कहीं ॥९८६॥

फलासफी को बहस के अन्दर खुदा मिलता नहीं ।
डोर को सुलझा रहा हूँ और सिरा मिलता नहीं ॥९८७॥

मारफ़त[8] खा़लिक़ की आलम में बहुत दुसवार[9] हैं ।
शहरे तन में जबकि खु़द अपना पता मिलता नहीं ॥९८८॥

---

१ एकत्व प्राप्ति २ बूंद की खोज ३ समुन्द्र में ४ उत्सुकता
५ दर्शन ६ भूमि ७ विस्तार ८ कर्म तत्त्व ९ शरीर रूपी नगरी

दर हर दरो दीवार व दिले हर कसो नाकस ।
खुद जिलवएँ दारद व अदब[1] बायद बूदन ।।६८९।।

मर्दा ने खु.दा खु.दा न बाशन्द ।
लेकिन वखु.दा जु.दा न बाशन्द ।।९९०।।

खुदा किसी को मारे नहीं सबसे बड़ा खु.दा ।
खुद ही मर जायेंगे कर कर सब गुनाहा ।।९९१।।

खु.दा किसी की रहमत में आता नही ।
पाक़ करने के लिए खु.दा कभी जाता नहीं ।।९९२।।

अपनी बदफैलियों से बशर खुद चिलाता है ।
जु.ल्म तो खुद करे नाहक़ खुदा को दोष देता है ।।९९३।।

रंग लायेगी हमारियाँ इन्तजा.री एक दिन ।
रूहे जगमगायेंगी ज्ञान मे एक दिन ।।९९४।।

किसको देख कर किसकी याद आती है ।
महावीर को देख कर रुहनियत की याद आती है ।।९९६।।

तेरा दीद जिसको नसीब था ।
वोह नसीब काबिले दीद था ।।९९७।। जब हर लाल नेहरूजी के उपर

देख कर कासिद को मेरे उसने पूच्छा खैर है ।
अब कहो क्या हाल है जिंदा है या जाता रहा ।।९९८।।

उनके देखे से जो आ जाती है रौनक़ मुँह पर ।
वोह समझते है कि बीमार का हाल अच्छा हैं । ९९९।।

---

१ विनय भाव

आग पानी में लगाते है लगाने वाले।
मर्द मैदान में जाते हैं विजय करने वाले ॥१०००॥

गुलस्तां में आकर हर एक गुल को देखा।
न तेरी सी रंगत न तेरी सी बू हैं ॥१००१॥

महावीर कैसा था ? जिसने रूहानियत का आवताव चमकाया था।
उस समय मुर्दे दिलों में जीवन अहिंसा का सितारा जगमगाया था
॥१००२॥

धन दौलत चाहते हो तो किसी अमीर का काम करो।
दिली प्यार चाहते हो तो किसी गरीब का काम करो।

दौलत से दिल की लाखगुनी ज्यादा कीमत है।
रहवर का प्यार चाहते हो तो निस्वार्थ का काम करों ॥१००३॥

चापलूस अपना मतलब गाँठने को ही हाथ मिलाता हैं।
जो कि हर मुसीबत में मदद के, सौ-सौ विश्वास दिलाता हैं।

मैं तुम्हारीं दोस्ती में खलल नहीं डालता पर इतना याद रखों।
कुत्ता तुम्हारे लिए नहीं रोटी के लिए दुम हिलाता हैं ॥११०४॥

दौलत मिली हैं इश्क की अब और क्या मिले।
वोह चीज़ मिल गयी है जिस से खुदा मिलें ॥१००५॥

घर कौन सा बसा कि जो वीरां न हो गया।
गुल कौन सा हंसा कि परेशां न हो गया ॥१००६॥

जिन के हंगामों से थे आबाद वीराने कभी।
शहर उनके मिट गये आबादियां बन हो गई ॥१००७॥

फ़िदा करता रहा दिल को हँसीनों की अदाओं पर ।
मगर देखी न इस आईने में अपनी अदा तूने ॥१००८॥

कर्म अनुकूल हो तो सभी आदर की निगाओं से देखते है ।
बदनसीबी में यार भी निरादर की निगाओं से देखते हैं ॥१००९॥

पाक रख अपना दाहां [1] ज़िक्रे खुदाये पाक से ।
कम नहीं मुँह में जबां हरगिज तेरे मिसवाक [2] से ॥१०१०।

गर खुदा देवे कनात महा एक हफ़्ते की तरह ।
दौड़े इन्सां न कभी सारी को आधी छोड़कर ॥१०११॥

ऐ हसद करने वाले नाहक़ तबाह न हो ।
आता है तरस तुझ पर तू गुमराह न हों ॥१०१२॥

खुशी के साथ दुनियाँ में, हजारों ग़म भी होते हैं ।
जहाँ बजती है शहनाई वहाँ मातम भी होते हैं ॥१०१३॥

दिल मे लग रही हैं फिर लाग (राग) क्या बदलना ।
थोड़ी सी शब रही हैं फिर राग क्या बदलना ॥१०१४॥

है यार तकल्लुफ़ में तकलीफ़ सरासर ।
आराम से वोह हैं जो तकल्लुफ नहीं करतें ॥१०१५॥

अहसाने नाखुदा का उठाएँ मेरी बला ।
किश्ती खुदा पें छोड़ दूँ लंगर को तोड़ दूँ ॥१०१६॥

मक्के गया मदीने गया कर बला गया ।
जैसा गया था वैसा ही चल फिर के आ गया ॥१०१७॥

---

१ मुँह २ दातुन

शराफत को सरे आफ़त दगा को अब दुआ समझें ।
पड़े इस अक़ल पर पत्थर, अगर समझे तो क्या समझें ॥१०१८॥

जहाँ में जब आया था सभी हँसते थे तू रोता था ।
बशर कर चल करणी ऐसी सभी रोवें तू हँसता जा ॥१०१९॥

नीच बन जाता हैं इन्सान सजाये देकर ।
जीतना ठीक है दुश्मन को दुआये देकर ॥१०२०॥

काँटा काँटें से निकलेंगा विष होगा विष से निर्मूल ।
दुष्टों पर अनुकम्पा करते येही रही हमेशा भूल ॥१०२१॥

मुझे क्यों गम हो मेरा इन्सान अभी जिन्दा हैं ।
धरती पर प्यार नभ मे चाँद अभी जिन्दा है ।
सोने चाँदी के इस भगवान का अहसान नहीं ।
मेरे इमान का भगवान अभी ज़िन्दा हैं ॥१०२२॥

गीत गाने तो चला मगर साज़ भूल गया ।
आदमी जिन्दगी का एक राग भूल गया ।
दिमागी लू ने कुछ इस तरह से झुलसा मन ।
दिल ही दिल की आवाज़ आज़ भूल गया ॥१०२३॥

महरे हुक्क़ बे सब्ब, सब्ब साज़द ।
कहरे हुक़्क़ बासब्ब, सब्ब सोज़द ॥१०२४॥

कर्म फ़ले तो सब फले भीख बनज़ ब्यापार ।
नहीं तो गुर्वार का गुवार रहे न मौत न प्यार ॥१०२५॥

यह सब जीते जीके जगड़े हैं ।
सच पूच्छों तो क्या खाक हुवें ।
अब मौत से आकर काम पड़ा ।
सब किसे कजियें पाक हुवें ।।१०२६।।

अग्नी का धर्म रहता जब तक उसमें कयाम हैं
वहीं शेर की है ताक्त पास होकर निकले
वोह अपने धर्म को तजकर जब राख हो जायेंगी
चिंटियां भी उसके उपर वे खौफ होकर निकल जायेगी ।।१०२७।।

मोहब्बत दो दिलों की एक सी रफतार चलती हैं ।
यहां पर धूआं होता हैं वहीं पर आग जलती है ।।१०२८।।

तुम तो करते हो दिलगी, दिलगी कहते है ।
उसको जो दिल की दिल में निब चले ।
मरते जीते तक हो दिलगी और दिलगी में वह चले ।
मरते जीते रूहानियत की दिलगी में दिल लगाता चले ।।१०२९।।

बद की सोबत में बैठों उसका है अज्जाम बुरा ।
बद न बनों तो बद कहलाओ बद अच्छा बदनाम बुरा ।।१०३०।।

थी शकल अपनी ही स्याह शीशा कोई खरा खोटा न था ।
था गला अपना ही बेसुरा तार तो कोई टूटा न था ।।१०३१।।

यह तो अपनी नजर का फरक है प्यारे ।
कि तुमने कोई भला ना देखा हमने कोई बुरा ना देखा ।।१०३२।।

दूध की रुखाल बिल्ली फिर बताओ खैर क्या ।
घर के दुश्मन होंगे इससे ज्यादा बैर क्या ॥१०३३॥

मजे में हैं वोह जो हर हाल में खुश ।
कोई माल में खुश कोई ख्याल में खुश ॥१०३४॥

आज जग में दुश्मन हैं प्राणी का प्राणी ।
खून सस्ता विकता है महँगा है पानी ।
बाप के ही सामने अब बेटे मरते हैं ।
बाप भी तो बेटे को बेचा करते हैं ।
आज लड़की वालों की बन्द है वाणी ।
खून सस्ता बिकता हैं महँगा है पानी ॥१०३५॥

मेरे मित्रों फूट को विदा कर दीजिए ।
बैर पाप को भूला कर सम्प कर लीजियें ।
तेरा मेरा छोड़िये भेद भाव तोड़िये ।
उंच–नीच त्याग कर गले लगा लीजियें ॥१०३६॥

क्या इस उमड़ती हुई जीवन शक्ति को ।
सही रास्ते लगाया जा सकता है ॥१०३७॥

जिन्दगी की चंद घड़ियां, बीत जायेंगी कहीं ।
खाक ऐसी जिन्दगी पर, तुम कहीं और हम कहीं ॥१०३८॥
मगरूरियां नादानियां उनकी मुबारक ।
मंजूर उनका हर सितम ।

अब बहारों में मजा क्या ।
गुल कहीं गुलशन कहीं ॥१०३९॥ मधु श्री कावरा

देखने वाले मेरे लब ऐ खामोशी न देख।
आंखों आंखो में फसाना कह दिया करता हूँ मैं।
दिल लरज आता है हर सितारे का सुनकर।
चांद से तन हारी में कुछ कह दिया करता हूँ मैं।
ना इनसाफी और झूठ सहा नहीं जाता मुझसे।
खोल कर पड़दा सरे आम रख दिया करता हूँ मैं।
तू क्या जाने मैं अपने नाम का इक दिवाना हूँ।
तू क्या चीज है अच्छे भले की पोल खोल दिया करता हूँ मैं।१०४०।

मैं ही अपना हिजाब[1] हूँ वरना।
तेरे मुँह पर कोई नकाब[2] नहीं ।।१०४१।।

मौत जब तक नजर नहीं आती।
जिन्दगी राह पर नहीं आती ।।१०४२।। जिगर

है हसूले आरजू[3] का राज[4] तर्के-आरजू[5]।
मैंने दुनियां छोड़ दी तो मिल गई दुनियां मुझे ।।१०४३।। सीमाव

जिसने परवरदिगार से लो लागी उसको दुनियां से सरोकार क्या।
जिसको अल्लाह से प्यार हो गया उसको पैसों से दरकार क्या।१०४४।

मगज की सफाई न होगी जब तक इतर मलों या गुलाब छिड़को।
उठेगी बदबू की लहर लाख केवड़ा जनाब छिड़कों ।।१०४५।।

एक तीर से तूफान की तसवीर बना दूँ।
दर्म्यान में आये हुवें सूर्य को छुपा दूँ ।१०४६।।

---

१ लज्जा, सकोंच २ पर्दा ३ इच्छापूर्ति ४ रहस्य
इच्छाओं का त्याग

वतन की गम[1] गुसीरा के कोई सामान पैदा कर।
जिगर में जोश दिल में दर्द तन में जान पैदा कर।
उड़ा ले जाये दमभर में जहाँ की ये खुराफाते।
बसा कर ऐसा महशर[2] या कोई तूफान पैदा कर।
हम अपनी शान की खातिर खुशी से जान पर खेलें।
कि हों हम जान पर कुरबान वोह औसान पैदा कर।
कदम बोसी[3] को चल के, सर के बल आयेगी आजादी।
कि मर मिटन की ख्वाहिश ऐ दिले नादान पैदा कर।
खुदी को नेस्त कर आये बजाये जंग का डंका।
कुछ ऐसे मन चले दिलदार मर्द इन्सान पैदा कर।
न मर्गो जीस्त[4] को देखूँ न देखूँ रंजो राहत[5] को।
कि दिल में एक बेचैनी मेरे भगवान पैदा कर ॥१०४७॥

धर्म के वास्ते हँसकर जो अपनी जान खोते है।
हजारों या लाखों में कहीं इकया के दो इन्सान होते हैं ॥१०४८॥

हमेशा के लिये रहना नहीं इस दारे फानी में।
कुछ अच्छे काम कर लो चार दिन की जिन्दगी में ॥१०४९॥

पर तिरिया को ऐसी जानों जैसी अपनी बहन।
खोटी नजर उनको तकदे फूटे उसके नयन ॥१०५०॥

मुँह के मिट्ठे जवां के रसीले एह कलयुग के यार।
मुँह पर बातां करे मिट्ठियां पिच्छे उगले जहर ॥१०५१॥

---

१ दुःख हरण   २ अन्तिम दिन   ३ चरण चमन
४ मृत्यु और जीवन   ५ दुःख और सुख को

हाँ जी हां जी मुख से कह दें अन्दरों राखें खार ।
ऐसे पुरुष का विश्वास न करिये छिन में देगा मार ।

बादशाहे वतन

वतन के गरीबों का ग़म खाने वाला,
ख़तरनाक रस्तों मे बढ़ जाने वाला ।
तड़प कर सितमगर को तड़पाने वाला,
अहिंसा की ताकत को दिखलाने वाला ।
सिपाही वोह कमज़ोर हिन्दोस्तां का,
लरज़ता है दिल जिससे हर हुक्मरां का ।
वोह आज़ादिये दिल क़ा सच्चा मुनदी,
गुलामी का दुश्मन असीरी का आदी ।
सजाये हुये है बदन पर जो खादी,
लुभाती हैं वोह उसकी पोशाक सादी ।
येह शौकत है इस सादगी की अदा में,
कि मोती जवाहर है इसकी सभा में ।
दिलो पर न क्यो कर करे हुक्मरानी,
कि हुब्बुल वतन उसकी है राजधानी ।
पहाड़ उसकी हिम्मत के आगे है पानी,
बुढ़ापे पे उसके निछावर जवानी ।
जिन्हे ख़ौफ़ तूफां न आंधी की दहशत,
उन्हें खाये जाती हैं गांधी की दहशत ।
जो चाहे दिले ज़ार तू जिन्दगानी,
जो हैं शौके आज़ादिए जाविदानी ।

जो तेरी रगों में खूं की रवानी,
जो कहता हैं अपने को हिंदोस्तानी।

जो आज़ाद भारत की तुझको लगन हैं,
तो गाँधी का मसलक भी हुब्बे वतन में।

अनोखी है उसकी तरक्की का ज़ीना,
कि मरने को अपने समझता है जीना।

सियासत का उसकी निराला करीना,
जो हँस दे तो दुश्मन को आये पसीना।

कयामत हो बरपा जो आँसू बहा दे,
जो सीने को ताने तो हलचल मचा दे।

वोह भारत के हर मुर्दा जन का दुलारा,
गरीबों फ़कीरों की आँखों का सहारा।

हमारी ज़मी का चमकता सितारा,
वतन की हैं आज़ादियों का सहारा।

ज़माने मे ऐसे हैं कम नेक इन्साँ,
जो धर्म उसका पूछो तो है एक इन्साँ।

फ़कीरी में यों उसका सिक्का रवाँ हैं,
कि हुश्ने सियासत का कायल जहाँ हैं।

इरादा जो पीरी में उसका जवाँ है,
न फ़ौजे न लश्कर मगर हुक्मराँ है।

फ़िदाए वतन और रखवाहें वतन है;
वोह बेताज का बादशाहे वतन हैं ॥१०५३॥ श्री हुनसीम

महात्मागांधी

वतन के वास्ते धुनी रमा कर बैठने वाला ।
ज़माने के लिये ख़ुद को मिटा कर बैठने वाला ।
अर्ज़ी अत पर मर्ज़ी अत जित उठाकर बैठने वाला ।
इरादों पर मगर आसन जमाकर बैठने वाला ।
सुदर्शन चक्र सा जब अपना चरख़ा वोह चलाता है ।
ज़माना क्या ज़मीं चर्ख़ भी चक्कर में आता हैं ।
इसी ने मुल्क में सोराज का डंका बजाया है ।
ज़माने की नज़र में देश का रुतबा बढाया है ।
अहिंसक सत्यग्राही हिन्द वासी को बनाया हैं ।
वतन की आबरू पर कौम को मरना सिखाया हैं ।
है कहता बुज़दिली है तोप से गोली से डर जाना ।
वतन के वास्ते ज़िन्दादिली है हंसते मर जाना ।
ज़ईफी में भी रखता है कलेजा नौजवानों का ।
तने लाग़र पे भी ज़ोरावरों का बस नहीं चलता ।
वोह बेतलवार के तलवारवालों से हैं यों ही लड़ता ।
ज़मीनों आसमां चक्कर में है गर्दिश में है दुनियां ।
अनोखा लड़ने वाला है निराला मिलने वाला है ।
मुक़ाबिल में न जिसके कोई गोरा है न काला हैं ।

वतन उजड़ा हुआ आबाद करके चैन पायेगा ।
हरेक नाशाद को वोह् शाद करके चैन पायेगा ।
चमन से दाफ़ये सैयाद करके चैन पायेगा ।
यक़ीनन हिन्द को आज़ाद करके चैन पायेगा ॥१०५४॥

महावीर स्वामी

दिल हों ग़नी तो राज को लेकर वोह् क्या करे ।
निश्काम आत्महो तो फिर तख़्तों ताज क्या करे ।
आँख की पुतली में जलवा है तेरी तसवीर का ।
अक्स आता है नज़र महावीर में महावीर का ।
नाम लेता हूँ ज़बाँ से जब मैं मुख से वीर का ।
चूमता है नतक़ गोया मुह् लबे तकरीर का ।
झुक गये दुश्मन के सिर तेरे अहिंसा धर्म से ।
फिर गया मुँह सत्य के हथियार से शमशीर का ।
नाम भारतवर्ष का दुनियाँ में रोशन कर दिया ।
तूने चमकाया सितारा देश की तकदीर का ।
तूने दुनियाँ को सिखाया हैं अहिंसा का सबक़ ।
लोह् दिल पर नक़्स हैं सिक्का तेरी तौक़ीर का ।
तुझको कार्तिक के महीने में मिला निर्वाण पद ।
दीपमाला इक क़िरश्मा है तेरी तनवीर का ॥१०५५॥

आफत में उलझन में जंजाल में बेहोश है।
सच्चा वोही मर्द है जो हर हालत में खुश है ॥१०५६॥

गुल गये गुलशन गये जंगली धतूरे रह गये।
दाना दुनियाँ से मिट गये और बेशहूरे रह गये ॥१०५७॥

बहुत पढ़े तो क्या हुआ बोले बिना विचारे।
उसकी जांन जाइ ये वोह है पूरी तलवार ॥१०५८॥

जिसके हाथ में है तलवार।
उससे डरता है संसार ॥१०५९॥

कभी हम भी गुल थे लगते थे हजारों के गले।
अब तो बने है खार भाई दूर ही भले ॥१०६०॥

हुबावे बाहर को देखों कि कैसा सर ऊठाता है।
तक्कब्बुर क्या बुरी शह है कि फौरन टूट जाता हैं ॥१०६१॥

हविस बेजा न कर यह दुनियाँ चन्द रोजा हैं।
नविशता है जो किस्मत का लिखा हर शक्स वोही पाता है ॥१०६२॥

बेकरारी का सबब हर काम की उमीद में।
ना उमेदी हो तो फिर आराम की उमीद है ॥१०६३॥

बुरी सोबते जहरे कातिल है भाई,
बुरों में नहीं कुछ स्वाय बुराई।
अगर आग के पास बैठेंगे आ कर,
तो ऊठोंगे एक रोज कपड़े जलाकर ॥१०६४॥

अगर महावीर तू बना चाहता है तो हिम्मत न हार।
इन्द्रियों का दमन कर और मन को ले मार ॥१०६५॥

हर चे खु.बाही कुन दिल आजारी मक्कुन ।
त्वराचे त्वराचे कि महबूद पिदरम महबुद सुलतान ॥१०६६॥

क़ातए उल्ल सजं.र मेहे उल्ल वक़र ।
बा महे बायए उल्ल वसर ॥१०६७॥

तू मरा हाजी बगाई मन तुरा हाजी बगोयम ।
तू मरा पाजी बगोई मन तुरा पाजी बगोयम ॥१०६८॥

रंज से खू.गर अगर इन्सां तो मिट जाते है रंज ।
मुश्किलें इतनी पड़ी कि दम पे आसां हो गई ॥१०६९॥

किसी को दारा किसी को सिकन्दर बना दिया ।
सो से बुरा तो लाखों से अच्छा बना दिया ॥१०७०॥

मजदूर खु.श दिल कुनद कारे बेश ।
मुक्ल खुदा तंग नेस्त पाय मेरा लंग नेस्त ॥१०७१॥

चुभा करें कांटे पैरों में पगलों को परवाह नहीं ।
दिवानों को जो भटकादे ऐसी कोई राह नहीं ॥१०७२॥

पगले वोह जो तिनके पर चढ़ उदधि पार कर जाते हैं ।
दिवानें वोह जो तूफानी लहरों पर भी गाते हैं ॥१०७३॥

चिनाओगे तुम और रहेंगे हम ।
कमाओगे तुम और खायेंगे हम ।
पैदा करोगे तुम और मुडेंगे हम ।
ज्ञान पैदा करोगे तुम और निर्वाण पहुचेंगे हम ॥१०७४॥

कोई हमदम न रहा, कोई सहारा न रहा ।
हम किसी के न रहे, कोई हमारा न रहा ।
शाम तन्हाई की है, आयेगी मंजिल कैसे ।
जो मुझे रहा दिखा दे वोह सितारा न रहा ॥१०७५॥

जगमग जगमग करता निकला चान्द पूनम का प्यारा ।
मेरी चांदनी बिछुड़ गयी मेरे घर में हुआ अंधियारा ॥१०७६॥

आओ जिन्दगी के भेदभाव सब मिटा के आओ ।
आओ अब कदम कदम से दिल से दिल मिला के आओ ॥१०७७॥

निगाहों में एकरार सारे हुए हैं हम उसके हुए वोह हमारे हुए हैं ।
हमेशा जो दम भरते थे दोस्ती का वोही दुश्मन जहां हमारे हुए है
॥१०७८॥

कमर बांधे हुए चलने को यां सब यार बैठे हैं ।
बहुत आगें गये बाकी जो है तैयार बैठे हैं ॥१०७९॥

देख छोटों को है अल्लाह बड़ाई देता ।
आस्मां आंख के तिल में है दिखाई देता ॥१०८०॥

ज्ञान से मिलती हैं आजादी येह राहत सर ब सर ।
वार के फूंकू मैं इस पर दो जहां का मालों ज़र ॥१०८१॥
स्वामी रामतीर्थ

हां वोह है आज़ाद जो कादिर है दिल पर जिस्म पर ।
जिसका मन काबू में हैं कुदरत हैं सबकों इस्मां पर ॥१०८२॥रामतीर्थ

येह कर लिया येह करता हूं येह कल करूंगा मैं ।
इस फिकरों इन्तजार मे शामो सहर गई ॥१०८३॥

जिसके हाथ में तलवार है उससे डरता है संसार ।
ससार उसको समझता है सरदार ॥१०८४॥

खुदी जब तक है न मिटाये, खुदा नहीं मिलता ।
वगैर फनाह् के वक़ा का पता नहीं मिलता ॥१०८५॥

दरे करीम से वदे को क्या नहीं मिलता ।
सब्भे हज़ूर में या रब्ब है इल्तजा मेरी ।
सिवा तेरे कोई मुश्किल कुसा नहीं मिलता ।
मुश्किल तेरे अन्दर पड़ी इसलिए खुदा नहीं मिलता ॥१०८६॥

जब फनाह् ठहरी तो फिर क्या सौ बरस क्या एक दिन ।
जो यां आया है जाना उसको होगा एक दिन ।
क्या पागम्बर क्या वली क्या एहले दौलत क्या फ़कीर ।
सब को हो मिनाहा खल्क़ नक़ूम का सदमा एक दिन ॥१०८७॥

अपनी खुदी का ही परदा है दीदार के लिए ।
वर्णा कोई नाकाब नहीं यार के लिए ॥१०८८॥

कौनसी यां है जहां जलवाएँ माशूक नहीं ।
शौक गर दीदार का है तो नजर पैदा कर ॥१०८९॥

नेकियों से दिल दिमाग झुकता है ।
वदफैलियों से सर झुकता है ॥१०९०॥

कयाम रखता नहीं ज़माना घड़ी में कुछ है घड़ी में कुछ है ।
अजब है कुदरत का ख़ज़ाना घड़ी में कुछ है घड़ी में कुछ है ।
दिमाग जिनके थे आसमाँ पर कलाम नख़वत के थे ज़बाँ पर ।
हुए मोहताज आबो दाना घड़ी में कुक है घड़ी में कुछ है ।
कहाँ है दारा कहाँ सिकन्दर कहाँ सुलतान हफते किसवर ।
हुवे वोह सब मौत के निशान घड़ी में कुछ है घड़ी में कुछ है ॥१०९१॥

हमदर्दियाँ फज़ूल हैं दुनियाँ में ऐ ख़लीक़ ।
सबसे किनारा कश रहो राहत इसी में हैं ॥१०९२॥

उस यार से क्या बोलना जो यार हो दस बीस का ।
उस चान्द का क्या देखना जो चान्द हो दिन तीस का ॥१०९३॥

बदल जाती हैं तक़दीरे और कट जाती हैं ।
ज़ंजीरे किसी मोमन के मिले से ॥१०९४॥

मर्द को शीश नमत मर्द तलवार बजावें मर्द ।
देह हर लेत मर्द खावे और खुलावें मर्द ।
पड़े मर्द में भीड़ मर्द को मर्द छुड़ावें ।
मर्द करे उपकार मर्द जग में यश पा वें
जानों तुम सुख दुःख साथी दर्द के ।
बताश कहे विक्रम सुनो येह लक्षण है मर्द के ॥१०९५॥

ज्ञानी श्वासोंश्वांस में करे कर्म का खेह् ।
पूर्व कोड़ी वर्सा लगे अज्ञानी करे सेह् ।
देश अराधक क्रिया कही सर्व अराधक ज्ञान ।
ज्ञान तणो महीमा घणी अंग पांचमें कहा भगवान ।
मन राजा मन प्रजा मन साहुकार हैं ।
मन करे सो कायदा वोह् हमेशा दरबार है ।
ज्ञानी ध्यानी संयमी दाता सूरा अनेक ।
जपिया तपिया बहुत है शील वन्त कोई एक ।।१।।

जल मे बसे कोमदिनी चन्दा बसे आकाश ।
जो है जाकी भावना सो ताही के पास ।।२।।

जैसी करणी वैसी भरणी निश्चय नही तो करके देख ।
सुरगत भी है दुर्गत भी हैं नही माने तो करके देख ।।३।।

कामी, क्रोधी, लालची इनसे भक्ति न होय ।
भक्ति करे कोई शूरमा जाति बरण कुल खोय ।।४।।

क्रोध पाप का मूल हैं पाप मूल अभिमान ।
तुलसी दया धर्म न छोड़िये जब लग घट मे प्राण ।।५।।

सत्य मत छोड़ोरे शूरमा सत्य छोड़ियां पत जाये ।
सत्य की बांदी लक्ष्मी फिर मिलेगी आये ।।६।।

काम क्रोध मद लोभ की जबलग घट में खान ।
क्या मूर्ख क्या पण्डित दोनों एक समान ।।७।।

कोटी कर्म लग रहे एक क्रोध के लार ।
किया कराया सब गया जब आया अहंकार ।।८।।

तुलसी यह संसार में भक्ति कहाँ से भेट ।
तीन बात की लट पट है चमड़ी, दमड़ी और पेट ।।९।।

आलस नींद किषाण को खोवे, चोर को खोवे खांसी ।
टका ब्याज बोरे को खोवे, तिरीया को खोवे हांसी ।।१०।।

जब तक स्वांस शरीर में तब तक तेरी आस ।
स्वांस रमा दुनियां डरे कोई न आवे पास ।।११।।

जब तक स्वांस शरीर मे तब तक नाम अनेक ।
घट फूटा सिन्धु में, मिला पूर्ण पुली एक ।।१२।।

क्षमा बडन को होत है छोटन को उत्पात ।
क्या कृष्ण का विगड़ गया, जो भृगू मारी लात ।।१३।।

देकर भूल जा लेकर याद रख येह मर्दाई है ।
जो दे करे अहसान वो मर्द नहीं पूरी लुगाई है ।।१४।।

जननी जने तो भक्त जन यादाता या शूर ।
नहीं तो बांझ रहे कहे गमावे नूर ।।१५।।

धन दे तन को राखिए तन दे राखिए लाज ।
धन दे तन दे लाज दे एक धर्म के काज ।।१६।।

नारी नारी मत कहो नारी नर की खान।
नारी से पैदा हुए राम कृष्ण वर्धमान ॥१७॥

रहिमन देख बडन को लघु ना दिजे डार ।
जहाँ काम आवे सूई वहाँ क्या करे तलवार ॥१८॥

कन्या विक्रय जो करे धर्मादेका धन खाये ।
वह नर संसार मे कभी न ऊँचा आये ॥१९॥

मीठी वानी बोलिये मन का आपा खोये ।
औरन को शीतल करे आपहू शीतल होये ॥२०॥

पर नारी पहनी छूरी तीन ठौर से खाये ।
धन छीजे योवन हरे मुँए नरक ले जाये ॥२१॥

यह संसार असार है किसका करे गुमान ।
जो आया सो ही जायगा .संभल जरा नादान ॥२२॥

यन्त्र–मन्त्र–तन्त्र किया काल दुकाल बताया रे ।
गृहस्थ की चिंता करी साधु धर्म गमाया है ॥२३॥

ममत्व तजी नहीं कुटुम्ब का घणा परिचय राखे रे ।
मोह कर्म में लिपटिया, वो शिव सुख किम चाखे रे ॥२४॥

साधु जीवन के उपर

काल के विषय

घड़ी पल का नहीं भरोसा करे कल की बात ।
क्या जाने क्या होगा दिन उगे प्रभात ॥२५॥

प्रिय मत लेना कल का नाम, नहीं कल पर विश्वास मुझको है।
कल तो क्या एक क्षण बाद, काल का हो सकता मैं ग्रास ।।२६।।

उमर ख्याम

कर्म

मन कहे मैं मेवा खाऊँ नित्य का खाऊँ नया माल ।
कर्म कहे मैं नहीं खाने दूँ, खाने दूँ सिर्फ रोटी और दाल ।।२७।।

बोलना और उठना

ऐसी बोली बोलिये कोई न बोले झूठ ।
ऐसी बैठक बैठिये कोई न बोले ऊँठ ।।२८।।

क्रोध के उपर

क्रोधी महाचण्डाल, आंखा करदे राती ।
क्रोध महाचण्डाल घर बुजावे छाती ।।२९।।
क्रोधी महाचण्डाल थाली गणे न कुण्डों ।
क्रोधी महाचण्डाल नरक में जावे ऊँण्डों ।।३०।।

शुद्ध भावना की सफलता

प्रभु पाय दर्शन निकली दुर्गला नाम नार ।
काल धर्म बिच में कर, पहुंची स्वर्ग मंझार ।।३१।।

दया का अनन्ता फल

तिनक दया के कारणे बना भील से भूत ।
गजमुक्ता मोती मिले रानी मिली अनूप ।।३२।।

आत्मा के विषय

तेरे भावैं जो करो भलो बुरो संसार ।
नारायण तू बैठ के अपनो भवन बुहार ।।३३।।

मनुष्य लालच में फंसता है

मक्खी बैठी शहद पर दिये पख फैलाय ।
हाथ मलै अरु सिर धुनै लालच बुरी बलाय ॥३४॥

पोथी–पोथा पढ पढ, जगह मुवा, भय न पण्डित कोय ।
आत्मसुरुप समझे बिना, आत्मसिद्धि न होय ॥३५॥

सतयुग मे बार सात कलयुग में रहें चार ।
तुलसी तीनों न रहें, बुध—मंगल—ऐतवार ॥३६॥

पर हाथ व्यापार संदेश राखे खेती बिना वर देखे देवे बेटी ।
बिना गवाही मेले थापी यह चारों मिल कूटे छाती । ३७॥

चरित्र चमकता है आत्मा की ज्योति से ।
मोक्ष पद मिलता है एकाग्रता की मनोती से ॥३८॥

मत करिये भाई नौकरी खायी ये कुन्दा और घास ।
लोक खोदीये गांव में तो आप जाइये आस पास ॥३९॥

शब्द बराबर धन नहीं, जो कोई जाने बोल ।
हीरा तो दामें मिले, शब्द का मोल ना तोल ॥४०॥

तुलसी यह संसार में, पांच रत्न है सार ।
साधु मिलन और हरि भजन, दया दीन उपकार ॥४१॥

ज्ञान का भूषण ध्यान है, ध्यान का भूषण त्याग ।
त्याग का भूषण शान्ति हैं तुलसी अमल अदाग ।४२॥

कबीरा लोहा एक है घड़ने का है फेर ।
लोहे से बख्तर बने लोहे से शमशेर ॥४३॥

सबसे लघुता भली लघुता से सब होय ।
जैसे द्वितीय का चंद्रमा सीस नवे सब कोय । ४४॥

अनीति का धन हैं वर्ष पांच के सात ।
तुलसी द्वदश वर्ष में जड़ मूल से जात ॥४५ ।

जीव जीव के आसरे जीव करता है राज ।
तुलसी रघुवर आसरे क्या बिगड़ेगा काज ।४६ ।

बहता पानी निर्मला खड़ा गन्धला होय ।
साधु तो चलता भला दाग न लागे कोय ॥४७ ।

क्रोध भयंकर शत्रु हैं करता जीवन नष्ट ।
धर्म कर्म तप योगी से मानव होता भ्रष्ट । ४८॥

ममता नहीं मन में जरा समता का भंडार ।
ऐसे श्री प्रभुवीर को वन्दन बारम्बार ॥४९ ।

बड़ बड़ जो मनुष्य करता करे नहीं कोई विश्वास ।
निरादर की दृष्टि से देखते समझते है बेकार ॥५०॥

नमन नमन फर्क है सब नहीं एक समान ।
दगाबाज दूगना नमें चीता चोर कमान ॥५१॥

वचन जिसका गया जगाने से उसका सब कुछ गया जमाने से ।
मानवता बनती है वचन अपना निभाने से ॥५२॥

वचन निभाने वाला मानव कहलाता है ।
वचन न निभाने वाला दानव कहलाता है ॥५३॥

रेशम का टुकड़ा एक भला, साबत भला न टाट ।
राज तो एक राजपूत भला अन्त जाट का जाट ।।५४।।

सोना कहे सुनार से उत्तम मेरी जात ।
काले मुँह की चिरमची तुली हमारे साथ ।।५५।।

मैं हूँ बन की लालड़ी, लाल हमारा रंग ।
काल मुँह इससे हुआ तुली नीच के संग ।।५६ ।

भोली चिरमची बावली, भोली कर रही बात ।
अगर तेरे में गुण भरे हैं तो जलो हमारे साथ ।।५७।।

बन जाई बन में पली बिकी शहर में आये ।
तू तो जले कलंक के कारण मेरी जले बला ।।५८।।

पहले राखे सत्य को दूसरे राखे रहम ।
तीसरे राखे नम्रता को चौथे सब पर प्रेम ।।५९।।

सज्जन कर उपकार किसी पर याद नहीं मन में करते ।
मात्र निमित्त समझते खुद को भाग उसका बतलाते । ६०।।

मन रूपी, मन रूप में जाये, पांच वर्ण दो गंध पांच रस चौहू स्पर्शी कहलाये ।
आत्मा गुण में कभी न जाये, इसके मेल से कर्मों की वृद्धि आत्म संगलीन कहलाये ।६१।।

मन सब पर असवार है मन के मते अनेक ।
जो मन पर असवार है वह लाखों में कोई एक ।।६२।।

परम ज्योति परमात्मा परम ज्ञान परवीन ।
बंदु परमानंदमय घट घट में अन्तर लीन ॥६३॥

समीप में उपदेश सुन तरूवर भयो अशोक ।
जब रवि उदय हुआ सब प्रकट हुआ भवी लोक ॥६४॥

सत्य धर्म का विश्व में तेज प्रताप अनन्त ।
भोग बल को ध्वस्त कर पाता विजय अनन्त ॥६५॥

मन मथुरा तन द्वारका काया काशी जान ।
दस द्वारे का देहरा तामे पीव पश्छान ॥६६॥

मन चाहे घोड़े चढ़ूं मोती का पहरूं हार ।
काल के हाथ कमान हैं छोड़े न वृद्ध योवान ।६७॥

माया से माया मिले कर कर लम्बे हाथ ।
तुलसी दास गरीब की कोई ना पूच्छे बात ॥६८॥

जो समय अमोलक तेरा गया ना पिछे आयेंगा ।
दया धर्म विना ओ मानव तू भव भव ठोकर खायेंगा ॥६९॥

कबिरा करनी अपनी कभी ना निष्फल जाये ।
दस करोड़ पिच्छे फिर आ मिले कभी ना व्यर्था जाये ॥७०॥

ज्ञान हीन प्राणी फिरे भ्रमता अपने आप ।
ज्ञान दर्शन चारित्र से निश्चय कटता पाप ॥७१॥

पापी सेठ कंजूस से घृणा करे नर नार ।
जिसके हृदय गुण बसे प्यार करे संसार ।७२॥

दया दान और प्रेम से जिसका मन भरपूर।
उस मानव को इस संसार में परमानन्द मिले जरूर।७३।।

चुभा करता हृदय में खिला द्वेष का फूल।
चुभा हृदय करता नहीं कभी प्रेम का शूल।।७४।।

आठ पहर चौसठ घड़ी जहाँ हो प्रेम सोपान।
उस मानव को देख लो आन मिले भगवान।।७५।।

अतिहाँसी दासी संगत नृप वैश्या विश्वास।
स्थिरवासी योगी यति निश्चय होत विनाश।।७६।।

बड़ाई अपनी जो करे औरों को दे दोष।
ऐसा मानव बगुला भक्त की कभी ना होगी मोक्ष।७७।।

आचार विचार व्यवहार का धनी सबको जावें जीत।
उस मानव के आगे जग नमन करे सब कोई गावें गीत।।७८।।

साधक आत्मा को साध ले करले सबर संतोष।
जन्म मरण मिट जायगा निश्चय होगी मोक्ष।।७९।।

पांचेन्द्रिय दमन कर पांच महाव्रत धार।
नैया इस मानव की, इस संसार से उत्तर जायगी पार।।८०।।

ज्ञान को सब जग नमे गुण गावे नर नार।
नींदक मूर्ख को मिलता फिट फिट करे संसार।।८१।।

सज्जन तो एक भी भला मूर्ख भला ना लाख।
गुणी गुण को देखता हर्षोल्लास मूर्ख लाल लाल आंखे दिखावे
उड़ावे खाक।।८२।।

गुरु की निन्दा जो करे मूर्ख कड़वा बोले बोल ।
अपने को ऊँचा समझे करे नीच का काम नर्क निशानि जान ।।८३।।

कटुक बचन बोले सदा उलटी जिनकी रीत ।
उसका इस संसार में कोई ना बनता मीत ।।८४।।

सरल स्वभाव मीठा वचन सुन्दर होवे नीत ।
शोभा उसकी हर जगह दुनिया उसकी मीत ।।८५।।

ज्ञानी ध्यानी संयमी कर गये नैया पार ।
दम्भी कपटी लालची डूब गये मझधार ।।८६।।

मूर्ख कहे मेरे बिना चले नहीं संसार घरवार ।
राजा युधिष्ठिर, राम, नल न रहे, फिर चले संसार ।।८७।।

नारी निशावें तीन गुण जो नर पासे होय ।
भक्ति मुक्ति निज ध्यान में बैठ सके ना कोय ।।८८ ।

पोथी बड़ी भगवत की प्रेम का गले में मोतियन का हार ।
घणा यत्न से रखिये फाटे नहीं लीगार बार बार मिले नहीं यह
निश्चय कर जान ।।८९।।

कीमत करमें लावजो, सभी अर्थ लगावजो ।
तुरत वेगी आवजो, रि गुण ते परिवार जो ।।९०।।

पढ़ने की हद समझ है, समझन की हद ज्ञान ।
ज्ञान की हद हरिनाम हैं यह सिद्धान्त उर आन ।।९१।।

सांस सांस पर कृष्ण भज, वृथा सांस मत खोय ।
न जाने या सांस को आवन होय न होय ।।९२ ।

महली की गति महली जाने, को जाने बाहर वारों ।
नृप की रैन चैन को कहें जाने भेड़ चरावन हारों ॥९३॥

दो अक्षर करो दोस्ती, तो उत्तरो भव पार ।
मस्तराम महाराज कहे हैं राम नाम है सार ॥९४॥

दग्ध कर परको, स्वयं भी भोगता दुःख दाह ।
जा रहा मानव चला अब भी पुरानी राह ॥९५॥

वृद्धावस्था पर

आंखों पे तनेगा जाला, नाक से बहेगा नाला ।
लाठी से पड़ेगा पाला, जरा जिन्दगानी में ।
खड़े खड़े वस्त्र में करोगे मल मूत्र त्याग ।
पड़े पड़े थूकते रहोंगे पीकदानी में ।
भक्ति क्या करोगे तब, शक्ति न रहेगी जब तन में ।
राम-नाम बोलने तुम्हारी बन्द वानी में ।
अतः योग से योग और भोग से वियोग कर ।
कर लो भजन भगवान का भर जवानी में ॥९६॥

जुवारी मन में जुवा रे, कामी के मन काम ।
आनन्द घन प्रभु यों कहे तू ले भगवत को नाम ॥९७॥

शास्त्र सुने मालाएं फेरी प्रतिदिन बना पुजारी ।
किन्तु रहा जैसा का तैसा, हुआ न मन अविकारी ॥९८॥

सतगुरु की महिमा अनन्त अनन्त किया उपगार ।
लोचन अनन्त उघाड़ियां अनन्त दिखावणहार ॥९९॥

राजा दुःखी रियायत दुःखी वृद्धों दुःखी नर-नार में ।
निर्धन और धनवान सर्व दुःखी दग्ध अंगार में ।।१००।।

साधु ऐसा चाहिए जो दुःखे दुःखावे नाँयी ।
फूल पत्र तोड़े नहीं रहे बगीचे माँयी ।।१०१।

सब सब नूँ सम्भालों सब सम्भालों आप ।
करो करणी भोगवे कौन बेटा कौन बाप ।।१०२।।

कामी क्रोधी कृपण नर मानी ने मदान्ध ।
चोरे जुगारी चुगता नर आठे देखत अन्ध ।।१०३।।

योगी भोगी रोगी सिंह सर्प और आग ।
इस को जो छोटा समझे उसका बड़ा अभाग ।।१०४।।

सब से बढ़कर है नवकार, करता है भव सागर पार ।
चौदह पूर्व का वय सार, बारम्बार जपो नवकार ।।१०५।।

चार मिले चौसठ हँसे, बीस करे कर जोड ।
हरिजन से हरिजन मिले खिलें सात करोड़ ।।१०६।।

इक लख चन्दा इस घर में सूरज कोटि मिलाई ।
दादू गुरु गोविन्द बिना तो भी तिम्मिर न जाई ।।१०७।

सत गुरु की महिमा अनन्त किया उपकार ।
लोचन अनन्त उघारिया अनन्त दिखावन हार ।।१०८।।

स्मिरन ऐसा कीजिये दुजा लखे न कोय ।
ओष्ठ न फरकता देखिये मन में रखिये जोय ।।१०९।।

कहाँ काशी कहाँ कश्मीर कहाँ खुरासान गुजरात ।
तुलसी ए सब जीव को प्रारब्ध ले जात ।।११०।।

घाट घसत घसत फिर बहु घसे उपर डाला पानी ।
तेरे मन में क्या है ? बह कहानी मैंने जानी ॥१११॥

पर नारी पैनी छूरी कोई मत लाइयों अंग ।
रावण सरिखे खप गये परनारी के संग ॥११२॥

सिनेमा देखन जो मानव आये, पर नारी का दर्शन पाये ।
मन में राग द्वेष का दावानल जगाये मुयें नर्क ले आये ॥५१३॥

अद्भूत डोरी प्रेम की, जा में बांधाय दोय ।
ज्यों ज्यों दूर सिधारिये त्यों त्यों लाम्बी होय ॥११४॥

काया वाचा, मनसा, धीर धरे जो लोग ।
उनकू जा ससार में लग सके ना रोग ॥११५॥

बारह कोश पर बोली बदले तरुवर बदले शाखाँ ।
बुढ़ापन मे केश बदले लक्षण न बदले लाखाँ ॥११७॥

तुझ मे राम मुझ में राम, सब मे राम समाया ।
सब से करले प्यार जगत में कोई नहीं है पराया ॥११७॥

जननी बननी ब्यान्तरी, सुत को ज्ञान न दे ।
पुत्र को पण्डित करे ते जननी माण (प्रमाण) ॥११८॥

जन्मला से यम डरे वे जननी कहवावें ।
बीजी बक्करी बापडी जननी परवश सहायें ॥११९॥

जननी के उदर से जन्मेला सुत महावीर कहवाएँ ।
और न उदरे अवतरे साक्षी जननी जनायें ॥१२०॥

पाँव फर फरा मुँह बचंरा निर्लज्ज होय ।
माथा की डूंगा तले धरे तब दलाली होय ॥१२१॥

स्त्री जब प्रसन्न भेवी दे नर्क की डोर ।
मूत्र पात्र आगे धरै दे सके न कुछ और ।।१२२।।

मूंड मुडाय हरि मिले तो सब लो मुडाये ।
बार बार के मूडन से भेड़ वैकुण्ठ न जावे ।। २३।।

नर बड़ा क्या ? वोही अर्जुन वोही गांडिव समय बड़ा बलवान ।
भीलां लूटी गोपिया वोही अर्जुन वोही अर्जुन के बान ।।१२४।।

आशा तजे माया तजे मोह तजे अरु मान ।
हर्ष शोक निन्दा तजे कहे कबीर सन्त जान ।।१२५।।

एक घड़ी आधी घड़ी, आधी मे पुनि आध ।
तुलसी संगत साधु की हरे कोटी अपराध ।।१२६।।

चार चुका बारह भूला ६ (छः) का ना जाने नाम ।
जग ढंढोरा फेरता श्रावक हमारा नाम ।।१२७।।

लज्जा गुणों की वेलडी, लज्जा गुण की खान ।
लज्जा युक्त लज्जा धारे वनिता एज सुजान ।।१२८।।

सुख का सागर शील हैं कोई न पावे थाह ।
शब्द बिना साधु नहीं द्रव्य बिना नहीं शाह ।।१२९।।

चकडाल माल धन को कौड़ी न रख कफन को ।
जिसने ही तुझे जर दिया हैं वोही तुझे धन भी देगा ।
मालाओं मकां हवेली अमन चमन भी देगा ।
जीता रहेगा जब तक खाने को अन्न भी देगा ।
मर जायगा तो वोही तुझे कफन भी देगा ।।१३०।।

कल कले कल कल तू मत कर कल से कल नहीं पायेगा ।
कल पकड़ बे प्रकल मत हो कल टूट कर मर जायगा ॥१३१

नानक नन्हें होई रहो जैसे नन्हीं दूब ।
और रूख उखड़ जायेंगे दूब खूब का खूब ॥१३२॥

फूल है गुलाब का रस थोड़ा और रंग बहुत ।
नादानों की दोस्ती में सुख थोडा और दुख बहुत ॥१३३॥

ये ऊंट किराया का है यारों ।
सन्दूक का जानाजा भरी हैं ॥१३४॥

केशर का क्यारा बनाया भीतर बोया प्याज ।
गुलाब का पानी दिया वोही प्याज का प्याज ॥१३५॥

रोटी तुझको रग है पावत सब संसार ।
ज्ञानी ध्यानी योगी यति जब लग ले न आहार ।
पार गति प्रेम की न सूझे जब तक ना ले आहार । निहालचन्द
भूख समय कुछ बात ना रूजे और बात कबु न बुझे ॥१३६॥

पा-पकरे बिन प्रभु नहीं मिलत है पा- पकरे बिन चैन ।
पा-पकरे बिन सुख नही होवत पा-पकरों दिन रैन ॥१३७॥

किसी ने पूच्छा कि तेरा आहो जलाल कितना है ।
किसी ने पूच्छा कि तेरा धन और माल कितना है ।
किसी ने पूच्छा कि तेरा कुटुम्ब परिवार कितना है ।
मगर यह न पूच्छा कि तेरा धर्म से प्यार कितना है ॥१३८॥

जिमी पनिहारी जेवरी[1] खेंचत कटेपखान[2] ।
अक्षर अक्षर के पढ़े मूर्ख होत सुजान ॥१३९॥

हाथ पसारे पांव पसारे और पसारों गात ।
यां तो बड़ो समुद्र है तो कहन सुन्न की बात ॥१४०॥

सूमनी पूच्छे सूम से तेरा किस विध वदन मलिन ।
क्या कुछ हाथ से गिर पडा क्या काहू कुछ दीन ।
न कुछ हाथ से गिर पड़ा न काहू कुछ दीन ।
देता देख्या और को मेरा इस विद वदन मलीन ॥१४१॥

मिश्री खाते दान्त घीसे तो घिसन दे ।
धर्म करते लोकी हँसे तो हँसन दे ॥१४२॥

धर्म काम में धन गया मुक्ति हेत गये प्राण ।
तप में यौवन गया तीनों गये न जान ॥१४३॥

जाट भजो गुजर भजो चाहे भजो हीर ।
उस मालक के नाम में सब जाती का सीर ॥१४४॥

कहीं जन्में कहीं उपन्ने कहीं लडाये लाड़ ।
मालूम नहीं किस खाड़ में जा पड़ेंगे हाड़ ॥१४५॥

कचा भला तो बैंगन पका भला आनार ।
प्रीतम तो पतला भला मोटा जट ग्वार ॥१४६॥

आंख झमाका मार लो दर्शन से ही काम ।
ज्यों बोहु नर मूढ़ है जो चाम से घिसे चाम ॥१४७॥

---

१ रस्सी २ पत्थर

जब तू आया था दुनियां में तो क्या लाया था थैली भर के ।
जब जायगा इस दुनियां से तो क्या ले जायगा नेऊजी भर के ।।१४८।।

तन की भूख तीन पांव बड़ी बढ़ाई सेर ।
मन की भूख अनन्त हैं गल जाये मेरू सुमेरू समीर ।।१४६।।

धन देही में मन हैं पंखे में पौन हैं ।
कहे कबीर सुनो भाई साधों बैठे नू देगा कौन ।।१५०।।

वर्षेगा मेहीं लगेगी झडी, पैसे का अनाज विकेगा घडी ।
वर्षेगा मेहीं लगेगा रगशाहो के शाह नंगों के नंग ।।१५१।।

गृस्थी का सग न किजे दु:ख अपना रोय ।
वोह तो पडा तृष्णा के वश में पति जन्म क्यों खोये ।।१५२।।

कांटा कंकर भाटा अ्रूट ग्वार ।
साधु आता देख ने इता हुवे हुशियार ।।१५३।।

बारहां कोस पे बोली वदले वन फल वदले पावयां ।
मगर पचीस योवन वदले लक्षण न वदले लाखां ।।१५४।।

जो दश बीस पचास भये, होवे हजार लाख करोड़ की चाहा जगेंगी ।
अरब खरब पृथ्वी पति होने की चाहा जगेंगी ।
मृत्युपताल का स्वर्ग का राज किया तृष्णा अधिक ही अधिक लगेगी ।
सुन्दर दास सठ संतोष विन, तेरी तो भूख कबून मिटेगी ।।१५५।।

तृष्णा हत्याचार करावे, तृष्णा सक ज्ञान घटावें ।
तृष्णा करे फजिहत, तृष्णा कैद करावें ।।१५६।।

तृष्णा शीश कटावे तृष्णा नर्क ले जावे ।
माता पिता अरुसज्जन तृष्णा गिने न एक ।।१५७।।

ज्ञानी कहे सम्मताधारों प्रकटे गुण अनेक।
सम्मता धारी पहुँचे मोक्ष में अनेक ॥१५८॥

माता कहे मेरा पूत सपूत के बहिनी कहे मेरा सुन्दर भैया।
तात कहे मेरा है कुलदीपक लोक में लाज अधिक बढैया।
नारी कहे मेरा प्राणपति जिनके जाके मैं लेऊँ बलैया।
कवि गंग कहे, सुनो शाह अकबर जिनके गांठ में सफेद रुपैया ॥१५९॥

औरंगजेब को भी जिसने, नाकों से चने चबा डाले।
वे दुर्गादास महान इसी मरूधर के ही थे मतवाले ॥१६०॥

गढ के फाटक के उपर से जिसने घोड़ों को कुदा दिया।
उस अमरसिंह राठौड़ वीर ने शाहजहाँ का छका छुड़ा दिया ॥१६१॥

कविता में करों शत्रु के संहार की बाते।
सुनने दो कथा कार से अंगार की बातें।
कर लेंगे किसी और समय प्यार की बातें।
इस वक्त करो तोप की तलवार की बाते ॥१६२॥

बिना एकता ससार मे पाता विजय कोई नहीं।
बिना एकता मन काय बाचा मोक्ष भी मिलता नहीं।
है कौन सा ससार में सुख एकता वश में जिसे करती नहीं।
आतक भी है कौन सा एकता वश में जिसे करती नहीं ॥१६३॥

जंगल में जर लूटे एकला आभन भील।
बसती मे लूटे बनिया वैश्या और डाक्टर वैकिल ॥१६४॥

कीवाड़ की कील जगल में भील।
आकाश मे चील राज्य मे वैकील ॥१६५॥

गधे लड़े लातो से मूर्ख लड़े हाथों से ।
श्वान लड़े दान्तों से पण्डित लड़े बातों से ।।१६६।।

भाड सीटियों की गोट बाटियों की ।
लड़ाई लाठियों की सेवा साथियों की ।।१६७।।

कर्मों के लिहाज नहीं नागों के लाज नहीं ।
रंक के राज नहीं मन के पाज नहीं ।।१६८।।

हाकमी गरम की दुकानदारी नरम की ।
बहू बेटी शर्म की साहुकारी मर्म की ।।१६९।।

'सम्यक्त्व रत्न का वर्णन'

एक देखी हैं मैंने अजब सुन्दर भाई बहीन ।
जन्म लेवे एक ही घर में नहीं हाथ पेर नही धड़ नहीं सिर ।
बिना मथा जन्म ले सोचों चर्त्व नर[1] तीन पिता है ।
उसकी मैं देता हू खबर लेते ही जन्म वोह करे हुन्नर ।
काटे तीन[2] पुरुष एक नारी[3] का सिर ।
उस सुन्दर का तन नहीं आता नजर ।।१७०।।

आओ बैठों आंगते घर है तुम्हारा ।
खिचड़ी लाओ गांठ की हण्डा हमारा ।
दोनो मिल के जीमेंगे घी भी तुम्हारा ।
कोई आन के पूच्छेंगा मेहमान हमारा ।।१७१।।

---

१ ज्ञान, दर्शन चरित्र २ क्रोध, मान, लोभ, पुरुष

३ एक नारी का मयाना माया

सामायिक में समता बाई गूड की बेली कुत्ता खायें ।
ऊँठू तो सामायिक जाये न ऊँठू तो गूड़ की भेली जायें ।।१७२।।

पगड़ी गयी आगडी फैंटों गयो फाट ।
तीन दमड़ियां की टोपडी महीना चाले आठ ।।१७३।।

राम नाम भजया नही भजाया गाता गोता में ।
हल खाडतां ने मौत आ गयी माला रह गई माथे में ।।१७४।।

खीर खुलायी साध को देखों पुण्य प्रताप ।
शालभद्र दूसरे जन्म भूपत पर राखी छाप ।।१७५।।

जीवन भर हृदय से भगवान का स्मरण करो ।
जैसे कर्म किये जीवन भर वैसा मन में हो विचार ।
अन्त काल का भाव मनुष्य का होगा उसके ही कर्मानुसार ।
अब समय है तू कर ले सोच विचार जीवन का यही सार ।।१७६।।

हमने जाना था कि खायेंगे बहुत जमी वहु माल ।
ज्यों का त्यों ही रह गया पकड़ ले गया काल ।।१७७।।

आस पास योद्धा खड़े सभी बजावे गाल ।
मध्य महल से ले चला ऐसा काल कराल ।।१७८।।
रुप राशि पर गर्व न करना ओ फूलों की रानी ।
समय रेत पर उत्तर गया कितनों ही मोती का पानी ।।१७९।।

रहना भाइयो में चाहे वैर ही हो, खाना गेहूँ का चाहे कहर ही हो ।
चलना रोड का चाहे फेर ही हो,
जीवन मां के हाथ का चाहे जहर ही हो ।।१८०।।

छिदा दन्ता कोइक मूर्खा कोइक निर्धन टाट का ।
रूपवंती कोइक सीता कोइक काना साधका ।।१८१।।

दुल्हा दुल्हन से राजी, ब्याही धन से राजी जान जीमण से राजी ।
सासू आभूषण से राजी जठानी ननन्द राजी साडी से ।।१८२।।

ॐ श्री को पूच्छते कहाँ तेरा मुकाम ।
अन्दर बाहर सब जगह अर्थ शून्य में जान ।।१८३।।

संकल्प जिसका सिद्ध हो, फिर कार्य उसका क्यो रूके ।
जिसको मिले चिन्तामणि वोह निर्धन क्यों हो सके ।।१८४।।

एक सेठ का अनुचित कार्य का वर्णन

देख्या जी तो चाल्या नही चाल्या ओर जना ।
चाल्या जी तो तोक्या नही, तोक्या ओर जना ।
तोक्या जीता खादा नहीं खादा ओर जना ।
खादा जी तो कूटाना नहीं, कूटाना ओर जना ।
कुटाना जीतो रोया नही, रोया वोही का वोही ।।१८५।।

जिसने सुनया था उसने देख्या नही, देखन गये दो ओर जनें ।
जिसने देख्या था वोह दौडे नहीं दौडे गये दो ओर जनें ।
जो दौडे थे उन्होंने ऊठाया नहीं ऊठा गयो दो ओर जानें ।
जिन्होंने ऊठाया था उन्होंने खाया नहीं खा गया कोई ओर जना ।
जिसने खाया था वोह पकडा नही पकड लिया कोई ओर जना ।
जोपकडा था येह मारा नही, मार दिया कोई ओर जना ।
मारा था वोह रोया नही, रोया दो ओर जनें ।
जो रोये थे वोह मरे नही, मर गया कोई ओर जना ।।१८६।।

ा सो खाल्या नहीं चाल्या सो न उठाया, उठाया सो खाया नहीं ।
ा सो न पीटाया, पीटाया सो रोया नहीं, रोया देख्या सोया ॥१८७॥

निद्धि आठों सिद्धियां आगे खडी सेवन करे उसे ।
प्राप पूरण कामल हो, रहे कमी फिर क्यों कर उसे ॥१८८॥

ा किजे साधु की हरे सर्व व्याधी ।
छी संगीत नीच की आठोपहर उपादी ॥१८९॥

में पडे कब तक रहोंगे तोड नूतन जाल कों ।
सन्त जन ही जानते है धूर्त मन की चाल कों । १९०॥

ड घाट घडा न डूबे, पंक्षी प्यासो जाय ।
त पानी चढ़ गयों घोड़ा मल मल न्हाय ॥१९१॥

पडी थी रात को भीजों सब वन राय ।
न पानी चढ़ गयों पंक्षी प्यासों जाय ॥१९२॥

तुम्बे अज्ञान के कौन यत्न तू कीन ।
गोरी के अंग पर बैठ बैठ रस लीन ॥१९३॥

तजियों जगल तजियों तज्या सारा संग ।
ा कटा आगे धरियों तब लगा अंग से अंग ॥१९४॥

ाता था मोक्ष मार्ग को कर्मों ने आ घेरा ।
ा देकर राह भुलाई लूट लिया सब ड़ेरा ॥१९५॥

ा करो तुम पूंजा, तिरथ करो हजार ।
गरीब को ठुकराया, तो सब कुछ है बेकार ॥१९६॥

थोडी भगति बहुत अहंकार ऐसे भगत मिले अपार ।
कहे कबीर जीत गया अभिमान सो भगत भगवंत समान ॥१९७॥

मारवाड़ मनसुबे डूबी पूर्व गाने से ।
खान देश खाने से डूबा दक्षिण डूबा दाने से ॥१९८॥

कच्छ में माना घणा झालावाड माया घणी ।
काठीवाड मे क्रोध घणा गुजरात में लालच घणा ॥१९९॥

भोजन तो दिन को भलो रात न लागे अंग ।
नियमित जीवन जो चले रोग न आवे संग ॥२००॥

बडे सवेरे ऊठने से, तन में फूर्ति आय ।
मन प्रसन्न रहने से रोग न आने पाय ॥२०१॥

आत्मा गुण का वर्णन

प्रशमरस झरन्ती आत्मभ्रान्ति हरन्ती ।
जगतहित करन्ती पथ्य सौने ठरन्ती ।
भव जलतरणी जो श्रेष्ठ नौका समाणी ।
शिव सुख जननी ते वन्दू जिनेन्द्र वाणी ॥२०२॥ रायचन्द

भोजन भजन खंजाना और नारी ।
येह पड़दे के अधिकारी ज्ञानियों ने ऐसी विचारी ॥२०३॥

नवकार मन्त्र ही मन्त्र है सब मन्त्रों का सार ।
जो इसका सुमरण करें हो भव सागर पार ॥२०४॥

आनन्द प्रद श्री वीर हैं जग गुरु जगदाधार ।
विघ्न हरण मगल करन नाम सदा जयकार ॥२०५॥

श्री वीतराग उपदेश में धर्म चार प्रकार ।
दान शील तप भावना साधन के शिवद्वार । २०६।।

गंगा गयां गल मुकदी नहीं भवां सौ सौ वारी नाहिये ।
गया गयां गल मुकदी नहीं भवां सौ सौ पिण्ड भराइये ।
मक्के गयां गल मुकदी नहीं सो सौ हज्ज कराईये ।
बुल्लेशाह गल तां मुकदी ये में नूं दिलों भुलाइये ।।२०७।।

सांप लड़े बिच्छू लड़े दवा असर कर जाय ।
जिसको लड़ जाय बानियाँ तड़फ तड़फ मर जाय ।।२०८।।

बनिया मित नही वैश्या सती गधा हंस नही कऊवा यति ।
जिसको हो दुष्मन की दरकार बनियें को बनावे अपना यार ।।२०९।।

दया धर्म येया धर्म न कोई प्रभु वीर सम्वाणी ।
अभयदान येया दान न कोई क्षमा येयी कुर्बाणी ।।२१०।।

बकरियाँ नूं कट कट खायी दया ना दिल में धारी ।
ओ भी तैनूं खायेंगी जद आएँगी तेरी वारी ।।२११।।

दे दिया सो दुध बरावर, मांग लिया सो पानी ।
खींच लिया सो खून बरावर येह प्रभु की वाणी ।।२१२।।

सजीव पूच्छे अजीव से मुझे कुछ दो ।
तेरा विठाया तो में बैठा है तेरी एक फूटी के दो ।।२१३।।

पत्थर पूजन हरि मिलें मैं पूजूं पहाड़ ।
उससे तो चक्की भली पीस खावे संसार ।।२१४।।

इश्क मुश्क खासी खुजली खैर खून मद पान ।
अष्ट छुपाये न छुपें प्रकट होय मैदान ।।२१५।।

पाप कहे श्रीराम से मुझे ठोर बताओ ।
जो प्रभु भजन में मौन रहे उसके मुख घुस जाओ ।।२१६।।

खोद खोद धरती सहे काट काट बनराय ।
कठोर बचन सन्त सहे और किसी से सहा ना जाये ।।२१७।।

धर्म करता संसार सुखी धर्म करता निर्वाण ।
धर्म पंथ साधन बिना, नर तिर्यञ्च समान । २१८।।

विश्व को प्यारा है वोह जिसको है प्यारा संगठन ।
कौम की किस्मत का है ऊचा सितारा संगठन ।।२१९।।

जब ही नाम हृदय धरयों भयों पाप को नाश ।
जैसे चिनगारी अग्नि की परी पुराने घास ।।२२०।।

धर्म बढ़ता धन बढ़े धन बढ़ मन बढ़ होय ।
मन बढ़तां मनसा बढ़े बढ़त बढ़त सब कोय ।।२२१।।

धर्म घटतां धन घटे, धन घट मन घट होय ।
मन घटतां मनसा घटे घटत घटत सब कोय ।।२२२।।

पारा सारा न मरे, गन्धक तेल न दें ।
सुवरण नहीं जर्दी तजे कैसा ही गुरु होय ।।२२३।।

पारा भी सारा मरे गन्धक भी तेल हूं देय ।
सुवरण भी जर्दी तजे जो पूरा गुरू होय ।।२२४।।

खेती पाती बनता अरू घोड़े का तङ्ग ।
अपने हाथ सम्वारिये लाख लोग हो संग ।२२५।।

मौत मांदगी मुकदमा चौथा मंदा रूजगार ।
येह जिसके पिच्छे पड़े, उसकी मिट्टी ख्वार ।।२२६।।

असर उपदेश का क्या हो जब जमी श्रद्धा नहीं मन में ।
दिखायी मुँह कहाँ से दे गर जमी हों मैल दर्पण में ।।२२७।।

मन्दर मसितां गुरुद्वारे ते मकान धर्म स्थान ।
पेट खातर कढ बैठे बडी बडी दुकान ।।२२८।।

तिल भर मच्छली खाय के, करोड खण्डी स्वर्ण का देवे दान ।
काशी मे जा करोत करे, तो भी नर्क सतावें जान ।।२२९।।

जागते रहना, सोने से बेहतर हैं ।
सब जातों में सेवा भावी मेहत्तर हैं ।।२३०।। महात्मा गांधी

चुके तीर कमान, चुके गोली और गुला ।
चुके मज्जलिस दार पढा पण्डित और मुल्लां ।
कहे गिरधर कविराय कला नटवी भी चुके ।
सो सो जुत्ते खाये चुगल खोर कभी न चुके ।।२३१।।

कूडिये वेख रंजतेडा कच्चा, किता भेद दिखोंदा खोल खिलारायी ।
मन्सूर ने भेद नूं ज्यार किता, उन्नूं तुरत सूली उत्ते चढावायी ।
यूशफ वोल के भाइयांदा भेद दिता उन्नूं खुहूं दे वीच उतारायी ।
मैंना वाले के पिंजरे कैद हुई तोता पिंजरे वीच वाडयायी ।
रश्म इस जहाँ दी चुप रहना जेड़ा वोलयायी सोही मारयायी ।
भेद दसना मर्दंदा काम नहीं मर्द सो ही जो वेख के दम घुट आये ।
बादशाह ना भेद सन्दूक का खुले पाहवें जानदा अन्दरा टुट आये ।।२३२।।

मैं पापी गुनाह् गार वाली पेयी फिकरां गमां दे सोच कहर बेडी ।
ऐसियां करनियां मेरियां नाल छलां गोते खावदी पेयी बेशुमार बेडी ।
केहरी कर्मा ऐसे कुहूमन केहेर अन्दर जित्थों निकल न सकदी वाहर बेडी
नरख्वदा प्यारा कोई मेहर बान मलाह् मिलदा न होमदी मेरी ए पार
बेडी ।।२३३।।

जो किसेदे वास्ते खू पुटे खड़ा ओसदे लिये तैयार हो वे ।
देवे दु:ख जो किसे दी आत्मा नूं दु:ख उसनूं अन्तदी वार होवे ।।२३४।।
विजे कड़े जो किसे दे राहा अन्दर उन्हूं चूभन के लिये आगे खार होवे ।
होवन लख सज्जन पाहवें जग उत्ते, पर मुश्किल वनी ते कोई न यार
होवें ।।२३५।।

बन्दे यहां लग राहा वहां लगा रहो ।
मत हो डामा डोल उखड़े की कौडी नहीं ।
जमें केलाखों मोल, ज्ञान दर्शन में सुख जनमोल ।
मन, बचन कामा का टल जाय दु:ख का खगोल ।।२३६।।

हँसना वनिया खसना चोर कुवृधी कायाथ ।
कुल को बोर, नौकर कम चोर वुढा कमजोर ।।२३७।।
रूहियां सुख से सोइयां बीयां सुख से खाय ।
लोहा लकड बेच के अन्म आकारथ जाय ।।२३८।।
निष्किचन इन्द्रियदमन रमन राम इकतार ।
तुलसी ऐसे संतजन विरले यह संसार ।।२३९।।
भाका पाशा बैश्या ठग ठाकर सुनियार ।
येह नव किसी के मीत नहीं बन्दर बैध कलाल ।।२४०।।

घट के पट में भगवान बसे, पर मोह कपाट लगया है ।
गुरु बोध से जिसने खोल दिया उसने शुभ दर्शन पाया है। २४१॥

चिन्ता ज्वाला शर्रीर बन दावा लग लग जाय ।
प्रगट धुवाँ नहीं देखत उर अन्तर धुवाँ धाये ।
उर अन्तर धुवाँ धायें जरे ज्यों काँच की भट्ठी ।
जरगो लोहू माँस रह गई हाड की ठट्ठी ।
कह गिरिधर कविराय सुनों रे मेरे मित्ता ।
वे नर कैसे जिये जाहि तन व्यापै चिन्ता ॥२४२॥

बनिया अपने बाप को ठगत न लावे देर ।
निस बासर (दिन) जननी ठगे जहाँ लिये अवतार ।
जहाँ लियों अवतार मास दस उदरे राखे ।
गुरु से करे विवाद आप पण्डित हैं भाखे ।
कह गिरिधर कविराय वैंच हरदी और धनिया ।
मित्र आन ठग लेही जहाँ लग पावे बनियाँ ॥२४३॥

गुण के ग्राहक सहस नर बिन गुण लेह न कोय ।
जैसे कागा कोकिल शब्द सुने सब कोय ।
शब्द सुन सब कोय कोकिल सबे सुहावन ।
दोऊ को इक रंग कागा सब भये अपावन ।
कह गिरिधर कविराय सुनों हे ठाकुर मन के ।
बिन गुण लेह न कोय सहस नर ग्राहक गुण के ॥२४४॥

नौ पातो, नौ वशकारो नौ का संग निवार ।
नौ तत्व का निर्णय करो सो विष्णु ब्रह्माचार ॥२४५॥

गढ़पति रहे ना गढ़ रहे रहा ना सकल जहान ।
कहा मान नृप दो रहे नेकी बदी निदान ।।२४६।।

धन छोड़ के नंगे गए अकबर शाहजलाल ।
कहे लाल इक पलक में भया बिगाना माल ।।२४७।।

सोता सोता क्या करो सोता आवे नींद ।
काल सिराने यों खड़ा तोरण आले बींद ।।२४८।।

यश जीवन अपयश मरण भूल करो मत कोय ।
कहो रावण क्या ले गया क्या कर्ण गया खोय ।।२४९।।

तुलसी आहा गरीब की कभी न निष्फल जाय ।
मुए पशु की खाल से लोहा भस्म हो जाय ।।२५०।।

बहुत पढ़े तो क्या हुआ बोले नहीं विचार ।
हने परायी आत्मा जीभ वहे तलवार ।।२५१।।

पीपा पानी एक है पनिहारिन अनेक ।
बासन में विग्रह भयों नीर एक का एक ।।२५२।।

कंचन के आसन बासन सब कंचन के ।
कंचन के पलंग अमानत धरे रहे ।
हाथी हथशालन में घोड़े घुड़शालन में ।
बन्द जामदानन में कपड़े पड़े रहे ।
बेटा बहु बेटी अरु दौलत का पार नहीं ।
जौहरात डिब्बों पर ताले ही जड़े रहे ।

यह देह छोड़ कर लम्बे हुए प्राण जब ।
कुल के कुटुम्बी सब रोते ही खड़े रहें ।२५३।।

ुर पूत जो देय, तो खसम काहे को किजे ।
ामीदेव जो देय दु:ख काहे को सहिजे ।।२५४।।

ले आये जहाँ से तो आये नगन ।
फिर भी जाओगे अन्त नगन के नगन ।
तो देवेंगे फूँक लगा के अगन ।
या कि कर देंगे मिट्टी में खोदकर दफन ।
ही चीजों का साथ चलेगा वजन ।
शुभ अशुभ कर्म जो जो कि बान्धे है मनन ।
ो जिस दिन करोगे यहाँ से गमन ।
करो उस पे अमल जो है सच्चा वचन ।
ध और लोभ की लग रही है अगन ।
देख लो हाथ में लेके दर्पन अपना बदन ।।२५५।।

ावें जाओं द्वारका भावें जाओं गया ।
कह तकवीर सुनो भाई सब में मोटी दया ।।२५६।।

ान्या मान्या कुरं तू चेला में गुरं ।
रुपया नारियल घर भावें डूब भावें तर ।।२५७।।

ाडी देय सुहाग रांड घर घर क्यों होवे ।
तीर्थ उतारे पाप तो कोढया घर क्यों रोवे ।
'व दियां जी ऊबरे तो सुलतान क्यों मरे ।
मन्त्र–यन्त्र हो सिद्ध तो घर घर मंगता क्यों फिरे ।।२५८।।

हाथी दान्त के खिलौने जगत के आवें काम ।
बाघों का बाघाम्बर महेश बिस लायेगा ।
मृगन की खाल की बिछावत है जोगीराज ।
वृषभ का चर्म कुछ अन्न निपजायेगा ।
करेले की खाल में सुगन्ध है तैयार होत ।
बकरे का चर्म कुछ पानी ही पिलायेगा ।
साम्भार के सटके तो बान्धता सिपाही लोग ।
गेंडे की तो ढाल राजा राना मन भायेगा ।
नेकी और बदी दो ही संग चले मियाराम ।
मनुष्य का चर्म कछु काम नहीं आयेगा ।।२५९।।

करत प्रपंच और पंचन के वश परयों ।
पर दारा दरे भय आने न बुरायी को ।
पर धन हरे, पर जीवन की करे घात ।
मद्य मांस खाय, नहीं काम है भलाई को ।
होयेगा हिसाब तब मुख से न आवे जबाब ।
सुन्दर कहत लेखा लेगा रायी राई को ।
यहां तो करे विलास यम का न ताको त्रास ।
वहां तो नहां है कछु राज पोपां बाई को ।।२६०।।

कानों से प्रभुजी की वाणी क्यों नहीं सुनता ।
तेरे दोनों हाथों से स्मरण क्यों नहीं करता ।
मुख दिया तुझको प्रभु ने क्यों नहीं भजता ।
तेरी छाती में शक्ति है तपस्या क्यों नहीं करता ।

सुन ? चेत बेइमान अकल एक खासी ।
इस जिन्दगानी में दो दिन का तू बासी ॥२६१॥

आया न दिखे पारिधी मारिया न दिखे बान ।
मैं हे ! सखी पूच्छती किस विधि तजे प्राण ॥२६२॥

जल थोड़ा नेह घना चले प्रीत के बाण ।
तू पी तू पी कर मरे, खप गये दोनों जुवान ॥२६३॥ हिरण, हिरणी

सिंह की साधुवृत्ति एवं बन्दर की सेवा भक्ति का परिणाम

नहीं खड़ा नहीं खोचरा[1] स्वामी कौन स्वभाव ।
अधर अधर क्यों चलत हो फूं.क फूंक दो पांव ॥२६४॥

परमस्नेही साधु हैं ज्यूं दूधन में घी ।
अधर अधर यों पग धरां रखे मरे न कोई जीव ॥२६५॥

ऐसे हो तो खड़े रहो पुरो मेरी आस ।
तरुवर के फल तोड़ के लाऊं तुम्हारे पास ॥२६६॥

मूर्ख कपी समझा नहीं सिंह कैसे फल खाय ।
आते ही धोखे रहा मुंह में लिया उठाय ॥२६७॥

जब बन्दर हंसने लगा सिंह पूच्छत हे एम ।
आया काल के डाढ में फिर हंसता हैं केम ॥२६८॥

तब बन्दर ने उत्तर दिया मेरे मन की गूंज ।
मैं हंसता ज्यूं तू हंसे बात सुनाऊं पूंज ॥२६९॥

---

1 जमीन उंची नीच नहीं

सिंह तब कुछ समझा नहीं मुंह दिया पुलकाय ।
जिस तरूवर का वानरा उस पर बैठा जाय ।।२७० ।

अब बन्दर रोने लगा सिंह पूंच्छत है एम ।
गया काल की डाढ से अब रोवत है केम ।।२७१।।

रोऊं तुम सम साधु को भोरा मिलसी आये ।
जानी दिसा का साधुजी वानी दिसा में जावे ।।२७२।।

हर हर हर हर क्या करों हर हिरदय के मांय ।
आडी टाटी कपट की ताते बूझत नांय ।।२७३।।

बुढ़े हुवे फरीदखां नैना जोत गई ।
गज का घूंगट काडदी आज कांगी की ओट करी ।
बुढे हुवें फरीदखां नैना जोत गई ।
थोथे पड गये नारियल और गिरियां काढ ली ।।२७४।।

भक्त-भाव भादों नदी, सब चलती गहराय ।
सरिता सोई जानिये जेठ मास ठहराय ।।२७५।।

बड़े घर की बेटियां बडी होतीं है ।
बिगडी बात को सुधार लेती हैं ।।२७६।।

पतिव्रता फाटा लता नहीं गला मे पोते ।
भरी सभा में ऐसी दीपे हीरां कोसी जोत ।।२७७।।

अपतिव्रता फाटा लता घन बांका दीदार ।
कहे कालू किस काम का वैश्य का शृंगार ।।२७८ ।

नारी पराई के अपनी भुगते नरके जाये ।
आग आग सब एक सी देती हाथ जलाये ॥२७६॥

नारी नासवे तीन गुण जो नर पासे होय ।
भक्ति मुक्ति और ज्ञान ध्यान में बैठ सके नहीं कोय ॥२८०॥

अमर मरन्ता मैं सुन्या, ढोर चरावे धनपाल ।
लक्ष्मी छाणा बीणती, धन धन ठन ठन पाल ॥२८१॥

आठ पहर चौसठ घड़ी मो मन में यही अंदेश ।
या नगरी प्रीतम बसे मो जानो परदेश ॥२८२॥

बाहर भीतर समता राखों जैन में फहन[1] न खटसी रे ।
कायर तो कादा में खूचियाँ शूरा पार उत्तरसी रे ॥२८३॥

जो भवरतन चिन्ता मणि सरखों बारम्बार न मिलसी रे ।
चेत सके तो चेत रे जीवडा एवो जोग न मिलसी रे ॥२८४॥

जितनी वस्तु जगत में नीच नीच ते नीच ।
उसमें मैं हूँ अधम अतिफंस्यों मोह के बीच ॥२८५॥

देव गया द्वारका पीर गया मक्का ।
अंग्रेजों के राज्य में ढेढ़ मारे धक्का ॥२८६॥

पाँच सात मिल सहेलियाँ हिल मिल पानी जाय ।
ताली दे खड़ खड़ हँसे चित्त गगारियाँ माँय ॥२८७॥

अवधूत देश हमारो नियारो ज्ञान विचारों ।
यहाँ ज्यां जन्म मरण नही, नहीं विषय विकारों ॥२८८॥

---

१ ढोंग

अरे चाटते जूठे पते जिस दिन मैंने देखा नर को ।
उस दिन सोचा क्यों न लगा दूँ आज आग इस दुनियाँ भर को ।।२८९।।

सत संग की आधि घड़ी सुमिरन वर्ष पचास ।
वर्षा बरसे एक घड़ी रहट फिरे बारह मास ।।२९०।।

सोना सज्जन साधु जन टूटी जुरें सो बार ।
दुर्जन कुम्भ कुम्हार का एकै धक्का दरार ।।२९१।।

पारस परसत कचन भई सुवर्ण भई तलवार ।
ये तीनो नहीं बदला मार काट और धार ।।२९२।।

जा घट प्रेम ना संचरे सो घट जान मसान ।
जैसी खाली लुहार की श्वास लेत बिना प्राण ।।२९३।।

सूली उपर घर करे विष का करें आहार ।
ताको काल क्या करे आठो पहर होशियार ।।२९४।।

ज्यों तिल भीतर तेल है ज्यो चकमक में आग ।
तेरा प्रीतम तुझ में जाग सके तो जाग ।।२९५।।

कबिरा आप ठगाई और न ठगिएँ कोय ।
आप ठगे सुख होत है और ठगे दु:ख होय ।।२९६।।

जीव दया में खरचतां रोवे बहने बनावे ।
यश शोभा में निर्थक धन खोवे वृथा रोवे ।।२९७।।

जिन के धन होता कई करोडी ।
उन के संग नहीं एक कोडी ।
कई करोडी दल लाखों ही हाथी ।
वो भी परन्तु गये नंगे नहीं कोई साथी ।।२९८।।

हरि हलधर चक्री नर राशी ।
अन्त सब ही समसाण के वासी ॥२९९॥

बान्ध लिया नाना और मामा लम्बी कर के पूंच्छ ।
कहो जोर अब कहां गया कहे तान कर मूंच्छ ॥३००॥

प्रथम सात अक्षर पढो पांच पढो चित्त लाय ।
सात सात नव अक्षरा पाप सकल क्षय होय जाय ॥३०१॥

हरिया माला सांस की जो नित फेरी जाय ।
काटे फंदन कर्म का जीव न जमपुर जाय ॥३०२॥

शब्द शब्द तू क्या करे शब्द को हाथ न पाव ।
एक शब्द औषध करे एक शब्द करे घाव ॥३०३॥

बकरी बच्चा लाख लाखें विचारां ।
सिंहण बच्चा एक एकें हजारां ॥३०४॥

दुर्जन की करुणां बुरी भलो सुजन का त्रास ।
सूरज जब गरमी करे तब वर्षन की आस ॥३०५॥

जाओं भैया प्यारे भैया रहेगा नाम तुम्हारा ।
जब तक चमके चान्द सितारें चमकेगा नाम तुम्हारा ॥३०६॥

धर्म समर में कभी भूल धैर्य नहीं खोना होगा ।
वज्र प्रहार भले शिर पर हो किन्तु नही रोना होगा ॥३०७॥

आगे आगे दो बले पिच्छे हरिया होय ।
बलिहारी उस वृक्ष की जड़ काटे फल होय ॥३०८॥

ज्यों सब रतनादिक सदन मही बिन और न कोय ।
त्यों शिव सुख रतने भरी तुम आत्मा मन सोय ॥३०९॥

ज्यों अंकुर से मही भरी, जल बिन नहीं प्रकटाय।
त्यों तुज गुण अंकुर सब प्रबचन बिन सब छाया ॥३१०॥

ज्यों सारग लखें नहीं भरी सुगन्ध निज देह।
त्यो तू निज गुण नहीं लखें शुक्ल ध्यान बिन देह ॥३११॥

हम खाये पिये मौज करे व्यापार करे नित्य गल्लों का।
सामायिक प्रतिक्रमण करना काम येह निठल्लों का ॥३१२॥

आजकल के अधम विचारों का वर्णन

नरमाई दिली करड़ाई किष्ण गढ़ मठोड़ मेवाड़ मालवे में चतुराई है।
रहना अजमेर खाना विकानेर कमाई कलकत्ता मौज बम्बई भारी हैं।
अमीरी आगरा गरीबी गुजरात लाज मरियाद उदय पुरी प्यारी है।
कहे जड़ाई मारवाड की घड़ाई जयपुर की छबी देख स्वर्ग पुरी हारी है
॥३१३॥

ऐश्वर्य धन साधन भोग के हैं सिनेमा विषय विकार के हैं।
देखा विचार कर कारण सब रोग के है और कान आंख विकार के हैं
॥३१४॥

सुने शिखर के महल में सद्गुरु कृपा पाई कुटी।
देखी वहां संतोष औषधी पीते ही व्याधी मिटी ॥३१५॥

कौशल्य उसका पान कर नहीं देर का कुछ काम है।
पिया जहां तहां देखले तू आप ही सुखधाम हैं ॥३१६॥

इस लोक की उस लोक की लाखों करोड़ों कामना।
शुद्धात्म कर्मो से रहित कर मालीन मिथ्या भावना ॥३१७॥

अज्ञान कारण जन्म का अज्ञान से संसार हैं ।
अज्ञान से होवे मरण, अज्ञान दुःख भण्डार हैं ।।३१८।।

भरण पोषण की जिसे चिन्ता लगी भरपूर है ।
उससे परमपद सैकडों लाखों ही कोसों दूर हैं ।।३१९।।

पुरुषार्थ को करो सदा नर, कर्म कर्म तू क्या गावे ।
ऐसी वस्तु जो नहीं दुनियां में पुरुषार्थ से ना पावें ।।३२०।।

बहुधंधी बहुवेटियां दो नारी भरतार ।
बाने मत मारजों ठाकरां ज्यांने मार्या करतार ।।३२१।।

सौभग्यमल भुरटा बीज बिना नही रे बीज न भुरटा टार ।
मुरगी बिन अण्डा नहीं प्यारे या बिन मुरग की नार ।।३२२।।

नाक छिदाई आपनी रति कनक के काज ।
तुलसी ऐसी त्रियन को कहां मरम कहां लाज ।।३२३।।

वैभव गया सुख खो गया फैली अन्धेरी रात रे ।
चिन्ता चिता तेरी आगे देखती अब बाट रे ।।३२४।। चिन्तामणी

हाथ छुड़ाय जात हो निर्बल जान के मोय ।
हृदय से जब जायगा बली समझूंगा तोय ।।३२५।। बिल्वामंगल

इक बार भगत प्रेम ईश्वर दा जेड़ा सचे दिल नाल बन जांदा ।
मिट जांदे संस्य शरीरां दे वैकुण्ठ अमर पद जांदा ।।३२६।।

दिलदार कमंदा वालेदा लग सीने तीर नीसंग जांदा ।
लूट जांदे मान हुसनांदे सोहनियां गली तों लंग जांदा ॥३२७॥

रघुवीर सिंह

राजा राणा छत्रपति हाथियन के असवार ।
मरना सबको एक दिन अपनी अपनी बार ॥३२८॥

दल बल देवी देवता मात पिता परिवार ।
मरती विरियाँ जीव को कोई न राखनहार ॥३२९॥

दाम बिना निर्धन दु:खी तृष्णा वश धनवान ।
कही न सुख संसार मे सब जग देखा छान ॥३३०॥

जग वासी घूमें सदा मोंह नीद के जोर ।
सब लूटे नही दिसता कर्म चोर चहु ओर ॥३३१॥

चौदह राजु उतग नभ लोक पुरुष संठान ।
ता में जीव अनादि ते भरमत हैं बिन ज्ञान ॥३३२॥

धन जन कंचन राज सुख सब ही सुलभ कर जान ।
दुर्लभ है ससार में एक यथार्थ ज्ञान ॥३३३॥

मार्तण्ड के उदय से जगमग हुआ आकाश ।
क्या तारा क्या चन्द्रमा सबका छूपा प्रकाश ॥३३४॥

कहाँ गुण दोष पराये को देखूं ।
कमी क्या मुझ में दोषों की हैं ॥३३५॥

कथा पुराण श्रवण में मीठी नींद सदा आ जाती हैं ।
पड़ते ही विस्तर पै किन्तु चिन्ता मन को खाती हैं ॥३३६॥

कर्म की गति ऐसी गहन है रोने से क्या पाना ?
ज्ञानी कर्म की गति को जानता है समता से सब जाना ॥३३६॥

पहले जोड़ा संत संग तुका हुआ पांडुरंग[1] ।
भजन का तांता टूटे क्यो मूल स्वभाव छूटे क्यों ॥३३७॥

दिये गाली एक हैं पलटयां गाली अनेक ।
जो गाली देवें नहीं रहे एक की एक ॥३३८॥

आम फले पत राख के मट्ठ फले पत खोय ।
ताका पानी जो पिये पत्त कहां से होय ॥३३९॥

(तुलनात्मक बड़ा कौन)

१ एक बोला कि पृथ्वी बडी ।
अरे पृथ्वी काय की बड़ी वो तो शेष के सिर पर खड़ी ।

२ एक बोला फिर शेष बड़ा ।
अरे शेश काय का बड़ा वो तो शकर के गल्ले में लपट के पड़ा ।

३ एक बोला शकर बड़ा ।
अरे शंकर काय का बड़ा वो तो नन्दी पे खड़ा ।

४ एक बोला नन्दी बड़ा ।
अरे नन्दी काय का बड़ा वो तो कैलाश में खड़ा ।

५ फिर एक बोला कैलाश बड़ा ।
अरे कैलाश काय का बड़ा वो तो रावण ने एक तीर में उखाड़ा ।

६ फिर एक बोला रावण बड़ा
अरे रावण काय का बड़ा वो तो रामचन्द्र ने एक तीर में उखाड़ा ।

---

१ निराकार

७ एक बोला रामचन्द्र बड़ा ।
अरे रामचन्द्र काय का बडा वो तो साधु सन्तों के चरणों में पड़ा ।

८ एक बोला गुरु बड़ा ।
एक बोला चेला बडा ।
दोनो झगड़ा पडा ।

९ ज्ञानी बोला गुरु बड़ा ॥३४०॥

काशी जावे मथुरा जावे फिरता फिरे तमाम ।
जाय हिमा अल करे तपस्या नहीं पावे आत्मराम ॥३४१॥

भज ले राम नाम सुखधाम ।
तेरा पूर्ण हो सब तमाम काम ॥३४२॥

राम किसी को मारे नहीं सब से मोटा राम ।
आप ही मर जायेंगे कर कर खोटे काम ॥३४३ ।

बोली रूपी गोली भर तक तान तमचे मारी ।
बात काटती गात चरती लकड़ी जैसे आरी ॥३४४॥

कड़वा बोल मत बोलो कडवा बोल आत्मा को मालीन बनावे ।
गोली बर्च्छी तलवार भाले का घाव भर जावे ॥३४५॥

किन्तु कडवा बचन जीवन भर तड़फावे बेचैन बनावे ।
कडवा बोलने वाला दुर्गतियो में जावे फिर नर जन्म न पावे ॥३४६॥

देखा देखी लेवें योग बदनाम होवें लोग ।
घटे काया बढे रोग मनुष्य भव का होवे वियोग ॥३४७॥

जो बन्दा मरने से न डरे कर्मों के ऊपर विजय करे ।
वो चाहे सो करे पर मानव समाज का कल्याण करे ॥३४८॥

बाहर जमायी फूल बराबर भहर जमायी भाया ।
घर जमायी गदेहे बराबर जब चाहे तब लादा ॥३४९॥

सौंसरा सुख बासरा, दो दिनों का आसरा ।
पाँच दस तो कुछ कहों, नाक कटा के चाहे सारी उम्र रहों ॥३५०॥

तीर्थ सांसू तीर्थ सुसरा तीर्थ साले साली का ।
मात पिता को कुएँ में डालों बड़ा तीर्थ घर वाली का ॥३५१॥

खोत्यां बे खोत्यां आवे ऊरो खलोत्यां ।
कच्चियां ले आयेगा पक्कियां ले जायेगा ।
आवे नहियो मुकना तेने नहियो छूटना ।
तमाम उमर लकड़ियों से पीटना तू नहियो छूटना ॥३५२॥

भल्ला भल्लायी बुरा बुरायी कर देखों रे भाई ।
चिट्ठी मिली थी पण्डित को नाक कटायी नाई ॥३५३॥

दगा किसी का सगा नहीं कर देखों रे भाई ।
जिस जिस ने दगा किया हैं उसका ऊजड़ा घर देखों रे भाई ॥३५४॥

ऋतुओं के अनुसार आहार विहार ।
करना भी आरोग्य की कूंजी है ॥३५५॥

काली घणी करूप, कसतूरी कांटा तुलै ।
सक्कर बड़ी सरूप रोड़ा तुलै राजिया ॥३५६॥

भावार्थ—कस्तूरी बहुत ही काली होती है बदसूरत होती है। किन्तु तोलो माशों से काँटे पर तुलती है राजिया ? शक्कर अत्यन्त सफेद और खूबसूरत होने पर भी तराजू मे पत्थरों से तोली जाती हैं। अर्थात् गुणों से कीमत होती हैं न कि रूप से ।।

एक साधे सब सधे सब साधे सब जाय ।
रहिमन सींचे मूल को फूलै फलै अघाय[1] ।।३५७।।

जान बूझ अजुगत[2] करे तासो कहा बसाय ।
जागत ही सोवत रहे कैसे ताहि जगाय ।।३५८।।

नहीं देनी सो देत हों कहाँ लगी लिखिये लेख ।
अनहद करुणा रावरी विधि पे मारी मेख ।।३५९।।

दरद बड़ा जो बन गया जान न पाया कोय ।
पछताये क्या होत है लिखी भयी सो होय ।।३६०।।

जो कह झूठ मसखरी नाना ।
कल युग सोई गुनवन्त बखाना ।।३६१।।

साँसू आंगने बहु पलंग पर देवर पीसना पिसेंगा ।
सुसरा जी की काम न रखे जेठ घूंटा काडगा ।।३६२।।

आनन्द हृदय में हैं पहिचान में नही ।
आनन्द गाने में है तान में नहीं ।
आनन्द स्वधर में है जहान में नहीं ।
आनन्द भावना में है सब स्थान में नहीं ।।३६३।।

---

१ खूब   २ अनुचित कार्य

अभाव अन्न का नहीं मन का है।
अभाव मौत का नहीं जीवन का है।
लेकिन मेरी नज़र उस पार देखती है।
अभाव भोजन का नहीं भजन का है ।।३६४।।

अरे यह बात हैं तो खेद क्या है।
भरत और मुझमें भेद क्या है ।।३६५।। मैथलीशरण गुप्त

तुलसी मीठे वचन ते सुख उपजे चहुं ओर।
वशी करण एक मन्त्र है परिहरू वचन कठोर ।।३६६।।

रत्न पड़ा बाज़ार में गर्द रहा लिपटाय।
मूर्ख नर जाने नही चतुर लिया उठाय ।।३६७।।

जैसा खावें अन्न वैसा होवें मन।
जैसा पीवे पानी वैसी निकले वाणी ।।३६८।

चोर न चाहे चान्दनी सूम न मांगन हार।
मूर्ख चाहे चतुर गुण खल ना भले विचार ।।३६९।।

रूप शील कुल वित्त बड़ा सुख शोभा सतकार।
देखी और जो कुढे ताको रोग अपार ।।३७०।।

देव विप्र राजा रमनि रोगी बूढ़ो बाल।
निग्रह किजे क्रोध को इनसों सदा नृपाल ।।३७१।।

रहे न कौड़ी पाप की ज्यों आवें त्यों जाय।
लाख को धन पाय के मरे न कफ़न पाय । ३७२।।

सहस्त्र सुख भी आरोग्यता के बराबर नहीं ।
माघ गलेला भदौं बेला जेठ मास में प्यास की बेला ।।३७३।।

आँखन त्रिफला दाँतन नोन चौथाई छोड़ के जो खावें पौन ।
सांझ सकारे छाड़े जावे ताकों पैसा वैद्य न खावे ।।३७४।।

अति हाँसी दासी संगत नृप वैश्या विश्वास ।
स्थिर वासी योगी यति निश्चय होत विनाश ।।३७५।।

मौज मुनि सत गुरु को सेवों भवसागर से तारे ।
मोनी तो सदा उज्वला नाम प्रभु का पार उतारे ।।३७६।

अग्नि तृग सहना सुगम सुगम खड़क की धार ।
नेह निभाना एक रस महा कठिन कर्तार ।।३७७।।

वैरी वन्धु वानियाँ ज्वारी चोर लवार ।
विभाचारी रोगी ऋणी नगर नारी को यार ।
नगर नारी को यार भूल परतीत न किजे ।
सौ सौ सोहें खाह चित एको नहीं दीजे ।
कहे गिरधर कविराय घरे आवे अन गैरी ।
हित की कहे वनाय जानिये पूरो वैरी ।।३७८।।

आज्ञा भंग कवि ने वर्णन किया

मित्र मेरे भो घात नू करने वाला, पुत्र मरे जो आज्ञाकार नहीं ।
राजा मेरे जो प्रजा नू दुख देवें प्रजा मरे जो दिलो हितकार नहीं ।
धनी मरे जो धन नू जोड़ जावे, सूंम मरे जो दिलों उदार नहीं ।
नौकर मरे जो इन्कार करने वाला, हाकिम मरे इन्साफदार नहीं ।

पंच मरे गरीबाँ नूँ दु:ख देदाँ जिहदे घर दी मुकदीकार नहीं ।
सेवक मरे जो सेवा न करे कोई, साधु मरे विवेक विचार नहीं ।
शिष्य मरे जो सिदक नूँ हार आवे गुरु मरे जो श्रेष्ठाचार नहीं ।
रोगी मरे जो सदा रहे दु खियाँ वैद्य मरे जिसदा दवा दारूकार नहीं ।
पुत्र मरे जो कुल नूँ दाग लगावें नूँह मरे जेहडी शर्म रास नहीं ।
थोह भी मरे संसार तो ब्रह्म रूपा जिसदा रब्ब दे नाल प्यार नहीं ।
॥३७९॥

आशा ममता कामना तृष्णा गर्भ कराल ।
एक त्रिया के नेह से भया दु:ख जंजाल ॥३८०॥

मैल मूत्र दुरगन्ध अति हाड़ मास अरू चाम ।
रक्त नर्क की पूतली ताके होत गुलाम ॥३८१ ।

सीन सावन वीच लदनी खंड मंदी ।
दुजा ऊँटाँ दे लदना भार मंदा ।

तीजी नार पराई ते प्रीत लागी मंदी ।
चौथा घड़े दे लंघना पार मंदा ।

पंचमी मूर्खा नूँ मदी मत देनी ।
छ:वा चूड़े नूँ देना उधार मंदा ।

कहेंदा विधी चन्द ये छः गलाँ मदीयांनी ।
सातमा औरत दे करना इतबार मंदा ॥३८२॥

दादू दावा दूर कर निरदावा दिन काट ।
केती सौदा कर गए पनसारी की हाट ॥३८३॥

दादू दावा आदि का निर दावा कैसा ।
दिल की दूर मति दूर कर सौदा कर ऐसा ॥३८४॥

विषमा यह चित्र जान के शेष न दिन्हें काम ।
धरा मेरु सब डोलते तानसेन के तान ॥३८५॥

साध मिला यह सब मिटें काल जाल जम चोट ।
शीश नवावत ढहि पड़ी सब पापन की कोट ॥३८६॥

सुख देवें दुःख को हरे दूर करें अपराध ।
कहे कबीर वह कब मिले परम स्नेही साध ॥३८७॥

साखी लाय बनाय कर इत उत अक्षर काटि ।
कहे कबीर लग जिए जुठी पत्तल चाटी ॥३८८॥

कीधौं शूर को शर लग्यों कीधौं सूर कीं पीर ।
कीधौं सूर को पद लग्यों तन मन धरत न धीर ॥३८९॥

बालक की आंखों में संस्कारों का पुण्य छिपा ।
रवि के बचपन मे भी उसका रहता है तारूण्य छिपा ॥३९०॥

शैव भक्ति जैन दया मुसलमान विश्वास ।
जो चाहों सो देखलों आकर शिशु के पास ॥३९१॥

गुण ग्राही बनिये सदा लागत कछु नहीं मोल ।
अवगुण जावे आप का पावे सुख अनतोल ।
पावे सुख अनतोल जग में लोग सराहें ।
परभव सुर अवतार अन्त में शिव पद पावें ।
कहत कवि कर जोर ज्ञान की बाते सुनिये ।
लागत कछु नहीं मोल गुणों के ग्राहक बनिये ॥३९२॥

साध कोल बैठ के नफा की खटना ।
समय बरबाद करना घर अपना मुफत पटना । ३९३ ।

अपसी कमाई नाल आप तरणा ।
असी भगवान दा भजन करना ।।३९४।।

विपदाएँ आएँ आने दे, बाधाएँ आएँ आने दे ।
हँस-हँस काँटों पर धर पद तल तू अपनी धुन के पीछे चल तू ।
दुनियाँ क्या कहती कहने दे तू अपनी मस्ती रहने दे तूं ।
तू जरा न अपने पथ से टल तू अपनी धुन के पीछे चल तू ।।३९५।।

कष्ट सागर में गिरो गर पाप मल धोना है तुम्हें ।
दुःख की अग्नि में जलो, बनना है गर सोना तुम्हें ।।३९६।।

सब धरती कागज़ करूँ लखेनी सब बनराय ।
सप्त समुन्दर की मसी करूं गुरु गुण लिखा न जाय ।।३९७।।

मिलता सेती मिलता रहिये जो कोई होंवे नेमी ।
कूड़ कपट के पास न, जाइये दगेबाज और वहमी ।
काची कलियां कोमल तोड़े बोले मृषावाद ।
साध संत की करें निन्दा फूटे उसके भाग ।।३९८।।

पंजाबी कविता

कुमारियाँ दी जड़ी बुरीगधे वाली अड़ी बुरी ।
पोष वाली झड़ी बुरी बुरा सावनदा पूरा जी ।
थोड़ा दा दौलत बुरा आदमी कपता बुरा ।

योगियाँ दा मता बुरा बुरा खूनी छुरा जी ।
पयाली विच जड बुरी महल विच बड़ बुरी ।
फलाँ विच खड़ बुरी बुरी है वेगुरी जी ।
पैर कट जुती बुरी चोरी बड़े कुत्ती बुरी ।
भली सीत सती बुरी भरथु मचावे जी ।
चूहड़ दी जुवानी बुरी रन्न मस्तानी बुरी ।
दोस्ताँ दी कानी बुरी पीड़े ज्यों कुमाद जी ।
सेज चढी नार बुरी चूहे पई छन्न बुरी ।
लाठियाँ दी भन्न बुरी करे चकना चूर जी ।
कंजरी दा नाला–बुरा धर्म शाला ताला बुरा ।
दगेदार साला बुरा रखे टेडी धौन जी ।
कन्नाँ विच खंजुरा बुरा बखी विच हुरा बुरा ।
कोठी विच छत बुरी, सोदे विच तत बुरी करनी भत बुरी पुलिस मुलाकात जी । शेरदा शिकार बुरा नांगांदा प्यार बुरा ।
बुरा दगेदार यार जी ।
वदी विच गाँव बुरा मेंह वगैर सावन बुरा ।
औरताँ दा कामन बुरा ईश्वर सिंह बुरा है जो कातिक बहुता खावना जी ।
खंगनूँ है तेल बुरा लुचयां दा मेल बुरा, चलदी चढे रेल बुरा ।
ईश्वर सिंह बुरा है भग्गेओं वाला जेल जी ।
झूठा साहूकार बुर झूठेदा व्यवहार बुरा ।
झूठी नीत प्रीत बुरी ईश्वर सिंह बुरा हैं प्रीत लाये जो चंडाल जी ।
संतदा सराप बुरा जीव मारे पाप बुरा ।
दिक चढ़े ताप बुरा ईश्वरसिंह बुरा है मतरई वाला साकजी ।
खोटा सिआर बुरा लकड़ी ने मारा बुरा आदमी निकम्मा बुरा ।

फल कौड़ा तुम्बा बुरा जामनदा जम्या बुरा,
ईश्वरसिंह बुरा हैं दर्याव वाला घूमावजी ।
पानी बिनधान बुरे सड़े हुए पान बुरे ।
घोड़े नूं बादाम बुरे ईश्वरसिंह बरे है काबली जुवानीजी ।
रण चढ़े धोती बुरी है सलाह देनी खोटीजी ।
लाड़ रखनी नार बुरी चिकड़ वाली हैन बुरी ।
बाजे बिना जंञ बुरी ईश्वरसिंह बुरी हैं बदूकां वाली फड़जी ।
कलियुग दां जामन बुरा दोस्त होके तानाह बुरा ।
झूठा हर्जाना बुरा ईश्वरसिंह बुरा है समय बगैर गानाजी ।।३९९।।

जाट जंमाई भानजा रेबारी सुनार ।
येह पांचों नहीं अपना कर देखो उपकार ।।३४०।।

डावीं छींक जिमनी खासी रोती मिले सासरे जाती ।
सामी बैल सींगां आवें तो लंका को राज विभिषण पावें ।।४०१।।

खर डावा विषधर जिमना मूरदा लेवे पूंठ ।
जो चन्द्रमा सम्मुख हो तो लंका लावे लूट ।।४०२।।

चिड़ी चोंच भर ले गई नेक न घटियों नीर ।
दान दिए धन नहीं घटे कह गए दास कबीर ।।४०३।।

माला मन की भली और काठ का भार ।
अगर माला है गुण होता तो क्यों बेचता मनहियार ।।४०४।।

कर्मे इन्द्र विगोयिया कर्मे चन्द्रकलंक ।
कर्मे मोटा राजा बन बन फिरे निशंक ।।४०५।।

बाल पना में खेल खेल्यों जवानी में हल हांक्यों ।
बुढ़पे में माला पकड़ी रामजी थारों ही मन राख्यों ॥४०६॥

सकल सम्पत्ति चाहे कल लूटे ।
पर किसी का न साधु संग छूटे ॥४०७॥

भोग भले न सेहो रोग शोक के दानी ।
शुभ गति रोकन वोह दुर्गती पथ अगवानी ॥४०८॥

क्यों विचलित होता है देख नारी को ऐ भैया ।
क्या भूल गया नारी ही तो है प्यारी मैया ॥४०९॥

ढेड़ चामार को सज्जे नहीं धोती कांच का मणियां बने नहीं मोती ।
दुश्मन बात कहे अनहोती व्याहा कारज को बिगाड़े गोतो ॥४१०॥

क्षत्री काला करोड़ में कायिस्थ सो मैं सूम ।
बनियां पूंगा लाख मैं ब्राह्मण पूंगा कौम ॥४११॥

उड़ रही थी व्यर्थ की गप शप कि घण्टा बज गया ।
मौत का ज़ालिम कदम एक और आगे बढ़ गया ॥४१२॥

मनाया पर्व छमछरी का, हुई बहुत प्रभावना ।
आप से इस वर्ष में है सम्वत्सरी सम्बन्धी बारम्बार खिमा बना
॥४१३॥

कदाचित आग के शोले नहीं झरते पानी से
सदा अमृत बरसती महापुरुषों की वाणी से ॥४१४॥

मौत मुकदमा मान्दगी मन्दा व्यापार और मकान ।
इतने अम्मे जब लगें कैसे बचेंगें प्राण ॥४१५॥

मक्खन मक्खन काढ लिया फेर खाली छाछ विलोएगा के ।
"हुस्नो" कहे खुदा मेरा जाणे मूर्या पीछे रोणा के ॥४१६॥

उठ गई हाट निमड गया सौदा फिर मूर्ख पछताता है ।
"हुस्नो" कहे खुदा मेरा जाणे काल सभी को खाता है ॥४१७॥

किस ऐंठ में फिरता हैं पागल यह हवा रहनी नहीं ।
मध्याह्न भी सन्ध्या समय रवि की प्रभा रहनी नहीं ॥४१८॥

दूसरों को दुःख दे खुद सुख पाता नहीं ।
पैर में चुभते ही कांटा टूट जाता वहीं ॥४१९॥

सैकड़ों कीजिये यतन पर पाप कृति छुपती नहीं ।
दाबिये कितने ही खांसी की ठसक रुकती नहीं ॥४२०॥

मित्र रवि के साथ उडूपति क्यों मलीन मुख हो रहे ।
दूसरों के द्वार पर जो भी गया सब रो रहे हैं ॥४२१॥

न जग त्यागो न हर को भूल जाओ जिन्दगानी में ।
रहो दुनियां में ज्यूं जैसे कमल रहता है पानी में ॥४२२॥

थोड़े रोज रहदीं ओहदी बादशाही जिसने, जुलमदी लाई होई झड़ी होवे ।
इक दिन जमींदे नाल पटक जे समान ते गुडी जिसदी चढ़ी होवे ।
जिस तों मिले इन्साफ न इक रति तुलदी जुल्मदां घड़ी पर घड़ी होवे ।
दिन थोड़ा यांदा ओ मेहमान यारों जिसने चाल पुठी फड़ी होवे ॥४२३॥

कंठ खुशक मैं तो बोल्यां न जान्दा इक घूट पिलादे ओ पानी का ।
खोल बता दूं मैं हाल आपको निज बिती कहानी का ।

गनका के संग मोल विकी जो में बच्चड़ा उस राणी का ।
जिस का मोल करे हैं भगी कभी मालक था राजधानी का ।
इतनी कह के रो पया बच्चड़ा नैनों में डोरा पानी का ।

रोहत राज कुमार

इकीस दिन होये जल नहीं पीता समझों न उमर नयानी का ॥४२३॥

पांजाबी कविता

ये चित हरान होया यारों कलु काल दे देख ग्यानियाँ नूँ ।
आतश कपट दी अदरों साड़दीए मुँहों बोल दे सुख अरफानियाँ नूँ ।
करके शान फरेब फरेबियाँ ने खाहा लूट के कुल जहानियाँ नूँ ।
अज कल दे देख लो साध यारों जेहड़े चेलियां करन जनानियाँ नूँ ।
माल जान घर बार सारा साधाँ ऊपरों करन कुर्बानियाँ नूँ ।
जेहड़ा मत देवे उन्हें देन गालाँ
करे कौन उपदेश दिवानियां नूँ ॥४२४॥

जे जबर जेर शकल इको ए पर जबर उत्ते नीचे जेर होवे ।
जबर दस्त दा हथ हमेशा उत्ते लोकाँ विच ए गल जौफर होवे ।
सुनी असाँ वी रमज एह आरफाँ तो जेहड़ा रहे नीचा सोही ढेर होवे ।
ए पर असाँ वी तकड़ी तोल दिट्ठा पाव रहे उच्चा हेट्ठा सेर होवे ।
॥४२५॥

नीवें, रहन इन्सान समर्थ वाले फलाँ लग्याँ जिस तरह बेर होवे ।
इकों शकल ज्ञानियाँ मूर्खां दी एपर अकल दा सज्जनों फेर होवे ।
स्याने जुल्म ते दस्त न चाहम दे ने भावें हुक्म दी हथ शमशेर होवे ।
इको जयाँ न वक्त हमेश रहदा कदी संध्या कदी सवेर होवे ॥४२६॥

कदी जन्म हुंदा कदी मरण हुंदा कदी चानना कदी अन्धेर होवे ।
मुंहों बोलिये कद मिकदार उसे गल्लां नाल नहीं पुरुष दलेर होवे ।
बुरे कम्म नूं नित तारीक पाइये भला करदयां कदे न देर होवे ।
स्थिर चित्त हमेशा ज्ञानियांदा ते मूर्खां विषय दे विच ढेर होवे ॥४२७॥

पता लगदाएं अंग दे विच आके केहड़ा गीदड़ ते केहड़ा शेर होवे ।
बड़ा फ़रक़ हैं ज्ञानियां मूर्खां दा जिवें राइदे नाल सुमेर होवे ।
नीवी नज़र हमेशा ज्ञानियां दी छुट्टी जिन्हां ने जग दी मेर होवे ।
मूर्ख दौलतां कदे न होन नीवें विच जिन्हां दे मेर ते तेर होवे ॥४२८॥

प्यारे जान मनुष्य दा जन्म औखा ऐवें ऐस नूं नहीं गवा मित्तर ।
बड़े पुन्न जद जीव दे जमां होवन, मिले जन्म मनुष्य दा आ मित्तर ।
अंग अंग दे वल ध्यान कर लां, अंगदा मुल्ल ते पा मित्तर ।
लख खरचियां अंग न इक मिलदा, भावें पूछ 'सर्जना' सौदागरां जा मित्तर ।
॥४२९॥

भाड़ा शौक ते श्रद्धा दा नक़द लेके, अग्गे गुरां दे देह टिका मित्तर ।
गड्डी ज्ञान वाली लेके चढ़ औथों, अपने वतन मुकाम नूं जा मित्तर ।
॥४३०॥

प्याले पी शराब दे जुल्म करें, बदफैलियां दा नाले चा मित्तर ।
तेरे बदले कौन जवाब देसी, जदो होवसी पुच्छ पूच्छा मित्तर ।
नाल सोहणियां सूरतां मौज माने, करें रलियां नाल चा मित्तर ।
ऐ पर एह स्वाद तद आवसीगा जदों, पावसें सख़्त सजा मित्तर ॥४३१॥

तू तां आइयों मुसाफरी रात कट्टन, दुनियां विच जो मिलख सरां मित्तर ।
गुजरी रात परदेसियां कूंच करसे, हों सी सुबह चला चली मित्तर ।
॥४३२॥

इक जन्म ऐसा दूखी तन्दुरुस्ती तीजा शकल भी होवे सफा मित्तर ।
चौथा इलम नाले मिले नेक सोहबत एसा समां न मिले हरजा मित्तर ।
पिच्छे विषय विकरदे रोहड़ बैठा, बेड़ा आपना कंढे लगा मित्तर ।
हीरा जन्म मनुष्य दा हथ आया बदले कौड़ियां नहीं लुटा मित्तर ।
वांग रेल गाड़ी उमर सफ़र करदी नहीं एस नूं जरा टिका मित्तर ।
मिट मिट करके पई नित जांदी खोल अक्खियां देख सफा मित्तर ।।४३३।।

आप गल करिये कदे ना हँसिये, बच्छा चूंगे गाय को कदे न दसिये ।
गुप्त गल्लां किसी की कदे ना दसिये, चू गल में किसे देना फंसिये ।।४३४।।

रोहणी नक्षत्र पहला पाद—पहली रोहिणी जल हरे द्वितीय पाद—दूजी
रोहिणी ऋण हरे ।
तृतीय पाद—तिजी बाहतर ७२ खाय, चतुर्थ पाद—समुद्र पेली कणे जाय ।।
पूरा वसिया ना कोई जग उत्ते, बडे बडे आला इल्मदार मर गए ।
कोडी कोडी जोड़े सूम वांगूं, कारूं बादशाह जेहे मालदार मर गए ।
जिन्न जिन्हां तों खौफ खावदे सन रुस्तमे हिन्द जेहे जोरदार मर गए ।
अफलातून लुकमान हक्कीम मिलखी, हिकमतां विच बड़े बड़े समझदार
मर गए ।।४३५।।

भोला जानवर मिशल मशहूर कबूतरां दी ।
खचरा पंछियां विच ना कां ज्या ।
भरे मेवां दे नाल रूख डिठे ।
डिठा सुख ना बोड दी छां ज्या ।
इसे वास्ते हिन्दूआं कहया माता
कतल गौ नूं बुरे गुनाहां ज्या ।
मां मरे ते पाल दी बच्चयां नूं ।

नहियों दुध बहान ते गाय ज्या ।

आपस विच न देखिये लडे होये ।

खून पगरे नहीं भरां ज्या ।

शायद विच उजाड़ दे मिले दुश्मन ।

फिर जोर नहीं अपनी वाहां ज्या ।

मा–भरां–गौ काली दास सब साक ने मतलवां दे ।

देखा साक नहीं जग ते मां ज्या ॥४३६॥

यह लाश मनुज की नहीं मनुषता के सौभाग्य विधाता की ।

बापु की अर्थी नही चली अर्थी भारतमाता की ॥४३७॥

बेटा झगड़त बाप से करत तिरिया से नेह ।

बार बार यों कहे हम जुदा कर ले गेह ।

हम जुदा कर देह गेह में चीज सब मेरी ।

नहीं तो करेंगे ह्वार पतिया जायगी तेरी ।

कहे दीन दरवेश देखों कलयुग का टेटा ।

समा पलटयों जाय बाप से झगडन बेटा ॥४३८॥

धन वोह रडियों को देकर बात अभिमानी करे ।

पाप के भागी हैं वोह जो धर्म की हाणी करे ।

फिर उसी धन को लेके रडियां कुर्वाणी करे ।

मांस और मदिरा मंगा भडवों की मेहमानी करे ॥४३९॥

पैसा बिन मात तो पूत को कपूत कहे ।

पैसा बिन बाप कहे बेटा दुःखदाई है ।

पैसा बिन भाई–बन्धु–सम्बन्धी अजान रेत ।

पैसा बिना भाई कहे किस का तू भाई हैं ।

पैसा बिन जोरू संग छोड़कर जाय चली ।
पैसा बिन सास कहे किस का जमाई है ।
पैसा बिन पड़ोसी कहत है गवाँर है तू ।
आज के जमाने में पैसे की बड़ाई है ।।४४०।।

गुरु लोभी चेला लालची दोनों खेलें दाव ।
दोनों डूबी बापड़े बैठ पत्थर की नाव ।।४४१।

पारस में अरु संत में बड़ा आन्तरा जान ।
वो लोहा कंचन करे वो करे आप समान ।।४४२।।

लोहा पारस स्पर्श से कचन भई तलवार ।
तुलसी तिनों न मिटे धार मार आकार ।।४४३।।

ज्ञान हथौड़ा हाथ लेई सद्गुर मिले सुनार ।
तुलसी तिनों ना मिटे धार मार आकार ।।४४४।।

कन्या हुई उत्पन्न ज्यों त्यों चित पर चिन्ता चढ़ी ।
किस को इसे दूंगा बड़ी यह तर्कना हरदम बढ़ी ।।४४५।।

हँस गये घर अपने कागा भये दीवान ।
जा विप्र घर अपने सिंह किस के यजमान ।।४४६।।

तुलसी मीठे बचन ते सुख उपजत चहुँ ओर ।
वशीकरण एक मन्त्र है तज दे बचन कठोर ।।४४७।।

खाय पकाय लुटाय देकर ले अपना काम ।
चलती बिरियाँ का रे नरा संग न चले छदाम ।।४४८।।

सौ पापन का मूल है एक रुपया रोक ।
साधु होय संग्रह करे मिटे न सयम शोक ।।४४९।।

गर्ज से अर्जुन क्लीब भये अरु गर्ज से गोबिन्द धेनु चरावें ।
गर्ज से द्रोपति दासी भई अरु गर्ज से भीम रसोई बनावे ।
गर्ज बड़ो तीन लोकन में कछु गर्ज बिना कोई आवे न जावे ।
कवि गंग कहे सुन शाह अकबर से गर्ज बीबी गुलाम रिझावे ॥४५०॥

गंग प्रवाह्य को नीर पियों तब कूप को नीर पियों न पियो ।
अब हिरदे प्रभु नाम बसा तब और को नाम लियों न लियों ।
पुन्य संयोग सुपात्र मिले तब कुपात्र को दान दियो न दियो ।
कवि गंग कहे सुन शाह अकबर मूर्ख मित्र कियों न कियों ॥४५१॥

बाल से ख्याल बड़े बिरोध अरु चंचल नार से न हँसिये । ।
आग से राग योगी अजान के नीर में नाधसिये ।
जुवारी की प्रीत जान को साथ चोर को जान के ना फसिये ।
कवि गग कहे सुन शाह अकबर क्रूर से दूर सदा बसिये ॥४५२॥

तज रे मन राम गवारन को जहाँ हेत प्रतीत नहीं हर की ।
चंचल चोर कठोर बसे परब्राह्य नहीं परमेश्वर की ।
परताप करें पिंड पाप भरे कथा न सुने ज्ञानी नर की ।
परमार कहे फिटकार पडों जहाँ लाज मर्याद नहीं गुरु की ॥४५३॥

तारा की ओट से चान्द छिपे नहीं भाण छिपे नहीं बादल छाया ।
चंचल नार का नयन छिपे नहीं पूत्र छिपे नहीं बात बनाया ।
सूरवीर छिपे नही रण चढयां दातार छिपे नहीं घर मगना आया ।
योगी छिपे नहीं बभूत रमायां अनेक करों पण कर्म छिपे नहीं बभूत लगायां ॥४५४॥

जीवन की करुणा मन धार ।
यह सब धर्मों का है सार ॥४५५॥

लोहा अकेला पेड़ (वृक्ष) को कब काट सकता है भला ।
जब तक कि लकड़ी का हथेला हो नहीं उसमें सला ॥४५६॥

रामदास को राम मिले हैं सैलानी को कुण्डा ।
संत सदा यह सच्ची माने झूठी माने गुण्डा ॥४५७॥

चकवा चकवी दो जने इन मत मारो कोय ।
यह मारे करतार के रैन बिछवा होय ॥४५८॥

प्रेम पियाला जो पिये शीश दक्षिणा देय ।
लोभी शीश न दे सके नाम प्रेम का लेय ॥४५९॥

उरग तुरंग नारी-नृपति नीच जात हथियार ।
रहिमन इन्हें संभारिये पलटत लगे ना देर ॥४६०॥

बिस कुसंग चाहत कुशल यह रहीम जिय सोंस ।
महिमा घटी समुद्र की रावण बस्यों पड़ोंस ॥४६१॥

रोटी की परछाहिं पर गया लपक कर स्वान ।
डूब गया जल धार में तजा लोभ बश प्राण ॥४६२॥

बन् मर ऐसी क्षमा किस काम की ।
क्षमी होती है जहां बल धाम की ॥४६३॥

फूट उपजे जिस कुल में वो कुल नष्ट हो जाता है ।
वो बाँस की रगड़ से सारा बन जल जाता है ॥४६४॥

अरे रावण तू धमकी दिखाता किसे ।
मुझे मरने का खौफ़ खतर ही नहीं ।
मुझे मारेगा क्या अपनी खैर मना ।
तुझे होनी की अपनी खबर ही नहीं ।।४६६।।

नारी बीच सारी है कि सारी बीच नारी है ।
नारी ही की सारी हैं कि सारी ही की नारी है ।।४६६।।

खेल गया बरच्छा गया तीर तलवार ।
घड़ी छड़ी चश्मा चहत अगिन के हथियार ।।४६७।

सदा जो पाप ही की वासना में दिन बिताते हैं ।
न आकर वे यहाँ पल एक सुख शान्ति पाते हैं ।।४६८।।

दुर्भाग्य की प्रबलता टलती नहीं है ।
सदबुद्धि की कुछ वहाँ चलती नहीं है ।।४६९।।

बसया हुआ दुनियाँ से पूरा दुष्ट का अब अन्त अल ।
दे चुका सौ गालियां और पा चुका उसका येह फल ।४७०।।

उसी गली में पूत है उसी गली में भूत
राम महावीर भजे सो पूत है नहीं तो भूत का भूत ।।४७१।।

सद्धर्म का संदेशा प्रत्येक नारी नर में ।
सर्वस्व भी लगाकर फैला दो विश्व भर में ।।४७२।।

आंखों पे तनेगा जाला नाक से बहेगा नाला ।
लाठी से पड़ेगा पाला जरा जिन्दगानी में ।

खड़े खड़े वस्त्र में करोगे मल मूत्र त्याग।
पड़े पड़े थूकते रहोगे पीकदानी में।
भक्ति क्या करोगे तुम, शक्ति न रहेगी जब तन में।
राम राम बोलने तुम्हारी बन्द बानी में।
अतः योग से योग कर और भोग से वियोग कर।
कर लो भजन भगवान का भर जवानी में ॥४७३॥

जिहि के ढिग गंग तरंग बहे तिहि कूप तड़ाग पिया न पिया।
जिहि के उर में हरि नाम बसे तिहि और का नाम लिया न लिया।
जिहि के भाग्य सों आन सुपात्र मिले सो कुपात्र को दान दिया न दिया।
कवि गंग कहे सुन शाह अकबर मूर्ख मित्र किया न किया ॥४७४॥

टका करे कुल हुकम टका मिरदंग बजावे।
टका चढ़े सुर पाल टका सिर छत्र धरावे।
टका माँ अरू बाप टका भैयन को भैया।
टका सांस अरू ससुर टका सिर लाड लडैया।
अब एक टके बिन टकटका रहत लगावे रात दिन।
बैताल कहे विक्रम सुनों धिक जीवन एक टके बिना ॥४७५॥

वे बहुत बुरी है शराब लोगों दे दीं अकल ते होश उड़ा भाई।
फीम बिच मैदान दे दमा दे दीं ढोढ़ा सारा सुखावेंदा मास भाई।
भंग पीन दाढ़ी झूठा होक्का चरस आंखियां मार दी आस भाई।
शेरूराम चंडू जिन्हें मादक पीता ओनें नहीं जवानी की आस भाई ॥४७६॥
ज्ञानी हँसे नायनों में पण्डित हँसे मुख कज।
साधु हँसे हृदय में खिड़ खिड़ हँसे निर्लज्ज ॥४७७॥

हाड बड़ा तो हरि भजन कर द्रव्य बड़ा तो कछु दे।
अकल बड़ी तो उपकार कर जीवन का सुख (फल) यह ।।४७८।।
भू भली तो बाडी भली तकला भला तो सूत।
माँ भली तो धी भली पिता भला तो पूत ।।४७९।।

जीभ जिन्दयाँ नूँ कानूँ मारनाई जेकर मोयाँ नूँ नहीं तो जीवान जोगा।
मिले दिलां नूँ कानूँ विछोड़नाई जेकर विछड़यां नूँ नहीं तू मिला न जोगा।
घर आये सवाली नूँ कानूँ घूरणाई जेकर हथों नहीं तू खैर पान जोगा।
गौर बदियां नूँ रख बन्दी खाने जेकर नेकी नहीं तूँ कामान जोगा ।।४८०।।

दमयन्ति सीता गार्गी लीलावती विद्याधरी।
विद्योत्तमा मंदालसा थी शास्त्र शिक्षा से भरी।
वसुमती महाशील की श्रृङ्गार गुणों की आगार थी।
चन्दन बाला तेज प्रताप की ज्योतिमयी शील की अनगार थी।
ऐसी विदुषी स्त्रिये भारत की भूषण हो गई।
धर्म व्रत छोड़ा नहीं गो जान अपनी खो गई ।।४८१।।

प्रभु स्मरण सो दुःख हरे चुप दुःख हरे हजार।
गुरु कृपा लख दुःख हरे सब दुःख हरे विचार ।।४८२।।
कच्चा घड़ा कुम्भार का ठोकर खाने से टूट जाय।
वह मित्र किस काम का जो वक्त आने फूट जाय ।।४८३।।

लाख आट पिङ्गल पढ़े तब तीन हीन।
ऊठवाँ बैठवाँ बोलवाँ लियाँ विधाता छीन ।।४८४।।

पशु की पनियाँ बने नर का कछु न होय ।
नर नर की करणी करे नर का नारायण होय ॥४८५॥

राम भजे आ काम करे आ नहीं किसी का डर है ।
परदेशियों के नगर वसे यहां नहीं किसी का घर है ॥४८६॥

नागण दंश करे कबी उपाय से जीवाय ।
परन्तु नारी दंश करे कबी न मिले उसका दवाय ॥४८७॥

आठ आठ पर आठ धारी अरु तिन तिन पर तिन ।
गिरी गुण तन्तु पसारि पसारि कर करू याद निशदिन ॥४८८॥

मूलार्थ—आठ आठ चौसठ और उसमे आठ मिलाये तो ७२ तीन लिया नव और तीन बार तो चौरासी होते हैं और गिरनाम १८, उससे गुणा तो तीन गुण्या तो चोवीश होते है और चोरासी एव चौवीश एक सौ आठ उसमें तन्तु नाम डोरा परों कर हाथ में लेकर रात दिन याद करता हूँ ॥

जो सिर काटे और का अपना रहे कटाय ।
धीरे धीरे नानका बदला कहीं न जाय ॥४८९॥

धरती गया राम की किस की न पुरी आश ।
कितना राम रमी गया कितना गया निराश ॥४९०॥

पुन मित्र तुझको देखता, हो गया लाख जन राख ।
एक दिन मानव आप, खुद जल बल होगा खाक ॥४९१॥

एक घड़ी आधी घड़ी आधी में पुनी आध ।
तुलसी संगत साधु की कटे कोटी अपराध ॥४६२॥

फरीदा तेरी दाढ़ी उत्तें आ गया बूर ।
अग्गू नेड़ा रह गया पच्छू रह गया दूर ॥४६३॥ सन्त फरीद

आधी काशी भांट-भडेरियां ब्राह्मण और सन्यासी ।
आधी काशीं रंडी मुंडी रांड खानगी खासी ।४६४॥

माला तो कर में फिरै जीभ फिरै मुख माहिं ।
मनुवा तो चहुं दिसि फिरै यह तो सुमिरन नाहिं ॥४६५॥

गुरू बिना कछु उगे नही भक्ति मुक्ति को मूल ।
पत्थर बोये खेत में रविदास फल नही फूल ॥४६६॥

नुगरा नर कोई मति मिलों रे, पापी मिलों रे हजार ।
एक नुगराना शीश पर लख पापी का भार रे ॥४६७॥

चंचल की बारह खडी

वीतराग वचन प्रमाण किया सदा पावेंगे आनन्दकारी ।
जिस दिन से सुमरा नवकारमंत्र उस दिन से सोच मिटी सारी ।
सब देवों के ऋषभ देव श्री आदिश्वर उपकारी ।
महावरी गौतम स्वामी के चरण कमल पर बलिहारी ।
चौसठ इन्द्र के पूजनीक हुए चौबीस जिनवर इक सारी
चौदह सौ बावन गणधर तारे अन्तपार किये संसारी ।
नौ बलदेव हुए नौ प्रति वासुदेव बारह हुए चक्कर धारी ।
नौ वासुदेव हुए कृष्ण सरीखे मुकुटबन्ध योधा भारी ॥१॥

चौथे काल में चक्रवीधर हुए तरेसठ अवतारी ।
कथाकार सब रीति जगत की, दिनरात भजें सब नर नारी ।
दया धर्म एक जैन सब जीवों को साता कारी ।
मैं वंदू दो कर जोड़ साधु आरजा अनगारी ।
छः काया का रूप दिखाया, शुद्ध समता चित्त में धारी ।
जीव की उत्पत्ति जाने हैं, कहीं जीव न्यारी न्यारी ।
व्रत बाराह धारे नेम चौदह चितारे, यह जात श्रावक है हमारी ।
चंचल कहता अलम वाला, बिन श्रद्धा कैसे जिन वारी ।।२।।

अरिहंत बड़े बलवीर बड़े, देवन पतराज कहें देवा ।
संसार समुद्र से आप लाखों का पार करा खेवा ।
गौतम गणधर जात ब्राह्मण आप तिरे गये करके सेवा ।
चंचल कहता बारह खड़ी जैन धर्म एक उत्तम मेवा ।।३।।

क के काल खिलारी करे चीधा पे, कर्म काट मत देर लगावे ।
अनाद काल का फिरे जीव नहीं जन्म मरण का अन्त पावे ।
तिर्यंच नार की तरस देवता मनुष्य में करणी बन आवे ।
यों चिन्तामणी रत्न गवां के फिर पीच्छे से पछतावे ।
सतगुरु का चेलका कहता है नहीं बार बार नर देह पावे ।।१।।

ख से छोड़ो चार कषाय, क्यों तरफ देखता मन्दिर की ।
अनन्त वेदना सहीं नर्क में मार पड़े जहाँ जमघर की ।
तू बैठ किनारे ढूंढ रत्न कोई लग जाय झाल समंदर की ।
ऋषभदेव की वाणी सरधो पूंछ ले गौतम गणधर की ।
सतगुरु का चेला कहता है अब बेड़ी कटे कलंदर की ।।२।।

गगे गर्भ गुमान करे मत धन योवन कोई दिन का है ।
पल पल में कइ हवा पलटती नहीं भरोसा क्षरण का है ।
सब मतलब के लोग संघाती तेरा कौन तू किन का है ।
जो तू सुकृत चाहे आगाड़ी भजो नाम श्री जिनका है ।
सतगुरु का चेलका कहता है भाई बड़ा रोकना मन का है ।३।।

घघे घर से दूर रहा कर छोड़ सकल मन से ममता ।
जो तू पड़ेगा इस के पेचा में लख चौरासी फिरे भ्रमता ।
तू सात कुविसन सेवें पाँचों इन्द्री को नहीं यहां बरजता ।
बुरी भली सर पड़े तेरे नहीं मेरा कहा चित्त में जमता ।
वर्द्धमान हुवे अनन्तबली नहीं वेद कर्म उनसे टलता ।
सतगुरु का चेलका है मुक्ति में गये आप करके समता ।।४।

ङाङे मेट इस चाल को तेरी सदा इसी में लाली है ।
दिन रात चले तेग कतल की ना कोई अपना वाली है ।
सब के ऊपर बजे वार फिर एक दिन मंदिर खाली है ।
दस दिन की करे थाम सहार कोई ऐसी नहीं दलाली है ।
भाई बन्द और कुटम कबीला मतलब की घर वाली हैं ।
खट रस खाय के खोया खजाना अपनी काया पाली है ।
सतगुरु का चेलका कहता हैं तुमको आगे ठेठ कंगाली है ।। ।।

चचे चला चली का सौदा यहां कब कब के सामान करे ।
कोई नहीं सास्ती वस्तु सदा काहे के ऊपर द्वन्द्व युद्ध करे ।
लगी पाप की छींट तुझे यों चारों गति में लिये फिरे ।
नौ बाड़ बना रख शीलरत्न किले के परली पार करे ।
सतगुरु का चेला कहता है जब इन्द्र भी जय जय कार करे ।।६।।

छछे छल बल क्या करता दिन रात काल जाय है बीता ।
छल बल में खोज मिटा रावण का जाय हरी बन में सीता ।
छल बल मे कैरों पाण्डव खपे जहाँ महा भई गोती हत्या ।
कौनक ने मुश्का बांध पिता की पिंजरे में मूंदा जीता ।
गद्दी ऊपर आप बैठ गया मुनि जिनन्द गावें गीता ।
सतगुरु का चेलका कहता है जब हाथ झाड़ चला रीता ।।७।

जजे जग करों कर्मों सेती, तप की कस के तेज पकड़ ।
संयम रुपी पहर सजोधा, क्यों झूठे झगड़े रहा झगड़ ।
ज्ञान का घोडा पास तेरे, संग लेके तू सम्मुख लड़ ।
मोहजाल कुविसन चार कषाय, एक मन से काटों इनकी जड़ ।
सतगुरू का चेलका कहता हैं आनन्द किले मे चलके वड़ ।।८।।

झझे झाड लगे ममता के इन का बुरा चिपटना है ।
इन झाडों को झाड़ यहां फिर पीच्छे मुश्किल छूटना हैं ।
दया धर्म की बांहा पकड ले, संयम सेती जुटना है ।
राग द्वेष तेरे बैरी आदि के बड़ी व्याधन कुटना है ।
सतगुरूका चेल का कहता हैं इन सेती सन्मुख जुटाना हैं ।।९।।

टटे टूटी नहीं जुड़े क्यों धक्के खाता फिरे मती ।
ये कह गए भगवान, आयुष्य घटती बढ़ती नहीं एक रती ।
जिसको श्रद्धा नही धर्म की, भोगले फिरते चारों गति ।
जो उनके नाम पर बैठ गया दुनियां से होके यति सती ।
सतगुरू का चेलका कहता है उन नहीं आवे आंच एक रती ।।१०।।

ठठे सब ठाठ निकम्मे इन्हें बिगड़ते देर नहीं ।
ठाठ देख अमरापुर के जहाँ भूख वेदन प्यास नहीं ।
जन्म मरण नहीं काया बुढ़ापा, रोग सोग वियोग नहीं ।
अनन्त ज्ञान मे मरन हार उन सुखों का आर पार नहीं ॥११॥

वो बैठे सबको देख रहे वहाँ नेकी बदी से काम नहीं ।
वहाँ सदा काल इक सार समय बीतता दिन रात तिमिर अंधेर नही ।
सतगुरू का चेलका कहता हैं वहाँ किसी दुआ सलाम नही ।।१२।।

हड़े डोवेंगी जो नार तुझे क्या इसकी तरफ लखाता है ।
चलती चोट करे नयनों की जैसे नाग डंक लगाता है ।
दिन रात बोलता फिरे तड़फता, जख्म कहीं नहीं पाता हैं ।
जैसे मैल पे मक्खी फसे बैठ के फिर उड़ा नहीं जाता ।
जीते में अपयश होय जगत मे लुच्चा ढेड कहाता हैं ।
सतगुरू का चेलका कहता हैं, शील बिन आदर कहीं नहीं पाता ।।१३।।

ढुढे ढब सर चाल चले जा, इस में सदा सुख लाला है ।
जो कोई झूठा कलक लगावें उसे मालिक रखने वाला है ।
विजय कुंवर विजय कुमारी ने योवन में शील संभाला हैं ।
बारह वर्ष लो रहे महल में एक सिज्यांशील जो पाला है ।
सतगुरू का चेलका कहता हैं मुक्ति में कभी नहीं टाला है ।।१४।

गणे रण में लड़ता भिड़ता अबलों नहीं अपकाया हैं ।
लाखों के शीश काट आया, लाखों से शीश कटाया है ।
शर्म नहीं एक मन होकर, ज्ञानवान नहीं कहाया है ।
कर्मों को बांधा जीव तेरा, उनको किस ने छुटाया हैं ।
सतगुरू का चेलका कहता हैं तुझे कू गुरू ने भरमाया है ।।१५।

तते तन से करो तपस्या, कर्म दग्ध हो जाते हैं।
गंगा जमना क्यों जाते, यहाँ शील स्नान बताते हैं।
इन्द्री जीत करो मन वस में, फिर भग में नहीं आते हैं।
अभय दान एक जीव दया से पत्थर भी तिर जाते हैं।
सतगुरू का चेलका कहता हैं उन्हे देवन पति शीश निवाते हैं ॥१६॥

थथे थाम नही थमे यों सिर पे काल गरजता हैं।
हा हा कार विछोवा हो रहा, सुनकर हिया लरजता है।
ते पाँचों इन्द्री सम्पूर्ण पाई, मन को क्यों ना बरजाता है।
दिन रात आकांक्षा निष्फल जाती, बैर भाव नहीं गलता है।
बारह भेदी करो तपस्या कर्मों का बन्धन जलता हैं।
सतगुरू का चेलका कहता हैं काल बिना लिये नहीं टलता है ॥१७॥

ददे दरपन में दिल दरशा रहा मत देख हुस्न गर्भ मन में।
इस योवन का इतवार नहीं, न जाने क्या होगा छिन में।
सन्त चक्री ने मान किया, सोलह रोग व्यापे तन में।
साढ़े तीन करोड काया के रोम, दो दो विकार लगे जिनमे।
यह आदम का ढका ढोल, ज्यों घोड़ा फिरे भागा रण में।
पर पुद्गल में लिप्त मान हुआ अन्ध कूप भूला बन में।
सतगुरू का चेलका कहता है तेरे एक दिन लूट पड़े धन में ॥१८॥

धधे धन दौलत ठाठ सभी तेरे पुण्य के साथ लगे भागे।
पुण्य बिना छाजा धारी रङ्क से हो गये बड़े बड़े राजे।
पुण्य बिना टुकड़े में लाचारी पुण्य से माल छिके ताजे।
पुण्य से चक्री छः खण्ड साधे चारों खूंट बजे बाजे।

बतीस सहस्र मुकुट बन्द राजे देव करें मन से काज ।
सतगुरु का चेलका कहता है सब पुण्य से ठठ कुटुम्ब साधे ॥१९॥

न ने नाता निस्बत जब लों तन्दुरुस्ती चङ्गी हैं ।
जब लग वह माल कमावे कुटुम्ब कबीला सङ्गी हैं ।
दोनों हाथों ताल बजावें दुनियां बड़ी दुरङ्गी है ।
वृद्ध भया इन्द्री भई हीन बड़ा बुढापा जङ्गी है ।
सतगुरु का चेलका कहता है जब टुकड़े मे भी तङ्गी हैं ।
प पे पैसा पास हैं इतने दुनियां में खातिरदारी है ।
बिन पैसे कुछ इतबार नहीं बिन पैसे जगत भिखारी है ।
बिन पैसे यार आवें नहीं पैसे की साथन नारी हैं ।
बिन पैसे मान सभी झूठा उनका नहीं आदर जारी है ।
बिन पैसे साधु सर्व सुखियां सदा उनको आनन्दकारी है ।
पैसे ही का ठाठ जगत मे पैसा खेल खिलारी है ।
सतगुरु का चेलका कहता है बिन पैसे कुटुम्ब ख्वारी है ॥२०॥

फ फे फ़िकरमन्द को नींद न आवें वे किकरारसा कूदे हैं ।
निर्धन पुरुष जग में दुखियां कोई बात ना पूछे हैं ।
अजब बाग में देख तमाशा पेट भरे सब सूझे हैं ।
एक वक्त नहीं पड़े पेट में तुरत फूल सा बूझे हैं ।
सतगुरु का चेलका कहता है छिकने पे बात सभी सूझे हैं ॥२१॥

ब बे ब्रह्म लोक में देख तमाशा वहां शुद्ध हो के जाना है ।
गंगा जमना गहें गगन नाहलों जिसको नहाना है ।
शील वासना कोसी चन्दन लाके, मस्तक तिलक चढ़ाना हैं ।

यहाँ पर भी नहीं आवें हाथ में फिर पीछे से पच्छताना है।
सतगुरु का चेलका कहता है ब्रह्म ते अपना नहीं पहचाना है ।।२२।।

भ भे भाईबन्द और कुटुम्ब कबीला सब अपने सुख का साथी हैं ।
जब सिर पे नौबत आन बजै तब किसी की ना पार बसाती हैं ।
दुनियाँ देख चैन की बाजी क्यों अक्ल भरमाती है ।
दिन दस का सौदा साथ तेरे जैसे बादल में धूप छिप जाती हैं ।
सतगुरु का चेलका कहता है खा़क में सबको मौत मिलाती है ।।२३।।

म मे मात पिता की सेवा करले यही बात है जग में खासी ।
साधु सत के दर्शन करके सब कट जाय यम की फांसी ।
तीर्थ व्रत इन्द्री के बीच में वहे गंगा और शिवकाशी ।
दुनियाँदारी का छोड़ ख्याल बैकुण्ठपुरी का हो वासी ।
क्यों अपने मन में गर्भ रहा तेरे से करता काल सिर पे हाँसी ।
सतगुरु का चेलका कहता हैं सदा तू रहने नहीं पाता यहां बासी ।।२४।।

र रे रेख कर्मन के लेकर हार गये हैं चक्रधारी ।
हुआ रामचन्द्र को बनो वास गाये सीता लक्ष्मण अवतारी ।
बारह वर्ष लों फिरे बन में साथ (गैल) हुए कौतक भारी ।
कृष्ण वासुदेव हलधर के क्या क्या कर्मों ने विपदा डारी ।
छप्पन करोड़ खपे जाके उनकी फूँक दी नगरी सारी ।
हरिश्चन्द्र राजा ने सहे ताप बेच दी अपनी नारी ।
आप नीच घर नीर भरा ठाई बारह वर्ष तावेदारी ।
सतगुरु का चेलका कहता हैं लिखी करतार की टरे नहीं टारी ।।२५।।

ल ले लख सामधानी बानी चलाय हो गये पण्डा ।
अनन्त वासुदेव चक्री हो गये फट गया उनका झण्डा ।

निर्वाण प्रनन्त गई चौबीसी अन्त पार कर दिया बन्दा ।
चौदह राज भवन बीच नित्यों काल फिरता फंदा ।
पकड़ के कलगी लेगा खींच यहां का यहां पड़ा रहे धंधा ।
सतगुरु का चेलका कहता हैं आदि में हुआ फिर मूर्ख अन्धा ।।२६।।

व वे बाबा करे मत ना नहीं भरोसा एक पलका ।
हम देख चुके अच्छी तरियां सब झूठा जग में पेशा ।
पांच कामनी ला ला कर रहीं, हर दम यही कलेसा ।
सतगुरू का चेलका कहता है मुझे उस दिन का बड़ा अंदेशा ।।२७।।

स से शरण आये को दिये साथ काग़ज करिये उसके मन का ।
जो परमार्थ में खपे शीश बैकुंठ बास होगा उनका ।
असली के हरदम याद रहे जो उनपर से तारे तिनका ।
एक पैर के नीचे ससा रख के मरण पाया हाथी बनका ।
एक भव लेक मुक्ति जायगा, सुख पावे बैठा उस दिनका ।
मेघ रथ राजा ने राख्या कबूतर दिया मांस अपसे तनका ।
सतगुरु का चेलका कहता हैं तीर्थंकर गोत्र बन्धा उनका ।।२८।।

हा हे सब में हवा निकलती छिन में माल बिगाना है ।
आते जाते मंजिल पड़ेगी क्या जाना (नियाना) क्या स्याना है ।
इतने रहती आन बनी यहां इतने सबको चाहना हैं ।
तप स्नान वहे दिल गंगा इस पर सत का न्हाना हैं ।
यहां डूबे पीछे पता लगे नहीं जो दिल में बेईमाना हैं ।
धीरज धर के पार उतर चल, बिना वैद्य दुःख आना हैं ।
उसी देश की हवा माफक, सुखी मौज गलताना है ।

निर्भय होके चैन करे जा, अँची जगह फिर ठिकाना हैं ।
सतगुरु का चेलका कहता हैं ज्योत में सबको ज्योत मिलाना है ।।२९।।

ओ ओं ॐकार कहों सब बिपदा व्याध तन की भागे ।
इन्द्री के फाटक खोल देख के केवल ज्ञान भीतर जागे ।
एक दिन में कई कई समय पलटते, एक एक दिन बीते तेरे आगे ।
जिनों के सिर पर काल गरजता, कैसे आंख उनकी लागे ।
सतगुरु का चेलका कहता है आगाडी सभी जीव बदला लेंगे ।।३०।।

आ आरो बैठे सुहागन सदा राख दिल राजे का ।
कलेश काट तलवार किले से दे पहरा दरवाजे का ।
कुछ बैठ सभा में ज्ञान कहो क्या तको सहरा बाजे का ।
गाना गवाना जारी इसका नाच कूद बे लिहाजे का ।
दुनियां छल की गांठ बसे, मत रखना झगड़ा साझे का ।
चंचल कहता एलम वाला पेशा करों बजाले का ।।३१।।

ई ईरी इक सारस मंगल दिन रात जो बाजे गोला ।
इन्द्र चन्द्र भवनपति, चले गये लाखों ढोला ।
इसके आगे हो लाचार सबको उठा ले गया झोला ।
झूठे झगड़े फिरे झगड़ता कोले से घिसता कोला ।
हिन्दु गंगाजल उठावें मुसलमान बीच देते मौला ।
सतगुरु का चेलका कहता है अब मैंने भी हृदय खोला ।।३२।।
ए ए रीं अरिहन्त को चित्त में राखों घड़ी घड़ी ।
आदेश्वर जग में आप भये आनन्द सुखों की ये पेढ़ी ।

निश्चिन्त बैठ के फेर कण्ठ से ये रत्न जटित लाखों की लड़ी ।
इन्द्री से तप्त बुझे तन की, जब आवन कैसी जावे झड़ी ।
सर पे डंका बजे काल का, पी सर जीवनी घोल जड़ी ।
घुर की टूटी नहीं जुड़े, अब क्या देखे बाट खड़ी ।
उस धर्म पुरी में तक बन्धा, जहाँ पाप पुण्य की तुले घड़ी ।
सब बदमाशी जाहिर होगी, नम्बर पर तेरी सूची पड़ी ।
चौंतीस अंक की कही दफ्तर में सुनों हिन्दी की बारह खड़ी ।
रतन मुनि का चेलका कहता है लिये फिरे सिर काल छड़ी ॥३३॥

चंचल रचित बारह खड़ी इति श्री ॥

धन धन राजा जनक हैं जिन स्मरण किये विवेक ।
एक घड़ी के स्मरण में पापी तरे अनेक ॥४६८॥ लखा सिंह

भूषण भोजन कर रहे थे । उन्होंने अपनी भुजायी से कुछ निमक मांगा तो भुजायी बोली—निमक मुफ्त नहीं आता । यह शब्द सुनकर बाता—लग गई । भूषण परोसी थाली छोड़ कर उठ बैठे "बोले अब कमाएँगे तभी खाएंगे । और कमाया तो कैसा कि केवल एक कवित्त पर ५२ हाथी ५२ गांव और ५२ लाख रुपये लेकर ही घर लौटे । कवित्त था—

इन्द्र जिमि जम्भ पर बाडव सु अम्भ पर ।
रावण सदम्भ पर रघुकुल राज हैं ।
पौन वारि वाह पर, शम्भु रतिनाह पर ।

ज्यों सहस्रबाहु पर राम द्विजराज है।
दावा द्रुमदंड पर चीता मृग झुंड पर।
भूषण वितुंड पर जैसे मृगराज है।
तेज तिम अंस पर, कान्ह जिमि कंस पर।
त्यों म्लेच्छ वंश पर शेर शिव राज है ॥४९९॥

ज्ञान बढ़े गुणवान की संगत ध्यान बढ़े तपसी संगत कीजे।
मोह बढ़े परिवार की संगत, लोभ बढ़े धन में चित दीने।
क्रोध बढ़े नर मूढ़ की संगत काम बढ़े तिरियां के संगत कीजे।
बुद्धि विवेक विचार बढ़े कवि सुसज्जन संगत कीजे ॥५००॥

ज्ञान गरीबी गुरु वचन, नरम वचन निर्दोष।
इनको कभी न छोड़िये, श्रद्धा शील संतोष ॥५०१॥

जैन धर्म को पाके वर्तें विषय कषाय।
मुझको अचम्भा भया जल में लागी लाय ॥६०२॥

दाता दाता चल बसे रह गये मक्खी चूस।
देने लेने में कुछ नहीं लड़ने में बेवकूफ मजबूत।
मात पिता धर्म गुरु, समाज भार सिर धार।
ऋण अदा जो न किया धिक मानवता का अवतार ॥५०३॥

सावन केरे प्रथम दिन उगत न दिखै भान।
चार महीना बरसै पानी या को है परमान ॥५०४॥

मूलार्थ—श्रावण मास के प्रथम दिन मे यदि उगता हुआ सूरज न दिखायी पड़े तब समझ लेना चाहिए कि चार महीना पानी बरसेगा यह बात आजमाइश की हुई हैं।

सावन शुक्ला सप्तमी लक छिप उगवें भान।
तब लग देव वरीसिंह जब लगि देव उठान ॥५०५॥

मूलार्थ—अगर श्रावण शुक्ल सप्तमी को आकाश में बादल रहें जिससे सूर्य कभी दिखायी दे और कभी छिप जाय तो उस साल देवोत्थान एकादशी (कार्त्तिक मास) तक वर्षा होती रहने की सम्भावना समझनी चाहिए।

भैरव मालव कौस कों दीप राग हिंडोल।
मेघ राज श्री राग कुन ये षट् राग कलोल ॥५०६॥

१ षड्ज, २ रिषभ, ३ गांधार, ४ मध्यम, ५ पंचम, ६ धैवत, और ७ निषाद।

गायत्री, गोविन्द, गौ, गीता, गङ्गास्नान।
इन पाँचों की कृपा से शीघ्र मिलें भगवान॥
ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप, वीर्यादिमगङ्गस्नान।
इन की कृपा से शीघ्र होवे मोक्ष प्रस्थान॥
दिन में रोजा रखते, रात में काटतें गायें।
एक बन्दगी फिर रिन्द[1] के रिन्द कैसे खुशी खुदायें॥
एको भक्खें सुलखनी जैसे नभ बीच तारे।
झुक झुक करें सलामां जो दो आँखां वाले॥ रणजीत सिंह

---

१ शराबी